॥ अथ बृहद् ॥

दुर्गापूजनप्रयोगः सप्तशतीसहितः

॥ प्रारभ्यते ॥

२४३

प्रकाशक—भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, (ब्रांच—कचौड़ीगली), बनारस १. मूल्य ३)

अथ बृहद्दुर्गापूजनप्रयोगविषयानुक्रमणिका ।

॥ इति ॥

अथ दुर्गापूजनहवनसामग्री ।

कस्तूरी
केशर
रोरी
नारा [मौली]
अबीर, बुक्का
मेहँदी की बुकनी
हरदी की बुकनी
सुरुआरी का बिया
सिंघाड़े का आटा
पीली सरसों
सर्वौषधी
सप्तमृत्तिका
सप्तधान्य
पञ्चपल्लव
पञ्चरत्न की पुड़िया
पञ्चामृत
पञ्चगव्य

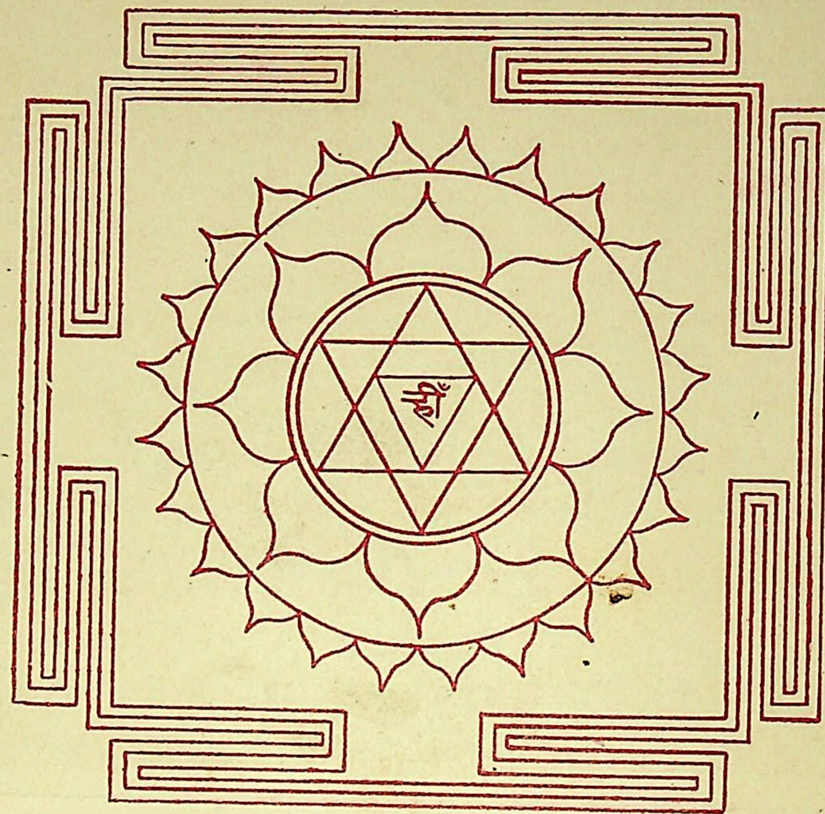
धूपबत्ती
दीपबत्ती
कपूर
माला, फूल
पेडा
बतासा
ऋतुफल
पान, सुपाड़ी
दूध
सहत
नारियल
कवलगट्टा
लाल चन्दन
कालीमिर्च
गूगुल
अनार
गुरुच
सिन्दूर

चन्दन का भूरा
तिल्ली, उरदी
यव, चावल
खाँड़, भोजपत्र
पञ्चमेवा
घी
नवग्रह की लकड़ी
पलास की लकड़ी
आम की लकड़ी
वरणी
धोती, अँगोछा
आसन
लोटा, पञ्चपात्र
आचमनी
अर्घा ताँबे का
रुद्राक्ष की माला
सुवर्ण की पविअ

गौमुखी
तष्टा ताँबे का
काँसे की कटोरी
प्रधान कलश ताँबे का
हवन का कटोरा १
चरुपात्र पीतल का
काँसे की थाली
सँड़सी, करछुल
ताँबे का पत्र १ लम्बा
१६ अंगुल चौड़ा १६ अंगुल
पूर्णपात्र का गगरा
रेशमी वस्त्र सफेद
सूतीवस्त्र
प्रधान का पीताम्बर
तरना उपरना
लाल तूल
रेशम की अँगिया १

साड़ी रेशमी १
चादर १
चँदवा १
प्रतिमा त्रिकोण सुवर्ण की
पाँच पल की
सोने की शलाका १
चाँदी की कटोरी
चौकी काठ की
केलाका खंभा ८ छोटा वड़ा
तोरण, पत्तल
पुरवा, दिया
कसोरा
रुई, सलाई
मीठा तेल
कुशा
गङ्गाजल
वेदी के लिये मिट्टी
॥ इति ॥

श्रीसप्तशतीयन्त्रम्



विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।



हस्तैश्चक्रधरालिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

॥ अथ बृहद् ॥

दुर्गापूजनप्रयोगः सप्तशतीसहितः

॥ प्रारभ्यते ॥

प्रकाशक— भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, (ब्रांच—कचौड़ीगली), बनारस १.

भूमिका

'कलौ चण्डीविनायकौ' श्रीजगज्जननी दुर्गा माता जी की असीम कृपासे वेदोक्त दुर्गापूजन प्रयोग नाम की पुस्तक दुर्गाप्रेमियों को समर्पित की जाती है, क्योंकि वैदिक मन्त्रों से दुर्गापूजन की कोई भी पुस्तक अब तक नहीं छपी है। इस पुस्तक में गणेशपूजन, गणेशाथर्वशीर्ष, घटस्थापन, षोडशमातृकापूजन, नवग्रहादिपूजन, दुर्गापूजन, देव्यथर्वशीर्ष, और श्रीसूक्तविधान तथा अन्त में हवनप्रयोग भी विधिविधान से रक्खा गया है और भी स्तुति पाठ इसमें दिये गये हैं। यह पुस्तक 'गागर में सागर' का दृष्टान्त चरितार्थ करती है। इस पुस्तक को दुर्गामाता के प्रेमी (मारवाड़ निम्बाजोधानिवासी महेश्वरी श्रीमान् सेठ मुरलीधरजी जाजू ने) संग्रह करवा करके प्रकाशित किया है। अगर इस पुस्तक से दुर्गाप्रेमियों को कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। अगर इसमें मनुष्य धर्मवशात् अशुद्धियां रह गई हों तो विद्वज्जन सूचित करें जिसमें अन्य संस्करण शुद्ध हो।

द्वितीयसंस्करण, बडे हर्ष का विषय है कि वेदोक्त दुर्गापूजनप्रयोग नाम की पुस्तक का प्रथम संस्करण दुर्गाप्रेमियों ने अपनाया और हमारे उत्साह को बढ़ाया। अब यह दूसरा परिवर्धित तथा विशेष विषयों से सुशोभित संस्करण आप लोगों के करकमलों में समर्पित किया जाता है। इस दूसरे संस्करण में कई विषयों पर गहन विचार कर तथा कई पुस्तकों का परिशीलन कर युक्ति युक्त लिखी गई है। पाठ करने में असुविधा देखकर विधिपूर्वक सप्तशती भी रखी गई है फिर भी अगर मनुष्य धर्मवशात् अशुद्धियां रह गई हों तो विद्वज्जन सूचित करने की कृपा करें जिससे फिर शुद्ध कर दिया जाय। श्रीमान् सेठ मुरलीधर जाजूजी को हृदय से कोटिशः धन्यवाद दिया जाता है जिन्होंने उक्त पुस्तक के संकलन करने में दृढ आस्तिकता का गहरा परिचय दिया है। अब मैं आशा करता हूँ उदार महानुभाव हमारे परिश्रम को सफल करने में सहायक होंगे।

तृतीय संस्करण की भूमिका—

बड़े हर्षका विषय है कि वेदोक्त 'दुर्गापूजन प्रयोग' नामक पुस्तक के द्वितीय संस्करण को दुर्गाप्रेमियों ने अपनाया और हमारे उत्साह को बढ़ाया। अब यह तीसरा, परिवर्धित तथा विशेष विषयों से संवर्धित संस्करण आप लोगों के करकमलों में समर्पित किया जाता है। इस तीसरे संस्करण में कई विषयों की कमी का अनुभव कर, तथा दुर्गापूजन में इन विषयों को अत्यन्त आवश्यक समझ कर बढ़ाया है। परिवर्धित विषय ये हैं—आयुष्यमन्त्र जप, नान्दीश्राद्ध, रक्षाविधान, सर्वतोभद्र-मण्डल, देवतापूजन, योगिनीपूजन, क्षेत्रपाल-वास्तुपूजन, अग्न्युत्तारण, सिद्धकुञ्जिकास्तोत्र, देव्यष्टोत्तरशतनाम, नवरात्र घट-स्थापन विधि, प्रत्यध्याय के अन्त में तत्तदध्याय की वैदिक एवं तान्त्रिक आहुति-आदि। यद्यपि सब विषयों के गहन विचार अनेक मान्य ग्रन्थों का अवलोकन-मनन कर युक्ति-युक्त लिखे गये हैं। फिर भी अगर मनुष्य धर्मवशात् त्रुटियां या प्रेस की अशुद्धियां रह गई हों तो विद्वज्जन सूचित करने की कृपा करें—जिससे अगले संस्करण में संशोधन कर दिया जाय।

श्रीमान् धर्मप्रेमी, दुर्गाभक्त माहेश्वरी वैश्य सेठ मुरलीधरजी जाजु को कोटिशः धन्य वाद है, जिन्होंने उक्त पुस्तक के संकलन कर दृढ़ आस्तिकता का परिचय दिया तथा तृतीय संस्करण मे श्रीमान् पं० रामनिवासजी शास्त्री निम्बी जोधान (मारवाड़) निवासी से संशोधन करा कर छपवाया।

अब मैं आशा करता हूँ कि उदार पाठक महानुभाव हमारे परिश्रम को सफल करने में सहायक होंगे। शुभम् ॥

संग्रहकर्त्ता—
श्रीमान् सेठ मुरलीधरजी जाजु
निम्बी जोधान् (मारवाड़) निवासी

सम्पादकः—पं० तुलारामशर्मा चौकियाल
चौकी गढ़वाल।
सं० १९९५ आश्विन शु० १० (विजया दशमी)

संग्राहक का वक्तव्य–

अखिल ब्रह्माण्ड नायिका भगवती श्रीजगदम्बा दुर्गा की कृपा से श्रीदुर्गापूजनप्रयोग का यह संशोधित एवं परिवर्तित तृतीय संस्करण छपकर प्रकाशित हो गया है। इस पुस्तक को अपनाकर पाठक महाशयों ने अपनी उदारता का परिचय दिया–वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस पुस्तक के लेखक श्री पं० तुलारामजी शर्मा को अनेकानेक धन्यवाद हैं, जिन्होंने बहुत परिश्रम के साथ पुस्तक को लिखकर मुझे प्रोत्साहन दिया।

श्रीमान् पं० रामनिवासजी शास्त्री का भी मैं बहुत आभारी हूँ कि जिन्होंने इसके संशोधन-परिवर्धन में अपना अमूल्य समय दिया। श्रीमान् पं० वेणीरामजी गौड़ वेदाचार्य काशी को अनेक धन्यवाद हैं जिन्होंने अपनी अमूल्य सम्मति देकर हमें पथ प्रदर्शन किया। अन्त में भार्गव पुस्तकालयाध्यक्ष पं० कैलाशनाथजी भार्गव 'अमर' को तथा उनके प्रेसकर्मचारियों को भी अनेकानेक धन्यवाद हैं कि जिन्होंने वर्तमान कागज़ महर्घता तथा अनेक असुविधाओं का सामना करते हुए भी पुस्तक प्रकाशन बड़ी तत्परता एवं सावधानी से किया है।

सं० २००९
मा० कृ० १४
(मकर संक्रान्ति)

श्रीदुर्गाचरणरजसेवक–मुरलीधर-जाजु
मु० निम्बी जोधान् (मारवाड़)

श्रीगणेशाय नमः

अथ दुर्गापूजनप्रयोगः

कृतनित्यक्रियो यजमानः अहते वाससी परिधाय शुद्धासने प्राङ्मुख उपविश्य आदावाचामेत्। तद्यथा—ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा। ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा। ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा। ततः "पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ" इति मंत्रेण अनामिकयोरेकैकं पवित्रं धृत्वा "पृथिवि त्वया" इति मंत्रेणासनशुद्धिं विधाय प्राणायामं कुर्यात्। यथा—मूलमन्त्रेणेडया (वामनासया) वायुमापूर्य कुम्भके चतुर्वारं मूलं पठित्वा द्विवारं मूलमुच्चरन् पिंगलया (दक्ष-

नासया) रेचयेत्। ततः शरीरशुद्ध्यर्थं श्रीसूक्तेन अंगन्यासं कृत्वा एवमेव श्रीसूक्तमंत्रैः भगवत्याः अंगन्यासं च पुष्पेण कृत्वा "आनोभद्राः" इति भद्रसूक्तं पठेत्—। ॐ हिरण्यवर्णामिति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य आनन्दकर्दमचिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः। श्रीरग्निश्च देवते। आद्यास्तिस्रोऽनुष्टुभः। चतुर्थी बृहती। पञ्चमीषष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ। ततोऽष्टावनुष्टुभः। अन्त्या प्रस्तारपंक्तिः। न्यासे पूजने च विनियोगः—

ॐ हिरंण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रंजाम्। चंद्रां हिरण्मंयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवंह॥ इति शिरसि॥१॥ ॐ तां मआवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंण्यं विंदेयं गामश्वं पुरुंषानहम्॥ इति नेत्रयोः॥२॥ ॐ अश्वपूर्वां रंथमध्यां

हस्तिनादप्रबोधिनीम् । श्रियंदेवीमुपह्वयेश्रीर्मादेवीजुषताम् ॥
इति कर्णयोः ॥३॥ ॐ कांसोस्मितांहिरण्यप्राकारामार्द्रांज्वलं-
तींतृप्तांतर्पयंतीम् । पद्मेस्थितांपद्मवर्णांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥
इति नासिकयोः ॥४॥ ॐ चंद्रांप्रभासांयशसाज्वलंतींश्रियं
लोकेदेवजुष्टामुदाराम् । तांपद्मिनीमींशरणमहंप्रपद्येऽल-
क्ष्मीर्मेनश्यतांत्वांवृणे ॥ इति मुखे ॥५॥ ॐ आदित्यवर्णेतपसो-
धिजातोवनस्पतिस्तववृक्षोथबिल्वः । तस्यफलानितपसानु-

दंतुमायांतंरायाश्चबाह्याऽअलक्ष्मीः॥इति कराठे॥६॥ॐ उपै-
तुमांदेवसखःकीर्तिश्चमणिनासह। प्रादुर्भूतोसुराष्ट्रेस्मिन्कीं-
र्तिमृद्धिंददातुमे॥इति बाह्वोः॥७॥ॐक्षुत्पिपासामलांज्येष्ठा-
मलक्ष्मींनाशयाम्यहम्। अभूतिमसंमृद्धिंचसर्वांनिर्णुदमेगृ-
हात्॥इति हृदि॥८॥ॐगंधद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीं।
ईश्वरीं सर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियंम॥ इति नाभौ ॥९॥ ॐ
मनसः काममाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपं-

मन॑स्यमयि॒श्रीःश्र॑यतां॒यशः॑ ॥ इति गुह्ये ॥१०॥ ॐक॒र्दमे॑नप्र॒जाभू॑ताम॒यिसंभ॑व॒कर्द॑म । श्रियं॑वा॒सयं॑मेकु॒लेमा॒तरं॑पद्म॒मा॒लिनी॑म्॥इति गुदे॥११॥ ॐआपः॑सृ॒जंतु॑स्नि॒ग्धा॒नि॒चि॒क्लीत॑व-स॒मेगृ॒हे । निच॑दे॒वींमा॒तरं॒श्रियं॑वा॒सयं॑मेकु॒ले॥ इति ऊर्वोः॥१२॥ ॐआ॒र्द्रांपु॒ष्करि॑णींपु॒ष्टिंपि॒ङ्गलां॑पद्ममा॒लिनी॑म् । च॒न्द्रांहि॒र॑ण्मयींल॒क्ष्मीं जा॒तवे॑दोम॒आव॑ह ॥ इति जान्वोः ॥१३॥ ॐ आ॒र्द्रांय॒ःक॒रिणीं॑य॒ष्टिंसु॒व॒र्णांहे॑ममा॒लिनी॑म् । सू॒र्यांहि॒र॑ण्मयीं

लक्ष्मींजातवेदोमुऽआवह ॥ इति जङ्घयोः ॥१४॥ ॐ तांमु-
आवहजातवेदोलक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यांहिरण्यंप्रभूतिं
गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्॥ इति पादयोः ॥१५॥

अथ भद्रसूक्तम्-ॐआनोभद्राःक्रतवोयन्तुविश्वतोदब्धा
सोऽअपरीतासऽउद्भिदः ॥ देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्न
प्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥ १ ॥ देवानांभद्रासुमतिर्ऋजूय
तान्देवानांᳬंरातिरभिनोनिवर्त्ततामु ॥ देवानांᳬंसख्यमुपसे

दिमा ब्वयन्देवान्ऽआयुःप्रतिरन्तुजीवसे ॥२॥ तान्पूर्व्वयानिवि
दाँहूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम् ॥ अर्य्यमणं
व्वरुणꣳसोममश्विनासरस्वतीनःसुभगामयस्करत् ॥३॥ तन्नो
व्वातोमयोभुव्वातुभेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः ॥ तद्ग्रावा
णःसोमसुतोमयोभुवस्तदश्विनाशृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥४॥
तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसेहूमहेव्व
यम् ॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये

दुर्गा-
पू० प्र०
॥४॥

॥ ५ ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनःपूषाविश्ववेदाः॥
स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु
॥६॥ पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यावानोविदथेषुजग्मं
यः ॥ अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसोविश्वेनोदेवाऽअवसागम
न्निह ॥७॥ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्य
जत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳪ॑सस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्य
दायुः॥८॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसन्त

म०सू०

॥४॥

नूनाम् ॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायु
र्ग्गन्तोः ॥९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्मातासपिता
सपुत्रः॥ विश्वेदेवाऽअदितिःपञ्चजनाऽअदितिर्जातमदिति
र्जनित्त्वम् ॥ १० ॥ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषुपयोदिव्य
न्तरिक्षेपयोधाः ॥ पयस्वतीःप्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥११॥
विष्णोरराटमसिविष्णोःश्नप्त्रेस्थोविष्णोःस्यूरसिविष्णो
र्ध्रुवोसि॥ वैष्णवमसिविष्णवेत्त्वा ॥१२॥ अग्निर्देवताव्वा

तौदेवतासूर्य्योदेवताचन्द्रमादेवताव्वसवोदेवतारुद्रादेवतादि
त्यादेवतामरुतोदेवताव्विश्वेदेवादेवताबृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेव
ताव्वरुणोदेवता ॥ १३ ॥ ॐद्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः
पृथिवीशान्तिरापःशान्तिरोषधयःशान्तिः ॥ व्वनस्पतयः
शान्तिर्व्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्रह्मशान्तिःसर्व्वꣳशान्तिः शान्ति
रेवशान्तिःसामाशान्तिरेधि ॥ १४ ॥ यतोयतःसमीहसेततो
नोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नःकुरुप्प्रजाभ्योऽभयन्नःपशुभ्यः

॥१५॥ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥ यद्भद्रन्तन्न ऽआसुव ॥ १६ ॥ सुशान्तिर्भवतु ॥ प्राणप्रतिष्ठामन्त्राः ॥

ॐएतन्तेदेवसवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतयेब्रह्मणे ॥ तेनयज्ञमवतेनयज्ञपतिन्तेनमामव ॥ १ ॥ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञᳪंसमिमन्दधातु॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ॥ २ ॥ एषवैप्रतिष्ठानामयज्ञोयत्रैतेनयज्ञेनयजन्तेसर्व्वमेवप्रतिष्ठितम्भवति ॥ ३ ॥

गणपत्यादयो देवाः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु ॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥ इष्टदेवताभ्यो० ॥ कुलदेवताभ्यो० ॥ ग्रामदेवताभ्यो० ॥ स्थानदेवताभ्यो० ॥ वास्तुदेवताभ्यो० ॥ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां० ॥ श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां० ॥ श्रीउमामहेश्वराभ्यां० ॥ शचीपुरन्दराभ्यां० ॥ मातापितृचरणकमलेभ्यो० ॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो० ॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो० ॥ निर्विघ्नमस्तु ॥ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ॥ लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः ॥ १ ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ॥ द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ २ ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥ संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ३ ॥ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ५ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥६॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ॥ येषां हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनं हरिः ॥ ७ ॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ॥ विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मी-

पते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ ८ ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ॥ येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ९ ॥ विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ॥ सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥ १० ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ॥ तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ११ ॥ सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ॥ देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ १२ ॥ आपदामपहर्तारं दातारं सुखसम्पदाम् ॥ लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ १३ ॥ विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ॥ वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥ १४ ॥

सङ्कल्पः—हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे कुमारिकाखण्डे *जम्बूद्वीपे श्रीशालिवाहनशाके बौद्धावतारे अस्मि-

---

*'अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे' इति काश्यां विशेषः ।

न्वर्तमाने अमुकनामसंवत्सरे अमुकाऽयने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकशर्माहं ममाऽऽत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकालसंरक्षणार्थं सकलमनईप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादिप्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं तथा मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोः समस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं तथा मम जन्मराशेरखिलकुटुम्बसहितस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्धचतुर्थाष्टमद्वादशस्थानस्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादिसन्ततेरविछिन्नवृद्ध्यर्थं आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थं तथा इन्द्रादिदशदिक्पाल-

प्रसन्नतासिद्ध्यर्थं आधिदैविकाऽऽधिभौतिकाऽऽध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्ष-फलप्राप्त्यर्थं च ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं (ब्राह्मणद्वारा) यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः षोडशोपचारैः पूजनं करिष्ये । तदङ्गत्वेनादौ आधारदीप-पूजनं घंटापूजनं शंखपूजनं गणपतिस्मरणासनादिपूजनं ब्राह्मणवरणं कलशपूजनं पुण्याह-वाचनं मातृकापूजनं वसोर्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धं नवग्रहपूजनं रक्षाविधानं सर्वतोभद्रमंडलदेवतापूजनं यन्त्रपूजनं चतुष्षष्टियोगिनीभैरवादिपूजनं प्रधानदेवतापीठपूजनं च करिष्ये । ॐ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ॥

इति स्मृत्वा—आसनाधो जलादिना त्रिकोणं विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः, इत्याधारशक्तिं संपूज्य पृथिवीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, कूर्मो देवता, सुतलं छन्दः, आसने विनि-योगः । ॐ पृथिवि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इत्याधारशक्तिं संप्रार्थ्य ॐ भूर्भुवः स्वः इत्यासनं संप्रोक्ष्य ॐ अनन्तासनाय नमः ॐ कूर्मास-

नाय नमः ॐ विमलासनाय नमः ॐ पद्मासनाय नमः ॐ योगासनाय नमः ॐ आधारशक्त्यै नमः ॐ दुष्टविद्रावणनृसिंहासनाय नमः ॐ मध्ये परमसुखासनाय नमः इति नत्वा शिखाबन्धनं कुर्यात् ॥

अथ दिग्रक्षणम् । वामहस्ते गौरसर्षपान् गृहीत्वा–

ॐ रक्षोहणं॑वलगहनं॑वैष्णवीमि॒दम॒हन्तंव॑लग॒मुत्कि॑रामि॒ यम्मे॒ निष्ट्यो॒यम॒मात्यो॒निच॒खाने॒दम॒हन्तंव॑लग॒मुत्कि॑रामि॒ यम्मे॑समा॒नोयमसं॑मानो॒निच॒खाने॒दम॒हन्तंव॑लग॒मुत्कि॑रामि॒ यम्मे॒सब॑न्धु॒र्यमसं॑बन्धु॒र्न्निच॒खाने॒दम॒हन्तंव॑लग॒मुत्कि॑रामि॒ यम्मे॑स॒जातो॒यमसंजातो॒निच॒खानोत्कृत्याङ्कि॑रामि ॥ १ ॥

रक्षोहणोवोव्वलगहनꣳप्प्रोक्षामिव्वैष्णवान्रक्षोहणोवोव्वल
गहनोवनयामिव्वैष्णवान्रक्षोहणोवोव्वलगहनोवस्तृणामि
व्वैष्णवान्रक्षोहणौवांव्वलगहनाऽउपदधामिव्वैष्णवीरक्षोह
णौवांव्वलगहनौपर्य्यूहामिव्वैष्णवीव्वैष्णवमसिव्वैष्णवास्थ
॥ २ ॥ रक्षसाम्भागोसिनिरस्तꣳरक्षऽइदमहꣳरक्षोभितिष्ठा
मीदमहꣳरक्षोवबाधऽइदमहꣳरक्षोधमन्तमोनयामि ॥ घृते
नद्यावापृथिवीप्प्रोर्णुवाथांव्वायोव्वेस्तोकानामग्निराज्ज्यस्य

वेतुस्वाहास्वाहाकृते ऽऊर्ध्वनंभसम्मारुतङ्गच्छतम् ॥३॥ रक्षोहाविश्वचर्षणिरभियोनिमयोहते ॥ द्रोणेसधस्थमासदत्४॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥१॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ॥ सर्वेषामविरोधेन दुर्गापूजां समारभे ॥२॥ इति भूतशुद्धिं कृत्वा ॥ भैरवनमस्कारः ॥ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ १ ॥ इति भैरवानुज्ञां गृहीत्वा भूशुद्ध्यादिकं कुर्यात्—अथ स्थलशुद्धिः । देवतामण्डपं चतुर्द्वारं विचिन्त्य ॐ अंतरित २ रक्षोंतरिता अरातयः हुं फट् इति मण्डपान्तः अक्षतान् क्षिप्त्वा वामतो गुं गुरुभ्यो नमः ॥ दक्षिणतो भं भद्रकाल्यै नमः ॥ उपरिष्टात् गं गणपतये नमः इति द्वारदेवताः सम्पूज्य । अथ विघ्नोत्सारणमात्मरक्षणं च यथामूलं पठन् दिव्यदृष्ट्यवलोकनेन दिव्यान् विघ्नानुत्सारयामि ॐ फडिति प्रोक्षणेनान्तरिक्षान्

विघ्नानुत्सारयामि ॐ फडिति वामपादपार्ष्णिघातेन भौमान् विघ्नानुत्सारयामि ॐ अस्त्राय फडिति तालत्रयेण दिग्बन्धनं कृत्वा ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट् इति मंत्रेण छोटिकया वह्निप्राकारत्रयं विभाव्य भूशुद्ध्यादीनि कुर्यात् ॥ भूशुद्धिर्यथा गायत्र्या प्राणानायम्य हुं इति बीजेन कुण्डलिनीमुत्थाप्य हृदिस्थं दीपकलिकाकारं जीवं ॐ हंसः इति मन्त्रेण ब्रह्मणि संयोज्य स्वदक्षिणकुक्षिस्थं पापपुरुषं ध्यात्वा यं इति १६ षोडशवारोच्चारितवायुबीजेन पिंगलया पूरकेण तं पापपुरुषं शोषयित्वा कुम्भके रं इति ६४ चतुःषष्टिवारोच्चारितवह्निबीजेन तं दग्ध्वा पुनः यं इति ३२ द्वात्रिंशद्वारोच्चारितवायुबीजेन तद्भस्म इडया रेचयेत् । ब्रह्मरंध्रगते चन्द्रमण्डलेऽमृतवर्षिणीम् ॥ भवानीं भूमिशुद्ध्यर्थं भावयेदमृतेश्वरीम् ॥ ततस्तन्मौलिनिष्यन्दसुधाकल्लोलवृष्टिभिः ॥ चिन्तयेन्मनसात्मानं भूमिशुद्धिरियं भवेत् ॥ इति भूशुद्धिः ॥ अथ भूतशुद्धिः ॥ इडया वायुमापूर्य कुम्भके लंरंवंयंहं इति पंच भूतबीजानि सकृदावर्त्य पिंगलया रेचयेत् ततो वमिति अमृतबीजेन प्राणायामं कृत्वा सद्वासनात्मकं देवीशरीरमुत्पाद्य सोहमिति

मन्त्रेण कुण्डलिनीं ब्रह्मणो वहृत्य तत्रस्थं जीवं हृदि निधाय कुण्डलिनीं मूलाधारगतां विभावयेदिति संक्षेपतो भूतशुद्धिः ॥

अथ कलशपूजनम्

मन्त्राः—सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ १ ॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ॥ मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥२॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ ३ ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥ वरुणाऽवाहनम्—

ॐ तत्त्वांयामिब्रह्मणाव्वन्दंमानुस्तदाशांस्तेयजंमानोहविर्भिः ॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुंशᳫंसमानुऽआयुᳫंप्प्रमोषीः ॥ १ ॥

अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ॥ षोडशोपचारैः सम्पूज्य कलशप्रार्थना—देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥ उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ १ ॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ २ ॥ शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ ३ ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कालफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ॥४॥ सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ प्रसन्नो भव ॥ वरदो भव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कलशस्थवरुणाय नमः ॥ अनन्तरं कलशोदकेन पूजाद्रव्याणि तथाऽऽत्मानं च 'अपवित्रः' 'आपोहिष्ठा' इत्यादिमन्त्रेण वा सम्प्रोक्ष्य यथा—अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥

ॐ आपो॒हिष्ठामयो॒भुव॒स्तान॑ऽऊ॒र्ज्जेद॑धातन ॥ म॒हेरणा॑य॒ चक्ष॑से ॥१॥ ॐ योवः॑शि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑भाजयते॒हनः॑ ॥

उशतीरिवमातरः ॥२॥ तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्युक्षयांय जिन्न्वंथ ॥ आपोजनयंथाचनः ॥ ३ ॥

पश्चात् कलशमुद्रां प्रदर्श्य ॥ शङ्खपूजनम्—शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता ॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चैव अग्रे गङ्गा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया ॥ शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र ! तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥ २ ॥ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ॥ निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्यं नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि ॥ तन्नः शङ्खः प्रचोदयात् ॥ ४ ॥

ॐ अग्निर्ऋषिःपवंमानःपाञ्चंजन्न्यःपुरोहितः ॥ तमीमहेमहागयम् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खस्थदेवतायै नमः, आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥ शंखमुद्रां प्रदर्श्य ॥ घण्टापूजनम्—आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ॥ घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत ॥ १ ॥

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्त्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ ॥ स्तोमऽआत्त्मा छन्दाᳬंस्यङ्गानि यजूᳬंषि नाम । साम ते तनूर्व्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः ॥ सुपर्णोऽसि गरुत्त्मान्दिवङ्गच्छ स्वः पत ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः, आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि

समर्पयामि नमस्करोमि ॥ घण्टामुद्रां प्रदर्श्य । दीपपूजनम्—भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ॥ त्राहि मां निरयाद्घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा ॥ अग्निर्वर्च्चो ज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो वर्च्चो ज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा ॥ १ ॥

भो दीप देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ॥ यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥

१ घृतदीपो भवेद्दक्षे तैलदीपस्तु वामतः । सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः ॥ घृतदीपश्चेदष्टदले तैलदीपश्चेत्त्रिकोणमण्डले स्थाप्यः ।

इति प्रार्थनां कृत्वा ॐ भूर्भुवःस्वः दीपस्थदेवतायै नमः ॥ आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

अथ गणपतिपूजनम् । तत्र ध्यानम् ॥ श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम् ॥ दोर्भिः पाशाङ्कुशाब्जाभयवरमनसं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् ॥ १ ॥

ॐ नमो॑ ग॒णेभ्यो॑ ग॒णप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ व्राते॑भ्यो व्रात॑पतिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ गृत्से॑भ्यो॒ गृत्स॑पतिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ विरू॑पेभ्यो वि॒श्वरू॑पेभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमः॑ ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, ध्यानं समर्पयामि ॥

आवाहनम्—आवाहयेत्तं गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासमशेषवन्द्यम् ॥ विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्धयै ॥ १ ॥

ॐ गणानांन्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणांन्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वांनिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम ॥ आहमंजानिगर्ब्भधमात्वमंजासिगर्ब्भधम् ॥ १ ॥ सहस्रशीर्षापुरुषꣳसहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ २ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, आवाहनं समर्पयामि ॥

आसनम्—

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्वंयद्भूतंयच्चभाव्यम् ॥ उतामृतत्व स्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥ १ ॥

ॐभूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, आसनं समर्पयामि॥पाद्यम्—

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्यायाँश्चपूरुषः ॥ पादोस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ १ ॥

ॐभूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, पाद्यं समर्पयामि॥ अर्घ्यम्—

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततोवि

ष्वुङ्व्यंक्कामत्साशनानशुनेऽअभि ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, अर्घ्यं समर्पयामि ॥

आचमनीयम्—

ॐ ततोव्विराडंजायतव्विराजोऽअधिपुरुषः ॥ सजातोऽअत्त्यंरिच्च्यतपश्चाद् भूमिमथोपुरः ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, आचमनीयं समर्पयामि ॥

स्नानम्—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्केव्वायव्व्यानारण्ण्याग्ग्राम्म्याश्चये ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, स्नानं समर्पयामि ॥

पञ्चामृतस्नानम्——

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्सरित् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥ पयःस्नानम्——

ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, पयःस्नानं समर्पयामि॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ दधिस्नानम्—

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, दधिस्नानं समर्पयामि॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ घृतस्नानम्—

ॐ घृतङ्घृतपावानःपिबतवसांवसापावानःपिबतान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशःप्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, घृतस्नानं समर्पयामि ॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ मधुस्नानम्—

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्क्षरन्तिसिन्धवः॥ माध्वीर्न्नः
सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः ॥
मधुद्यौरस्तुनःपिता ॥ २ ॥ मधुमान्नोवनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽ
अस्तुसूर्य्यः ॥ माध्वीर्गावोभवन्तुनः ॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, मधुस्नानं समर्पयामि ॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ शर्करास्नानम्—

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम् ॥ अपाꣳ

रसंस्यय्योरसस्तंव्वोंगृह्णाम्म्युत्तममुंपयामगृंहीतोसीन्द्रांयत्त्वा जुष्टंङ्गृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रांयत्त्वाजुष्टंतमम् ॥१॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ गन्धोदकस्नानम्—

ॐ गन्धर्व्वस्त्वांव्विश्वावंसुःपरिंदधातुव्विश्वस्यारिंष्ट्यैयजंमानस्यपरिधिरंस्यग्निरिडऽईडितः ॥१॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ उद्वर्तनस्नानम्—

ॐ अहशुनांतेऽअहशुःपृच्यतामपरुषापरुः ॥ गन्धस्ते सोमंमवतुमदांयरसोऽअच्युंतः ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ पञ्चामृतादिस्नानाङ्गपूजा–ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, वस्त्रोपवस्त्रार्थे अक्षतान् समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतार्थे अक्षतान् समर्पयामि ॥ गन्धं समर्पयामि ॥ यथाऋतुकालोद्भव-पुष्पाणि समर्पयामि ॥ नानापरिमलसौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि ॥ धूपमाघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥ शर्करोपहारनैवेद्यम्—ॐ प्राणाय स्वाहा॥ ॐ अपानाय स्वाहा ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा ॥ ॐ समानाय स्वाहा ॥ ॐ उदानाय स्वाहा ॥ नैवेद्यं निवेदयामि ॥ नैवेद्यमध्ये पानीयं समर्पयामि ॥ नैवेद्यान्ते हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनं च समर्पयामि ॥ करोद्वर्तनार्थे

चन्दनं समर्पयामि॥ मुखवासार्थं पूगीफलताम्बूलं समर्पयामि ॥ हिरण्यमुद्रादक्षिणां समर्पयामि ॥ कर्पूरार्तिक्यं दर्शयामि ॥ त्रिःप्रदक्षिणाः[1] समर्पयामि ॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥ प्रार्थनापूर्वकं साष्टाङ्गं[2] नमस्करोमि॥ अनेन यथाशक्त्या ध्यानावाहनादिकृतपूर्वाराधनेन श्रीसिद्धि-बुद्धिसहितश्रीमन्महागणाधिपतिः प्रीयतां न मम ॥

अभिषेकस्नानम् ॥ ॐ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि । त्वमेव केवलं कर्त्तासि । त्वमेव केवलं धर्त्तासि । त्वमेव केवलं हर्त्तासि । त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि । त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् । ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि । अव त्वं माम् । अव वक्तारम् । अव श्रोतारम् । अव दातारम् । अव धातारम् । अवानूचानमव शिष्यम् । अव पश्चात्तात् । अव

१. त्रिःप्रदक्षिणाकरणं च गणेशपूजाभिप्रायेण—एकं चण्ड्यां रवौ सप्त त्रीणि दद्याद्विनायके । चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्धं प्रदक्षिणम् ॥ १ ॥ इति वचनात् ॥

२. विष्णुकल्पलतायाम्—पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्याम् उरसा शिरसा दृशा । वचसा मनसा चेति प्रणामोऽष्टाङ्ग ईरितः ॥ बाहुभ्यां च सजानुभ्यां शिरसा वचसा दृशा । पञ्चाङ्गोऽयं प्रणामः स्यात् पूजासु प्रवराविमौ ॥ इति ॥

पुरस्तात् । अवोत्तरात्तात् । अव दक्षिणात्तात् । अव चोर्ध्वात्तात् । अवाधरात्तात् । सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् । त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः । त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः । त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः । त्वं चत्वारिवाक् पदानि । त्वं गुणत्रयातीतः । त्वं देहत्रयातीतः । त्वं कालत्रयातीतः । त्वमवस्थात्रयातीतः । त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् । त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् । गणादीन् पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम् । अनुस्वारः परतरः । अर्धेन्दुलसितम् । तारेण रुद्धम् । एतत्तव मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम् । अकारो मध्यमरूपम् । अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् । बिन्दुरुत्तररूपम् । नादः सन्धानम् । संहिता सन्धिः । सैषा गणेशविद्या । गणक ऋषिः । निचद्गायत्री छन्दः । गणपतिर्देवता । ॐ गं गणपतये नमः । एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तो प्रचोदयात् ॥ एकदन्तं

चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् । रदञ्च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् ॥ रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ॥ भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतञ्च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ॥ एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥ नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरमूर्त्तये नमः । एतदथर्वशीर्षं योऽधीते । स ब्रह्मभूयाय कल्पते । स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते । स सर्वतः सुखमेधते । स पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायम्प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति । सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति । धर्ममर्थं कामं मोक्षञ्च विन्दति । इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् । यो यदि मोहाद्दास्यति । स पापीयान् भवति । सहस्रावर्त्तनाद्यं यं काममधीते । तं तमनेन साधयेत् । अनेन गणपतिमभिषिञ्चति । स वाग्मी भवति । चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति । विद्यावान् भवति । इत्यथर्वणवाक्यम् । ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न बिभेति कदाचनेति । यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति । स वैश्रवणोपमो भवति । यो लाजैर्यजति । स यशोवान् भवति । स मेधावान्

भवति । यो मोदकसहस्रेण यजति । स वाञ्छितफलमवाप्नोति । यः साज्यसमिद्भिर्यजति । स सर्वं लभते । स सर्वं लभते । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा । सूर्यवर्चस्वी भवति । सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा । सिद्धमन्त्रो भवति । महाविघ्नात्प्रमुच्यते । महादोषात्प्रमुच्यते । महाप्रत्यवायात्प्रमुच्यते । स सर्वविद्भवति । य एवं वेद ॥ इत्युपनिषत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, अभिषेकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानम्—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, शुद्धोदकस्नानं

समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ पश्चाद्देवतीर्थं (चरणोदकं) धृत्वा देवं वस्त्रेण प्रमृज्य स्वस्थाने स्थापयेत् ॥ वस्त्रोपवस्त्रे—

ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः। वासोऽ अग्ग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्वविभावसो ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, वस्त्रोपवस्त्रे समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतम्—

ॐ तस्म्माद्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः ॥ गावोह जज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ गन्धम्—

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअंखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्न्यक्ष्मादमुच्यत ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, गन्धं समर्पयामि । अक्षताः-

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअंधूषत ॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, अक्षतान् समर्पयामि ॥ पुष्पाणि—

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ॥ अश्वाऽ इवसजित्त्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः पुष्पाणि समर्पयामि ॥
दूर्वाङ्कुरार्पणम्--विष्णवादिसर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा ॥ क्षीरसागरसम्भूते वंशवृद्धिकरी भव ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानोदूर्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेनच ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, दूर्वाङ्कुरार्पणं समर्पयामि ॥ सौभाग्यद्रव्याणि—

ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुञ्ज्यायाहेतिम्परिबाधं

मानं ॥ हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांऽ॑सम्प रिपातु विश्वतः॑ ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि ॥ धूपम्--

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्वन्तन्धूर्व्व तँय्योस्मान्धूर्वति तं धूर्व्वयं वय न्धूर्व्वामः ॥ देवानामसि वह्नितमऽ॑सस्नितमम्पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, धूपमाघ्रापयामि ॥ दीपम्-

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणाश्चमुखादग्निरजायत ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यम्–

ॐ अन्नपतेन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः ॥ प्रप्रदातारन्तारिषऽऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे ॥ १ ॥

धेनुमुद्रां प्रदर्श्य पूर्वापोशनं समर्पयामि ॥ ग्रासमुद्रया––ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, नैवेद्यं समर्पयामि ॥ नैवेद्यमध्ये पानीयम्–

एलोशीरलवङ्गादिकर्पूरपरिवासितम्। प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवस्वः

श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, नैवेद्यमध्ये सुवासितपानीयं समर्पयामि ॥ उत्तरापोशनं समर्पयामि ॥ हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि ॥ मुखप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि ॥ ताम्बूलम्--

ॐ उतस्म्मास्यद्द्रवंतस्तुरण्यतः पुर्णं न वेरनुवातिप्प्रगर्द्धिनंः ॥ श्श्येनस्येवद्ध्रजंतोऽअङ्कुसम्परिंदधिक्काव्वांःसहोर्ज्जातारित्त्रतःस्वाहा ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, ताम्बूलं समर्पयामि ॥

फलानि--

ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥

बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, फलानि समर्पयामि ॥

दक्षिणा—

ॐ यद्दत्तंयत्परादानंयत्पूर्त्तंयाश्चदक्षिणाः ॥ तदग्निर्वै श्वकर्म्मणःस्वर्द्देवेषुनोदधत् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, दक्षिणां समर्पयामि ॥

नीराजनम्—

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्रायिधामभिः ॥ दिवः सदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्वेषंवर्त्ततेतमः ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः कर्पूरारार्तिक्यं दर्शयामि ॥

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः—

ॐ य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वास्तानि॒ धर्म्मा॑णि प्रथ॒मान्न्या॑सन् ॥ ते ह॒ नाक॑म्महि॒मान॑ः सचन्त॒ यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः ॥ १ ॥ ॐ रा॒जा॒धि॒रा॒जाय॑ प्रसह्यसा॒हिने॑ ॥ नमो॑ व॒यं वै॑श्रव॒णाय॑ कुर्महे ॥ स मे॒ कामा॒न्काम॒कामा॑य मह्य॑ ॥ का॒मे॒श्व॒रो वै॑श्रव॒णो द॑दातु ॥ कु॒बे॒राय॑ वैश्रव॒णाय॑ ॥ म॒हा॒रा॒जाय॒ नम॑ः ॥ २ ॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं

समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् ॥ पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति । तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे ॥ आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरुतविश्व तस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजन यन्देवऽएकः ॥ ३ ॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥ विशेषार्घ्यः— रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक । भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥ द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो । वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥ अनेन सफ-

लार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ॥ इति विशेषार्घ्यं समर्पयामि । प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ॥ तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ॥ देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ प्रार्थना—विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥ नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥ १ ॥ क्षमापनम्—आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् ॥ पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥१॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात् ॥ ३ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं

भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ४ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥५॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा रक्षस्व परमेश्वर ॥ ६ ॥ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे ॥ साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ॥७॥ ॐभूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, प्रार्थनापूर्वकं साष्टाङ्गं नमस्करोमि ॥ अर्पणम्—अनेनावाहनासनपाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवस्त्रोपवीतगन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलदक्षिणाप्रदक्षिणामन्त्रपुष्परूपैः षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतेन पूजनाख्यकर्मणा ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहितश्रीमन्महागणाधिपतिः प्रीयतां न मम ॥

अथ ब्राह्मणवरणम्

तत्रादौ ब्राह्मणपूजनम्—"त्वां गंधर्व" इति मंत्रेण तिलककरणम् । "अक्षन्नमीमदन्त"—इति मंत्रेण अक्षतान् । "श्रीश्चते"—इति मंत्रेण पुष्पमालां शिरसि दद्यात् । ततो वरणसामग्रीं

गृहीत्वा तदभावे निष्क्रयद्रव्यमादाय संकल्पं कुर्यात् । तद्यथा—देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं (वर्माहं गुप्तोऽहं) संकल्पितत्रिगुणात्मिकाभगवतीश्रीदुर्गापूजनकर्मणि दुर्गापूजन-करणार्थं (दुर्गासप्तशतीपाठकरणार्थं) एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे । वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । वरणग्रहणं कृत्वा ब्राह्मणो मंत्रं पठेत्—ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ अथ यजमानहस्ते रक्षाबन्धनम्—ॐ यदाबध्नं दाक्षायणा हिरण्य ठं शतानीकाय सुमनस्य मानाः । तन्मऽआ-बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथा सम् ॥ येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥ "स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥" इति मंत्रेण तिलकं कुर्यात् ।

❋ अथ कलशस्थापनम् ❋

तत्रादौ कलशलक्षणं यथा—स्वर्णं वा राजतं वापि ताम्रं मृन्मयजं तु वा ॥ अकालमव्रणं चैव सर्वलक्षणसंयुतम् ॥ १ ॥ पञ्चाङ्गुलवैपुल्यमुत्सेधे षोडशांगुलम् ॥ द्वादशांगुलकं मूलं मुखमष्टांगुलं तथा ॥२॥ अथ सप्त धान्यानि—यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गुस्तथैव च ॥ श्यामाकाश्चणकाश्चैव सप्तधान्यानि संविदुः ॥ १ ॥ अथवा—यवधान्यतिलाः कंगुः मुद्गचणकश्यामकाः ॥ एतानि सप्तधान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत् ॥ अथ सप्त मृदः—अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्ध्रदात् ॥ राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय प्रक्षिपेत् ॥ अथ सर्वौषधयः—मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् ॥ सठी चम्पकमुस्ता च सर्वौषधिगणः स्मृतः ॥ अथ पञ्चपल्लवानि—अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः ॥ पञ्चपल्लवमित्युक्तं सर्वकर्मणि योजयेत् ॥ अथ पञ्चरत्नानि—कनकं कुलिशं मुक्ता पद्मरागं च नीलकम् ॥ एतानि पञ्चरत्नानि सर्वकार्येषु योजयेत् ॥ प्रकारान्तरम्—वज्रमौक्तिकवैडूर्यप्रवालं चेन्द्रनीलकम् ॥ अलाभे सर्वरत्नानां हेम सर्वत्र योजयेत् ॥ ततः कुंकुमादिना भूमौ अष्टदलंपद्मं कृत्वा ॥

ॐ मुहीद्यौःपृथिवीचंनऽइमंयुज्ञम्मिमिक्षताम् ॥ पिपृता-
न्नोभरीमभिः ॥ १ ॥ इति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥

ॐ ओषधयः समंवदन्तुसोमेनसुहराज्ञा ॥ यस्मैकृणोति
ब्राह्मणास्तठं. राजन्नपारयामसि ॥ १ ॥ इति सप्तधान्यं विकिरेत् ॥

ॐआजिंघ्रकुलशम्मुह्यात्वाविशुन्त्विन्दवः ॥ पुनरूर्जा
निवर्त्तस्वुसानः सुहस्रन्धुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनम्माविशता
द्रयिः ॥ २ ॥ इति सप्तधान्योपरि कलशं स्थापयेत् ॥

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ ३ ॥ इति कलशे जलं पूरयेत् ॥

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्च्यत॥४॥ इति गन्धं क्षिपेत् ॥

ॐ याऽओषधीः पूर्व्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगम्पुरा ॥ मनैनुबब्भ्रूणामहऽं शतन्धामानिसप्तच ॥५॥ इति सर्वौषधीः ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥६॥ इति दूर्वाङ्कुरान् ॥

ॐ अश्वत्थे वो निषदनम्पर्णे वो वसतिष्कृता ॥ गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥७॥ इति पञ्चपल्लवान् ॥ ततः पवित्रेस्थ इति मन्त्रेण पवित्रं कलशे क्षिपेत् ।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥८॥ इति सप्तमृदः ॥

ॐ याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ॥
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ हंसः ॥९॥ इति पूगीफलम् ॥

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्न्यक्रमीत् ॥ दधद्र-
त्नानि दाशुषे ॥१०॥ इति पञ्चरत्नानि ॥

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआ-
सीत् ॥ स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम
॥ ११ ॥ इति हिरण्यम् ॥

ॐसुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः ॥ वासोऽ-

अग्नेविश्वरूपꣳसंव्ययस्वविभावसो ॥ १२ ॥ इति वस्त्रयुग्मेन कलशं वेष्टयेत् ॥

ॐपूर्णादर्विपरापतसुपूर्णापुनरापत ॥ वस्नेवविक्री-

णावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्रतो ॥ १३ ॥ इति पूर्णपात्रमुपरि न्यसेत् ॥ याः फलि-

नीरिति कलशोपरि नारिकेलफलं संस्थाप्य ।

ॐतत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोह-

विर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुः-

प्रमोषीः ॥१४॥ इति—

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ॥ ॐ अपां पतये वरुणाय नमः ॥ इति पञ्चोपचारैर्वरुणं सम्पूज्य[1] ॥ ततो गङ्गाद्यावाहनम्—कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः ॥ संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते ॥१॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ॥ मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥२॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी ॥ अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥३॥ कावेरी कृष्णवेणी च गंगा चैव महानदी ॥ तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥४॥ नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः ॥ पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ॥५॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥६॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥७॥ अत्र गायत्री सावित्री

१ गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं पञ्च ते क्रमात् । पञ्चोपचारमाख्यातं पूजयेत्तत्त्वविद् बुधः ॥१॥

शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥ आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥८॥ यजमानः स्वहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंयज्ञꣳसमिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ॥१५॥

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ॥ विष्ण्वाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इति वा ॥ अक्षतान् समर्पयामि ॥ पादयोः पाद्यं स० ॥ हस्तयोः अर्घ्यं स० ॥ आचमनं स० ॥ पञ्चामृतस्नानं स० ॥ शुद्धोदकस्नानं स० ॥ स्नानाङ्गाचमनं० ॥ वस्त्रं स० ॥ आचमनं स० ॥ यज्ञोपवीतं स० ॥ आचमनं स० ॥ उपवस्त्रं स० ॥ आचमनं

स० ॥ गन्धं स० ॥ अक्षतान् स० ॥ पुष्पमालां स० ॥ नानापरिमलद्रव्याणि स० ॥ धूपं स० ॥ दीपं स० ॥ हस्तप्रक्षालनं स० ॥ नैवेद्यं स० ॥ आचमनीयं स० ॥ मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं स० ॥ ताम्बूलं स० ॥ पूगीफलं स० ॥ कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थं द्रव्यदक्षिणां स० ॥ आरार्तिक्यं मन्त्रपुष्पाञ्जलिं स० ॥ प्रदक्षिणां स० ॥ नमस्कारं स० ॥ अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम ॥ अथ प्रार्थना—देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥ उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ १ ॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ २ ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥३॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ४ ॥ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ॥ सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥ ५ ॥ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ॥ देवतापूजनं यावत्तावत्त्वं सन्निधो भव ॥ ६ ॥ इति कलशप्रार्थना ॥

* अथ पुण्याहवाचनम् *

अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना स्वर्ण-कलशं धारयित्वा प्रार्थयेत् । एताः सत्या आशिषः सन्तु । दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च । तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ शिवा आपः सन्तु, सौमनस्यमस्तु, अक्षतं चारिष्टं चास्तु, अस्त्वक्षतमरिष्टं च । गन्धाः पान्तु, सुमङ्गल्यं चास्तु । अक्षताः पान्तु, आयुष्यमस्तु । पुष्पाणि पान्तु, सौश्रियमस्तु । ताम्बूलानि पान्तु, ऐश्वर्यमस्तु । दक्षिणाः पान्तु, बहुदेयं चास्तु । दीर्घायुः शान्तिः पुष्टिः तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु, तथास्तु । यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्त्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुःसामाथर्वाशीर्वचनं बहृषिसम्मतं संविज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये । "वाच्यताम्" ।

ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रंपश्येमाक्षभिर्यज-

जत्राहं ॥ स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवाᳬंसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं-
यदायुः ॥ १ ॥ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत ॥
नेष्ट्राद्दृतुभिरिष्यत ॥२॥ सविता त्वा सवानाᳬं सुवतामग्नि-
र्गृहपतीनाᳬं सोमो वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो
ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ॥३॥
न तद्रक्षाᳬंसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजᳬं
ह्येतत् ॥ यो बिभर्ति दाक्षायणᳬं हिरण्यᳬं स देवेषु कृ-

णुतेदीर्घमायुः समनुष्येषु कृणुतेदीर्घमायुः ॥४॥ उच्चातै-
जातमन्धंसोदि विसद्भूम्यादंदे ॥उग्रठं० शर्म्ममहि श्रवं: ॥५॥
उपांस्मै गायतानरः पवंमानायेन्दंवे ॥ अभिदेवाँ २
इयंक्षते ॥ ६ ॥

द्रविणोदाद्रविंणासस्तुरस्यंद्रविणोदाः सनंरस्यप्रयं सत् ॥
द्रविणो दाद्वीरंवतीमिषंन्नो द्रविणोदारांसते दीर्घमायुः ॥१॥
सविता पश्चात्तांत्सविता पुरस्तांत्सवितोत्तरात्तांत्सविताऽध-

रात्तांत् ॥ सुवितानः सुवतु सर्वतांतिं सावितानोरासतान्दीर्घ-
मायुः।२।नवोनवो भवति जायमानोऽह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम् ॥
भागन्देवेभ्यो विदधात्यायंप्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः॥३॥
उच्चादिविदत्तिणावन्तोऽअस्थुर्य्येऽअश्वदाः सह ते सूर्य्येण ॥
हिरण्यदाऽअमृतत्वंभजन्ते वासोदाः सोम प्रतिरन्तऽआयुः
॥ ४ ॥ आपऽउदन्तु जीवसे दीर्घायुत्वाय वर्चसे ॥ यऽस्त्वा
हृदा कीरिणामन्यमानो मर्त्यम्मर्त्यो जोहवीमि जातवेदो

यशो अस्मा सुधेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्या ॥५॥ यस्मै त्वं सुकृते जातवेदऽउलोकमग्ने कृणावस्योनम् ॥ आश्विनं सपुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिन्नु शते स्वास्ति ॥ ६ ॥

व्रतजपनियमतपः स्वाध्यायक्रतुशमदमदयादानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् । "समाहितमनसः स्मः" । प्रसीदन्तु भवन्तः "प्रसन्नाः स्मः" ॥ यजमानः—शान्तिरस्तु । पुष्टिरस्तु । तुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । शिवं कर्मास्तु । कर्म्मसमृद्धिरस्तु । वेदसमृद्धिरस्तु । शास्त्रसमृद्धिरस्तु । धनधान्यसमृद्धिरस्तु । इष्टसम्पदस्तु । बहिः—अरिष्टनिरसनमस्तु । यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु । अन्तः—यच्छ्रेयस्तदस्तु । उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु । उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु । उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः

सम्पद्यन्ताम् । तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रसम्पदस्तु । तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् । तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सदैवते प्रीयेताम् । दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् । अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् । वशिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् । अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् । ऋषयश्छन्दांस्याचार्या वेदा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम् । ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् । श्रद्धामेधे प्रीयेताम् । भगवती कात्यायनी प्रीयताम् । भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् । भगवान् स्वामी महासेनः सपत्नीकः ससुतः सपार्षदः सर्वस्थानगतः प्रीयताम् । हरिहरहिरण्यगर्भाः प्रीयन्ताम् । सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् । सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । बहिः—हताश्च ब्रह्मविद्विषः । हताश्च परिपन्थिनः । हताश्च अस्य कर्मणो विघ्नकर्तारः । शत्रवः पराभवं यान्तु । शाम्यन्तु घोराणि । शाम्यन्तु पापानि । शाम्यन्त्वीतयः । अन्तः—शुभानि वर्द्धन्ताम् । शिवा आपः सन्तु । शिवा ऋतवः सन्तु । शिवा अग्नयः

सन्तु । शिवा आहुतयः सन्तु । शिवा ओषधयः सन्तु । शिवा वनस्पतयः सन्तु । शिवा अतिथयः सन्तु । अहोरात्रे शिवे स्याताम् ।

ॐ निकामे निंकामे नः पुर्जन्यों वर्षतु फलंवत्यो नुऽ-ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ७ ॥

शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्य पुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम् । भगवान्नारायणः प्रीयताम् । भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम् । भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयताम् । पुण्याह-कालान् वाचयिष्ये । वाच्यताम् । यजमानः—भो ब्राह्मणाः ! मम गृहे अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मणाः—ॐ पुण्याहम् ३—पुनन्तुमा देवजनाः पुनन्तुमनं-

साधियं÷ ॥ पुनन्तुव्विश्वांभूतानि जातवेदः पुनीहिमा ॥८॥

यजमानः—भो ब्राह्मणाः ! मम गृहे अस्य कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मणाः—अस्तु स्वस्ति ३—ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनं÷ पूषाव्विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ ९ ॥

यजमानः—भो ब्राह्मणाः ! मम गृहे अस्य कर्मणः ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मणाः—अस्तु ऋद्धिः ३—सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगंन्मज्ज्योतिरमृताऽअभूम ॥ दिवंम्पृथिव्याऽअद्ध्यारुहामाविदामदे-

वान्तस्वुज्ज्योंतिः ॥ १० ॥

यजमानः—भो ब्राह्मणाः ! मम गृहे अस्य कर्मणः श्रीरस्तु, इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मणाः—अस्तु श्रीः ३—श्रीश्चंते लुक्ष्मीश्चुपत्न्यांवहोरा॒त्रे पा॒र्श्वे नक्षंत्राणि रू॒पम॒श्विनौ॒ व्यात्तंम् ॥ इ॒ष्णन्निंषाणा॒मुम्मंऽइषाण सर्व्वलो॒कम्मंऽइषाण ॥ ११ ॥

अभिषेकमन्त्राः—ॐ पयंः पृ॒थि॒व्याम्पय॒ऽओष॑धीषु॒ पयों दि॒व्य॒न्तरिंक्षे॒ पयोंधाः ॥ पयंस्वतीः प्र॒दिशंः सन्तु॒मह्यम् ॥ १ ॥

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥२॥ ॐ पुनन्तु मादेवजनाः पुनन्तु मनसाधियः ॥ पुनन्तु व्विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥३॥ ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यै व्वाचोयन्तुर्यन्त्रियेदधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ ४ ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुः

प्रसुवेश्विनोर्ब्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ अश्विनोर्भैषंज्येन तेजंसेब्रह्मवर्चुसायाभिषिंञ्चामि सरंस्वत्यैभैषंज्येन व्वीर्या- यान्नाद्यांयाभिषिञ्चामीन्द्रंस्येन्द्रियेण बलांयश्रियै यशंसे- भिषिंञ्चामि ॥५॥ ॐ द्यौःशान्तिरन्तरिंक्षुᳪं शान्तिः पृथि- वीशान्तिरापुः शान्तिरोषंधयुः शान्तिः ॥ व्वनुस्पतंयुः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वᳪं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ ६ ॥

❋ अथ मातृकापूजनम् ❋

अथाग्नेय्यां प्रतिमास्वक्षतपुञ्जेषु वा प्राक्संस्थमुदक्संस्थं वा पीठोपरि मातृस्थापनम् ॥

तद्यथा—समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा ॥ त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहं ॥१॥

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रिय-पतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गण-पतये नमः गणपतिमावाहयामि ॥

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्क्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्च-

प्प्रयन्तस्वं॑॥२॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि ॥

ॐ हिरं॑ण्यरूपाऽउषसो॑व्विरोकऽउभाविन्द्राऽउदि॑थः सूर्य॑श्च ॥ आरो॑हतंव्वरुणामित्रगर्तन्ततं॑श्चक्षाथामदि॑तिन्दि॑तिञ्च मित्रो॑सिव्वरुंणोसि ॥३॥ ॐ पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि ॥

ॐ निवेशंनः सुङ्गमं॑नोव्वसूंनांव्विश्वांरूपाभिचंष्टेशचीभिः ॥ देवऽइंवसविताससत्यधर्म्मेन्द्रोनतंस्त्थौसमरेपंथीनाम् ॥ ४ ॥

ॐ शच्यै नमः शचीमावाहयामि ॥

ॐ मेधाम्मेवरुणोददातुमेधामग्निश्श्प्रजापतिः ॥ मेधामिन्द्रश्चवायुश्चमेधान्धाताददातुमेस्वाहा ॥५॥ ॐ मेधायै नमः मेधामावाहयामि ॥

ॐ सवितात्त्वांसवानांᳪ सुवतामग्निर्गृहपतीनाᳪ सोमोवनस्पतीनाम्॥ बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रोज्ज्यैष्ठ्यायरुद्रश्पशुभ्योमित्रश्सत्योवरुणोधर्म्मपतीनाम् ॥६॥ ॐ सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि ॥

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनोविशल्ल्योबाणवाँ२॥ ऽउत ॥

अनैशन्नस्यया ऽइषंवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥७॥

ॐ विजयायै नमः विजयामावाहयामि ॥

ॐ बह्वीनाम्पिताबहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमनावग-त्य ॥ इषुधिःसङ्काःपृतनाश्चसर्वाः पृष्ठेनिनद्धोजयतिप्रसूतः ॥८॥ ॐ जयायै नमः जयामावाहयामि ॥

ॐइन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञःपुरऽएतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम् ॥९॥

ॐ देवसेनाय नमः देवसेनामावाहयामि ॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः ॥ अक्षन्नपितरोमीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरः पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि ॥

ॐ स्वाहाप्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः ॥ पृथिव्यैस्वाहाग्नयेस्वाहान्तरिक्षायस्वाहावायवेस्वाहा ॥ दिवेस्वाहासूर्यायस्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि ॥

ॐ आपोऽअस्मान्मातरं ÷ शुन्धयन्तुघृतेनंनोघृतप्व ÷
पुनन्तु ॥ विश्वठंऽ० हिरिप्प्रम्प्रवहंन्तिदेवीरुदिदांभ्युदंशुचि-
रापूतऽएंमि ॥ दीक्षातुपसोंस्तनूरासितान्त्वांशिवाठंशग्मा-
म्परिंदधेभद्रंवर्णम्पुष्यंन् ॥ १२ ॥ ॐ मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि ॥

ॐ रयिश्चंमेरायंश्चमेपुष्टञ्चंमेपुष्टिंश्चमेविभुचंमेप्प्रभु-
चंमेपूर्णञ्चंमेपूर्णतरञ्चमेकुयंवञ्चमेक्षितञ्चमेन्नंञ्चमेक्षुच्चंमे-
यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ १३ ॥ ॐ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि ॥

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ॥ यस्मान्नऋतेकिञ्चनकर्म्मक्रियतेतन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१४॥ ॐ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि ॥

ॐ अङ्गान्न्यात्मन्न्भिषजातदश्विनात्मानमङ्गैःसमधात्सरस्वती ॥ इन्द्रस्यरूपꣳ शतमानमायुश्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतन्दधानाः ॥१५॥ ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि ॥

ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः ॥

सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवासिन्धुन्दुरितात्यग्निः ॥१६॥

ॐ तुष्टयै नमः तुष्टिमावाहयामि ॥

ॐ प्राणायस्वाहांपानायस्वाहांव्यानायस्वाहाचक्षुंषेस्वाहा श्रोत्रांयस्वाहांव्वाचेस्वाहामनंसेस्वाहां ॥ १७ ॥

ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि ॥

ॐ मनोंजूतिर्जुंषतामाज्ज्यंस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तंनो त्वरिंष्टंयज्ञꣳसमिमन्दंधातु ॥ व्विश्वेंदेवासंऽइहमांदयन्तामोꣽ३ प्रतिष्ठ ॥ १८ ॥

गौर्याद्याः कुलदेवतान्तमातरो गणपतिसहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ १ ॥ धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः । गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश ॥ २ ॥ ॐ गणपत्यादिकुलदेवतान्तमातृभ्यो नमः, इत्यभ्यर्चनम् ॥

❋ अथ वसोर्द्धारापूजनम् ❋

आग्नेय्यां भित्तौ कुंकुमादिना बिन्दुकरणेनालङ्करणं कृत्वाऽऽगामिमन्त्रं पठन् घृतेन सप्त धाराः प्राक्संस्था उदक्संस्था वा कुर्यात् ॥

ॐ व्वसोः पुवित्रंमसिशतधारँ व्वसोः पुवित्रंमसिसहस्रंधा-रम्।देवस्त्वांसविुतापुंनातुव्वसोः पुवित्रेंणशतधांरेणसुप्वा॥१॥

इति मन्त्रेण वसोर्द्धाराः कर्तव्याः ॥ ॐ कामधुक्षः ॥ इत्येतावता मन्त्रेण धारा-
मर्धभागेन गुडेनैकीकरणम् । प्रतिधारामेकैकदेवतामावाहयेत् ॥

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय ॥ पशूनाᳬ रूप-
मन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ श्रियै नमः श्रियमावाहयामि ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपम-
श्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्म ऽइषाण सर्वलोकम्म ऽ
इषाण ॥ २ ॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि ॥

ॐ भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳪंसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः ॥ ३ ॥ ॐ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि ॥

ॐ मेधाम्मेवरुणोददातुमेधामग्निःप्रजापतिः ॥ मेधामिन्द्रश्चवायुश्चमेधान्धाताददातुमेस्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ मेधायै नमः मेधामावाहयामि ॥

ॐ प्राणायस्वाहापानायस्वाहाव्यानायस्वाहाचक्षुषेस्वा

ह्यश्रोत्रायस्वाहाव्वाचेस्वाहामनसेस्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि ॥

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ ६ ॥ ॐ प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि ॥

ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ॥ यज्ञं वष्टु-धियावसुः ॥ ७ ॥

ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि ॥ ॐ श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ॥ माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण वा ॥ ॐ वसोर्द्धारादेवताभ्यो नमः,

इत्यावाह्य ॥ ॐ मनो० ॥ इति मन्त्रेण वसोर्द्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ ततः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः ॥ कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥ १ ॥ अनया पूजया वसोर्द्धारादेवताः प्रीयन्तान्न मम ॥ इति वसोर्द्धाराकरणम् ॥

अथायुष्यमन्त्रजपः—आयुष्यंवर्चस्यमितित्र्यृचस्य दक्षऋषिः, उष्णिक्शक्करीत्रिष्टुप्छन्दांसि, हिरण्यं दैवतम्, आयुष्याभिवृद्धयर्थं जपे विनियोगः—

ॐ आयुष्यंव्वर्च्चस्यꣳरायस्प्पोषमौद्भिदम् । इदꣳहिरण्ण्यं वर्च्चस्वज्जैत्त्रायाविंशतादुमाम् ॥ नतद्रक्षांꣳसिनपिंशाचास्तरन्तिदेवानामोजः प्प्रथमजꣳह्येतत् । योबिभर्त्तिदाक्षायणꣳहिरण्ण्यꣳ सदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुꣳसमनुष्येषुकृणुतेदीर्ग्घं

मायुः ॥ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्नमऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम् ॥

अथ साङ्कल्पिकविधिना नान्दीश्राद्धप्रयोगः ॥

अथ यज्ञोपवीती प्राङ्मुखो दक्षिणं जानु पातयित्वा पात्रे उदङ्मुखान् प्राक्संस्थान् स्वयमुदङ्मुखश्चेत् प्राङ्मुखान् उदक्संस्थान् वैश्वदेवस्थाने द्वौ सपत्नीकपितृपार्वणस्थाने द्वौ सपत्नीकमातामहपार्वणस्थाने द्वौ च एवं षट्कुशबटून् दूर्वाकाण्डानि वा संस्थाप्य क्षणदानम्—यवान्गृहीत्वा—ॐ सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानां अद्यकर्तव्यप्रधानसङ्कल्पोक्तकर्माङ्गसाङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम्—इति यवान्निक्षिप्य ॥ ॐ तथा प्राप्नुतां भव-

न्तौ। प्राप्नवाव। यवान् गृहीत्वा—गोत्राणां नान्दीमुखानां पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां अद्यकर्तव्यप्रधानसंकल्पोक्तकर्माङ्गसाङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम्—इति यवान्निक्षिप्य॥ ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ। प्राप्नवाव। यवान्गृहीत्वा—द्वितीयगोत्राणां नान्दीमुखानां मातामहप्रमातामहानां सपत्नीकानां अद्यकर्तव्यप्रधानसङ्कल्पोक्तकर्माङ्गसाङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम्। इति यवान्निक्षिप्य। ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ। प्राप्नवाव। पाद्यदानम्—सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः॥ द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः॥ सङ्कल्पः—अद्यपूर्वोच्चरित० शुभपुण्यतिथौ साङ्कल्पिकविधिना नान्दीश्राद्धं करिष्ये॥ आसनदानम्—सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इदं वः आसनम्॥ गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वः आसनम्॥ द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वः आसनम्॥ गन्धादि-

दानम्—सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इदं वो गन्धाद्यर्चनं यथाविभागं स्वाहा नमः॥ गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वो गन्धाद्यर्चनं यथाविभागं स्वाहा नमः॥ द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वो गन्धाद्यर्चनं यथाविभागं स्वाहा नमः ॥ भोजननिष्क्रयद्रव्यदानम्–सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयीभूतं किञ्चिद्धिरण्यं दत्तं अमृतरूपेण वः स्वाहा नमः ॥ गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयीभूतं किञ्चिद्धिरण्यं दत्तं अमृतरूपेण वः स्वाहा नमः। द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयीभूतं किञ्चिद्धिरण्यं दत्तं अमृतरूपेण वः स्वाहा नमः॥ सक्षीरयवोदकदानम्—सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्॥ गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम्॥ द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम् ॥ आशीर्ग्रहणम्—

अघोराः पितरः सन्तु ॥ सन्त्वघोराः पितरः ॥ गोत्रं नो वर्धताम् ॥ वर्धतां वो गोत्रम् ॥ दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम् ॥ अभिवर्द्धन्तां वो दातारः ॥ वेदाश्च नोऽभिवर्द्धन्ताम् ॥ वर्द्धन्तां वो वेदाः ॥ सन्ततिर्नोऽभिवर्द्धताम् ॥ वर्द्धतां वः सन्ततिः ॥ श्रद्धा च नो मा व्यगमत् ॥ मा व्यगमद्वः श्रद्धा ॥ बहु देयं च नोस्तु ॥ अस्तु वो बहु देयम् ॥ अन्नं च नो बहु भवेत् ॥ भवतु वो बह्वन्नम् ॥ अतिथींश्च लभेमहि ॥ अतिथींश्च लभध्वम् ॥ याचितारश्च नः सन्तु ॥ सन्तु वो याचितारः ॥ एता आशिषः सत्याः सन्तु ॥ सन्त्वेताः सत्या आशिषः ॥ दक्षिणादानम् —सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूल-निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ गोत्रेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य, फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ द्वितीयगोत्रेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नी-केभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम् ॥ सुसम्पन्नम् ॥

विसर्जनम्—ॐ व्वाजेवाजेवतवाजिनोनोधनेषुव्विप्राऽअमृताऽ-ऋतज्ञाः ॥ अस्यमध्वः पिबतमादयध्वन्तृप्तायातपथिभि-र्देवयानैः ॥

अनुव्रजनम्—ॐ आमाव्वाजस्यप्रसवोजगम्यादेमेद्यावापृथि-वीव्विश्वरूपे ॥ आमागन्तान्पितरामातराचामासोमोऽअमृ-तत्वेनगम्यात् ॥

हस्ते जलमादाय—मयाचरितेऽस्मिन्साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीनान्दीमुखप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु । अस्तु परिपूर्णः । अनेन

साङ्कल्पिकविधिना नान्दीश्राद्धेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयन्ताम् । इति साङ्कल्पिकविधिना नान्दीश्राद्धप्रयोगः ॥

❀ अथ सूर्याद्यावाहनम् ❀

ईशानकोणे नवग्रहमण्डलं विलिख्य मध्यादिकोष्ठेषु उक्तदिक्षु विदिक्षु सूर्यादिग्रहाणां स्थापनं पूजनं च कुर्यात् ॥

ॐ आकृष्णेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥
हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य ! इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि । इति मंडलमध्ये सूर्यमावाहयेत् ।

ॐ इमन्देवाऽअसपत्नᳬं सुवद्ध्वम्महतेक्षत्रायमहतेज्यै
ष्ठ्यायमहतेजानंराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्ष्यपुत्र
मम्मुष्ष्यैपुत्रमस्यैविश ऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकम्ब्राह्म
णानाᳬंराजा ॥ २ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि । आग्नेय्याम् सोममावाहयेत् ।

ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवःककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम् ॥ अपाᳬं
रेताᳬंसिजिन्वति ॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि । दक्षिणे भौममावाहयेत् ।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सᳬ सृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥ ४ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध ! इहागच्छ इह तिष्ठ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि । ईशान्याम् बुधमावाहयेत् ।

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥

सद्दीदयच्छवंसऽऋतप्रजातुतदुस्मासुद्रविंणन्धेहिचित्रम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते ! इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि । उत्तरे गुरुमावाहयेत् ॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मंणाव्यपिबत्क्षुत्रम्पयुःसोमं-म्प्रजापतिः ॥ ऋतेनंसत्यामिंन्द्रियंविपानं शुक्रमन्धंसऽ-इन्द्रंस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधुं ॥ ६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र ! इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि । पूर्वे शुक्र० ॥

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्योरभि-स्त्रवन्तुनः ॥ ७ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर ! इहागच्छ इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि ॥ पश्चिमे श० ॥

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखा ॥ कयाश-चिष्ठयावृता ॥ ८ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः, राहुमावाहयामि० ॥ नैर्ऋत्याम् राहु० ॥

ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे ॥ समुषद्भिर-जायथाः ॥ ९ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो ! इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः, केतुमावाहयामि। वायव्यां केतु०। ततोऽधिदेवतास्थापनं ग्रहदक्षिणपार्श्वे—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो ईश्वर ! इहागच्छ इह तिष्ठ ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म ऽइषाण सर्वलोकम्म ऽइषाण ॥ २ ॥

१—शिवः शिवा गुहो विष्णुर्ब्रह्मेन्द्रयमकालकाः। चित्रगुप्तोऽथ भान्वादिद्क्षिणे चाधिदेवताः ॥ इति स्कान्दे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो उमे ! इहागच्छ इह तिष्ठ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ।
श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूउपस्तुत्यम्महिजातन्तेऽअर्वन् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द ! इहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि ॥

ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोः श्नप्त्रेस्थोविष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ ४ ॥

भूर्भुवः स्वः विष्णो ! इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि ॥

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणोब्रह्मवर्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्यः शू

रंऽइषुव्योतिव्याधीमंहारथोजांयतान्दोग्ग्धींधेनुर्वोढांनड्वा
नाशुश्सप्तिंहपुरंन्धिर्योंषांजिष्णूरंथेष्ठाश्सभेयोसुवांस्ययज
मानस्यवीरोजांयतान्निकामेनिंकामेनहं पर्ज्जन्योंवर्षतुफलंव
त्योनऽओषंधयहं पच्यन्तांयोगक्षेमोनं÷कल्पताम् ॥५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् ! इहागच्छ एह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि ॥

ॐ सजोषांऽइन्द्रसगंणोमरुद्भिंहसोमंम्पिबवृत्रहाशूंरावि
द्वान् ॥ जहिशत्रूँ१रपमृधोंनुदस्वाथाभंयङ्कृणुहिविश्व तों-

न स्वः ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुव स्वः इन्द्र ! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि ॥

ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्मःपित्रे ॥ ७ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम ! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि ॥

ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्वाक्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः ॥ ८ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः काल ! इहागच्छ इह तिष्ठ कालाय नमः, कालमावाहयामि ॥

ॐ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय ॥ ९ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्त ! इहागच्छ इह तिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्तमावाहयामि ॥

ततः प्रत्यधिदेवतास्थापनं ग्रहवामपार्श्वे—

ॐ अ॒ग्निन्दू॒तम्पु॒रोद॑धे हव्य॒वाह॒मुप॑ब्रुवे ॥ दे॒वाँ२ऽआ सा॑दयादि॒ह ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुव स्वः अग्ने ! इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि ॥

ॐ आपो॒ हि ष्ठा म॑यो॒भुव॒स्ता न॑ऽऊ॒र्ज्जे द॑धातन ॥ म॒हे रणा॑य॒ चक्ष॑से ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आपः ! इहागच्छ इह तिष्ठत अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि ॥

१—अग्निरापो धरा विष्णुः शक्रेन्द्राणी पितामहाः । पन्नगाःकः क्रमाद्वामे ग्रहप्रत्यधिदेवताः ॥ इति स्कान्दे ॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः॥३॥ ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिवि ! इहागच्छ इहतिष्ठ पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि ।

ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाᳬसुरेस्वाहा॥४॥ ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णो ! इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि ।

ॐ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञःपुरऽएतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्रम् ॥५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र ! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि ॥

ॐ अदित्यैरास्नांसीन्द्राण्याऽउष्णीषं ॥ पूषांसिंघर्म्मा यंदीष्व॥६॥ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राणि ! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि।

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्न्यन्न्योविश्वारूपाणिपरिताबभूव॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुवयंस्यामपतयोरयीणाम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते ! इहागच्छ इह तिष्ठ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि ॥

ॐ नमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षे येदिवितेभ्यः सर्प्पेभ्योनमः ॥ ८॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पाः ! इहागच्छत इह तिष्ठत सर्प्पेभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि ॥

ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचौव्वेनऽआवः॥
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः॥६॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि॥ ततो विनायकादिपञ्चलोकपालदेवताः, वास्तोष्पतिं, क्षेत्रपालं चावाहयेत्॥

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳ हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳ हवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासिगर्ब्भधम्॥१॥

१—गणेशश्चाम्बिका वायुराकाशश्चाश्विनौ तथा। ब्रह्माणमुत्तरे पञ्चलोकपालाः प्रकीर्त्तिताः॥ इति स्कान्दे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते ! इहागच्छ इह तिष्ठ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि ॥

ॐअम्बेऽअम्बिकेम्बालिकेनमानयतिकश्चन ॥ ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥ २ ॥

भूर्भुवः स्वः दुर्गे ! इहागच्छ इह तिष्ठ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि ॥

ॐवायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि॥ नियुत्वान्सोमपीतये ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायो ! इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि ॥

ॐघृतङ्घृतपावानःपिबतवसांवसापावानः पिबतान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशो

दिग्भ्यश्स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश ! इहागच्छ इह तिष्ठ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि ॥

ॐ यावाङ्कशामधुमत्याश्विनासूनृतावती॥ तयायज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ ५ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विनौ ! इहागच्छतमिह तिष्ठतम्, अश्विभ्यां नमः अश्विनावावाहयामि ॥

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशन्नोभवद्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥ ६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते ! इहागच्छ इह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि ॥

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्न्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारम्मग्नेः ।
एमैनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यंव्वैश्वानरंक्षैत्रजित्यायदेवाः ॥७॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपते ! इहागच्छ इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः क्षेत्राधिपतिमावाहयामि ॥ अथ मण्डलाद्बाह्ये दशदिक्पालानावाहयेत् ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥१॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र ! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि ॥

---

१ संग्रहे–इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ कुबेर इशो ब्रह्मा च ह्यनन्तो दश दिक्पतिः ॥

ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्वश्चवन्द्य ॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणास्तवव्रते ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने ! इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि ॥

ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहाघर्म्माय स्वाहाघर्मःपित्रे ॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम ! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्कर स्य ॥ अन्न्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्य

मस्तु ॥४॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते ! इहागच्छ इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि ॥

ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्रह्म॑णा॒वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानो॒हवि॒र्भिः॑ ॥ अहे॑डमानोव्वरुणे॒हबो॒ध्युरु॑श॒ꣳसमा॒नऽआयुः॒प्रमो॑षीः ॥५॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण ! इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि ॥

ॐ आनो॑नि॒युद्भिः॑ श॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳस॑ह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहि य॒ज्ञम् ॥ व्वायो॑ऽअ॒स्मिन्त्सव॑नेमादयस्व॒यू॒यम्पा॑तस्व॒स्तिभि॒ः सदा॑नः ॥६॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायो ! इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि ॥

ॐ व्वयꣳसोमव्रतेतवमनंस्तनूषुबिब्भ्रंतꣳ ॥ प्रजावंन्तꣳसचेमहि ॥७॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सोम ! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः, सोममावाहयामि ॥

ॐ तमीशांनुञ्जगंतस्तस्थुषस्प्पतिंन्धियञ्जिन्न्वमवंसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानोयथाव्वेदंसामसंद्वृधेरंक्षितापायुरंदब्धꣳस्वस्तये ॥८॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान ! इहागच्छ इह तिष्ठ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि ॥

ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्व्वतासोवृत्रहत्येभरंहूतौसजोषाꣳ॥ यश्शꣳसंतेस्तुवतेधायिपज्ज्रऽइन्द्रंज्ज्येष्ठाऽअस्माँ२अंवन्तुदेवाः॥

पूर्वेशानयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्म्म सप्रथाः ॥ १० ॥

निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त! इहागच्छ इह तिष्ठ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि॥ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च॥ अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥१॥

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंयज्ञꣳसमिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳ३ प्रतिष्ठ ॥ ११ ॥

ॐ सूर्याद्यनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ सूर्याद्यनन्तान्तदेवताभ्यो नमः, इति मन्त्रेण आसनाद्युपचारैः प्रत्येकं सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ॥ गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥१॥

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयोव्व्यन्तोविप्रायमतिम् ॥ तेषांविशिप्रियाणांवोहमिषमूर्ज्जꣳसमग्ग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टङ्गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥१२॥

इति प्रार्थना ॥ अनया पूजया सूर्याद्यनन्तान्तदेवताः प्रीयन्तान्न मम ॥

अथ रक्षाविधानम्

वामहस्ते श्वेतसर्षपान्, अक्षतान्, पूगीफलं रक्षासूत्रं च गृहीत्वा दक्षिणपाणिनाच्छाद्य

मन्त्रान् पठेत्—ॐगणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥१॥ स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम् । धरणीगर्भसंभूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥२॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् । राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥३॥ शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान् । गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ॥४॥ वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् । व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ॥५॥ विद्याधिका ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः । तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा ॥६॥ इति पठित्वा दिग्रक्षणं कुर्यात् । यथा—पूर्वे रक्षतु गोविन्दः आग्नेय्यां गरुडध्वजः । याम्यां रक्षतु वाराहो नैर्ऋत्यां मधुसूदनः ॥ पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः । उत्तरे श्रीपती रक्षेत् ईशाने तु महेश्वरः । ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु । एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ॥ रक्षाहीनन्तु यत्स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक् । यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ॥ स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु । अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूतले

स्थिताः । ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥ पश्चात् गणेशादिपूजितदेवेभ्यो रक्षासूत्रमर्पयित्वा ब्राह्मणयजमानयोः रक्षाबन्धनं तिलकं च कुर्यात् ।

अथ प्रधानपीठे ब्रह्मादिषट्पञ्चाशत्सर्वतोभद्रमण्डलदेवता-वाहनस्थापनप्रतिष्ठापूजनप्रयोगः ।

यजमानः कृष्णाजिनकुशोत्तरे मृद्वासने पूर्वाभिमुख उपविश्य शिखां बद्ध्वा सव्यदक्षिण-हस्तानामिकयोरेकैकं पवित्रं धृत्वा आचम्य मूलेन प्राणानायम्य हस्ते जलमादाय पूर्वोच्चरितशुभ-पुण्यतिथौ प्रारिप्सितशतचण्डीयागकर्मणि ब्रह्मादिषट्पञ्चाशत्सर्वतोभद्रमण्डलदेवतावाहनस्था-पनप्रतिष्ठापूजनानि करिष्ये ॥

ॐ ब्रह्म्मंजज्ञानम्प्रंथमम्पुरस्त्ताद्विसीमतःसुरुचोवेन

ऽआवहं ॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसं
तश्चविवः ॥१॥ मध्ये कर्णिकायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि
स्थापयामि भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐ वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः
सचेमहि ॥ २ ॥ उत्तरे परिध्यन्तिके वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाह-
यामि स्थापयामि भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे
हूमहेवयम् ॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुर

दँधद्रँ स्वस्त्तये ॥ ३ ॥ ऐशान्याम्—परिध्यन्तः खण्डेन्दौ ॐ भूर्भुव स्वः ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि भो ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवेहवेसुहव ँ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्क्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्त्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ४ ॥ पूर्वे परिध्यन्तः वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि भो इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐत्वन्नोऽअग्ग्नेतवदेवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्चवन्द्य ॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यानिमेष ँ रक्षमाणस्तवव्रते ॥५॥

आग्नेय्यां खण्डेन्दौ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्नि० स्था० भो अग्ने इ० इ० ॥

ॐ समायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमते स्वाहा ॥ स्वाहाघर्म्माय स्वाहाघर्म्मःशपित्रे ॥ ६ ॥ दक्षिणे वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यम-मावाहयामि स्थापयामि भो यम इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐ असुन्न्वन्तमयंजमानामिच्छस्त्तेनस्येत्त्यामन्न्विहि तस्करस्य ॥ अन्न्यमुस्ममदिच्छसातंऽइत्यानमोदेवि निर्ऋतेतुभ्यंमस्त्तु ॥ ७ ॥ नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ—ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि भो निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐ तत्त्वांयामिब्ब्रह्मंणाव्वन्दंमानुस्तदाशांस्त्तेयजंमा-नोहुविर्ब्भिः॥अहैडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुंशꣳसमानुऽआयुः प्प्रमोषीः ॥ ८ ॥ पश्चिमे वाप्याम्-ॐ भू० वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि भो वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ ॥

ॐ आनोंनियुद्भिः शतिनींभिरद्ध्वरꣳसंहस्त्रिणींभि-रुपंयाहियुज्ञम् ॥ व्वायोऽअस्म्मिन्त्सवंनेमादयस्व्वयूयम्पांत स्स्वस्तिभिःसदांनः ॥ ९ ॥ वायव्यां खण्डेन्दौ-ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि भो वायो इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐ सुगावोदेवाः सदना ऽअकर्म्मयऽआजग्मेदꣳसवं
नञ्जुषाणाः ॥ भरमाणावहमानाहवीꣳष्यस्म्मे धत्त
वसवोव्वसूनिस्वाहा ॥१०॥ वायुसोममध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः
अष्टवसूनावाहयामि स्थापयामि भो अष्टवसवः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥

ॐ रुद्राः सꣳसृज्ज्यम्पृथिवीम्बृहज्ज्योतिः समीधिरे ॥
तेषाम्भानुरजस्रऽइच्छुक्रोदेवेषुरोचते ॥ ११ ॥
सोमेशानमध्ये भद्रे——ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रानावाहयामि
स्थापयामि भो एकादश रुद्राः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥

ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्येतिसुम्नमादित्त्यासोभवता मृड-यन्तः ॥ आवोर्व्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्याद६होश्चिद्द्याव्वरिवोवित्तरासंदादित्त्येभ्यस्त्वा ॥ १२ ॥

ईशानपूर्वयोर्मध्ये भद्रे–ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि भो द्वादशादित्याः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥

ॐ याबाङ्कशामधुमत्त्यश्विनासूनृतावती ॥ तया यज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यान्त्वैषते योनिर्म्माद्ध्वीभ्यान्त्वा ॥ १३ ॥ इन्द्राग्निमध्ये भद्रे–ॐ भूर्भुवः स्वः

अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि भो अश्विनौ इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् ॥

ॐ ओमासश्चर्षणीधृतोविश्वेदेवासऽआगत ॥ दाश्वाᳬंसोदाशुषः सुतम् ॥ उपयामगृहीतोसि विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यंऽएषतेयोनिर्विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यः॥ १४ ॥

अग्नियममध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि भो विश्वेदेवाः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥

ॐ आभित्त्यन्देवᳬंसवितारमोण्ण्योः कविक्क्रतुमर्च्चामि सत्त्यसवᳬंरत्नधामाभिप्प्रियम्मतिङ्कविम्॥ ऊर्द्ध्वायस्याम-

दुर्गा-
० प्र०
५६॥

तिर्भाऽअदितिहद्युतत्त्सर्वीमनिहिरंगायपाशिरामिमीतसुकृतुं॑
कृपास्स्वं॑ ॥ प्रजाभ्य॑स्त्वाप्रजास्त्वानुप्राणान्तुप्रजास्त्व
मनुप्राणिहि ॥१५॥ यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे—ॐ भू० सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षानावा०
स्था० भो सप्त० इ० इ० ॥

ॐ भूतायंत्त्वानारांतयेस्वरभिविकख्यैषुन्न्दृꣳहन्तान्दु
र्ग्गाꣳ पृथिव्यामुर्व्वन्तरिक्षमन्न्वैमिपृथिव्यास्त्वानाभौसाद-
याम्म्यदित्याऽउपस्त्थेग्ग्नेहुव्यꣳरक्ष ॥ १६ ॥

निर्ऋतिवरुणमध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः भूतनागेभ्यो नमः भूत० स्था० भो भू० इ० इ० ॥

ॐ ऋताषाड़ृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसोमुदोनाम ॥ सनऽइदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातुतस्मैस्वाहावाट्ताभ्यःस्वाहा ॥ १७ ॥ वरुणवायुमध्ये मद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः गन्धर्वाप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि भो गन्धर्वाप्सरसः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥

ॐ यदक्रन्दःप्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्यम्महिजातन्तेऽअर्वन् ॥ १८ ॥ ब्रह्मसोममध्ये वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि भो स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः ॥१९॥ स्कन्दादुत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दिने नमः नन्दिनमावाहयामि स्थापयामि भो नन्दिन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च । सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥

ॐ उग्रँल्लोहितेन मित्रꣳ सौव्रत्येन रुद्रन्दौर्व्रत्येनेन्द्रम्प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा ॥ भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशु-

पतैंऽपुरीतत् ॥२०॥ नन्द्युत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः शूलमहाकालाभ्यां नमः शूलमहाकालौ आवाहयामि स्थापयामि भो शूलमहाकालौ इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् ॥

ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता सपिता स पुत्रः ॥ विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्त्वम् ॥२१॥ ब्रह्मेशानमध्ये वल्ल्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि भो दक्षादिसप्तगणाः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ २२ ॥

ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गाम् आवाहयामि स्थापयामि भो दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ ।

ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाᳪसुरे स्वाहा ॥२३॥ दुर्गापूर्वे ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि भो विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त

पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ २४ ॥ ब्रह्माग्निमध्ये वल्ल्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि भो स्वधे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐ परम्मृत्त्योऽअनुपरेहि पन्थाँऽयस्तेऽअन्न्यऽइतरोदेवयानात् ॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्रवीमिमानः प्प्रजाꣳरीरिषोमोतवीरान् ॥२५॥ ब्रह्मयमयोर्मध्ये वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगाभ्यां नमः मृत्युरोगावावाहयामि स्थापयामि भो मृत्युरोगौ इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् ॥

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहे प्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वांनिधिपतिꣳहवामहेवसोमम ॥

आहमंजानिगर्भधमात्वमंजासिगर्भधम् ॥ २६ ॥

ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये वल्ल्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि भो गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शँय्योरभिस्रवन्तु नः ॥२७॥ ब्रह्मवरुणमध्ये वाप्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अप आवाहयामि स्थापयामि भो आप इ॰ इह॰ ॥

ॐ मरुतोयस्यहिक्षयेपाथादिवोविमहसः ॥ ससुगोपातमोजनः ॥२८॥ ब्रह्मवायुमध्ये वल्ल्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः मरुतः आवाहयामि स्था॰ भो मरुतः इ॰ इ॰ ॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म्मसप्रथाः ॥२९॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि भो पृथिवि इहा० इह० ॥

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः ॥ सरस्वती तुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित ॥ ३० ॥ तत्रैव ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः-

ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥

ॐ इमम्मेवरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवु-

स्स्युरार्चके ॥३१॥ ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः गङ्गाद्युत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः—सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि भो सप्तसागराः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥

कर्णिकोपरि—ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः मेरुमावाहयामि स्थापयामि भो मेरो इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ३२ ॥

॥ मण्डलबाह्ये श्वेतपरिधौ उत्तरादिक्रमेण गदाद्यष्टायुधदेवतावाहनम् ॥

उत्तरे सोमसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः गदामावाहयामि स्थापयामि भो गदे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥३३॥ ईशान्याम् ईशानसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि भो त्रिशूल इहागच्छ इह तिष्ठ ॥३४॥ पूर्वे इन्द्रसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः वज्रमावाहयामि स्थापयामि भो वज्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ३५ ॥ आग्नेय्याम् अग्निसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः शक्तिमावाहयामि स्थापयामि भो शक्ते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥३६॥ दक्षिणे यमसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः दण्डमावाहयामि स्थापयामि

भो दण्ड इहागच्छ इह तिष्ठ ॥३७॥ नैर्ऋत्याम् निर्ऋतिसमीपे–भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः खड्ग-मावाहयामि स्थापयामि भो खड्ग इहागच्छ इह तिष्ठ ॥३८॥ पश्चिमे वरुणसमीपे–ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः पाशमावाहयामि स्थापयामि भो पाश इहागच्छ इह तिष्ठ ॥३९॥ वायव्याम् वायुसमीपे–ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि भो अङ्कुश इहागच्छ इह तिष्ठ ॥४०॥

॥ मण्डलबाह्ये रक्तपरिधौ उत्तरादिक्रमेण गौतमाद्यष्टदेवतावाहनम् ॥

उत्तरे–ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः गौतममावाहयामि स्थापयामि भो गौतम इहागच्छ इह तिष्ठ ॥४१॥ ईशान्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि भो भरद्वाज इहागच्छ इह तिष्ठ ॥४२॥ पूर्वे–ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रमा-वाहयामि स्थापयामि भो विश्वामित्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ४३ ॥ आग्नेय्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः कश्यपमावाहयामि स्थापयामि भो कश्यप इहागच्छ इह तिष्ठ ॥४४॥ दक्षिणे–ॐ भूर्भुव स्वः जमदग्नये नमः जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि भो जमदग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ

॥ ४५ ॥ नैर्ऋत्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि भो वसिष्ठ इहागच्छ इह तिष्ठ ॥४६॥ पश्चिमे—ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः अत्रिमावाहयामि स्थापयामि भो अत्रे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥४७॥ वायव्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि भो अरुन्धति इहागच्छ इह तिष्ठ ॥४८॥

॥ मण्डलबाह्ये कृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण ऐन्द्राद्यष्टदेवतावाहनम् ॥

पूर्वे—ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि भो ऐन्द्रि इहा० इह तिष्ठ ॥४९॥ आग्नेय्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्यै नमः कौमारीमावाहयामि स्थापयामि भो कौमारि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥५०॥ दक्षिणे—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि भो ब्राह्मि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥५१॥ नैर्ऋत्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि भो वाराहि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥५२॥ पश्चिमे ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि भो चामुण्डे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥५३॥ वायव्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः

वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि भो वैष्णवि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ५४ ॥ उत्तरे--ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि भो माहेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥५५॥ ऐशान्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि भो वैनायकि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ५६॥

प्रतिष्ठापनम्—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टँय्यज्ञँ समिमन्दधातु ॥ व्विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ॥५७॥

ब्रह्माद्यावाहितसर्वतोभद्रमण्डलदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ॥

इति प्रतिष्ठाप्य ब्रह्माद्यावाहितसर्वतोभद्रमण्डलदेवताभ्यो नमः इति षोडशोपचारैः संपूज्य तन्मध्ये यन्त्रस्थापनं पूजनं च कुर्यात् ।

अथ यन्त्रप्रकारः

मध्ये त्रिकोणं तद्बहिः षट्कोणं तद्बाह्ये वृत्तं तद्बाह्येऽष्टौ दलानि तद्बाह्ये चतुर्विंशति-दलानि तद्बाह्ये चतुर्द्वारं (चतुरस्रत्रयमिति) यन्त्रं विलिख्य तत्र सिंहासने शतचण्ड्यां पलसुवर्णेन (सहस्रचण्ड्यां पञ्चपलेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वाष्टादशभुजां अष्टभुजां वा सिंहारूढां पूर्वोक्त-ध्यानयुतां देवीमूर्तिं कारयित्वा अग्न्युत्तारणपूर्वकं संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पूजयेत्। (प्राणप्रतिष्ठाविधिः पुस्तकेऽस्मिन्नेवाग्रे द्रष्टव्यः)।

अथ पूजनप्रकारः। स्ववामे कर्पूरादियुतगङ्गाजलपूर्णं कलशं निधाय संपूज्य 'कलशस्य मुखे विष्णुः' इत्यादि पठित्वा कलशमुद्रां प्रदर्श्य नवरात्रोक्तविधानवत् मूलेन श्रीसूक्तेन वा आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः भगवतीं संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात्॥

अथावरणपूजा। पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्रदक्षिणक्रमेण पूजयेत्। तद्यथा—त्रिकोणमध्ये मूलमन्त्रेण देवीं गंधादिभिः संपूज्य, त्रिकोणस्य पूर्वकोणे—ॐ सरस्वतीसहिताय

ब्रह्मणे नमः ॥१॥ नैर्ऋत्यां–ॐ श्रीसहिताय विष्णवे नमः ॥२॥ वायव्याम्–ॐ उमासहिताय शिवाय नमः ॥ ३ ॥ उत्तरे–ॐ सिंहाय नमः ॥ ४ ॥ दक्षिणे–ॐ महिषाय नमः ॥ ५ ॥ इति त्रिकोणदेवताः पूजयेत् (षट्कोणमण्डले) पूर्वादिषट्कोणे वामक्रमेण–ॐ नं नन्दजायै नमः॥१॥ ॐ रं रक्तदन्तिकायै नमः ॥ २ ॥ ॐ शां शाकम्भर्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ भीं भीमायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः ॥ ६ ॥ अष्टदले वामक्रमेण–ॐ ब्रां ब्राह्म्यै नमः ॥१॥ ॐ मां माहेश्वर्यै नमः ॥२॥ ॐ कौं कौमार्यै नमः ॥३॥ ॐ वैं वैष्णव्यै नमः ॥४॥ ॐ वां वाराह्यै नमः ॥५॥ ॐनां नारसिंह्यै नमः ॥६॥ ऐं ऐन्द्र्यै नमः ॥७॥ ॐ चां चामुण्डायै नमः ॥ ८ ॥ ततश्चतुर्विंशतिदलेष्वपि तेनैव क्रमेण–ॐ विं विष्णुमायायै नमः ॥ १ ॥ ॐ चें चेतनायै नमः॥२॥ ॐ बुं बुद्ध्यै नमः॥३॥ ॐ नि निद्रायै नमः॥४॥ ॐ क्षुं क्षुधायै नमः॥५॥ ॐ छां छायायै नमः॥६॥ ॐ शं शक्त्यै नमः ॥७॥ ॐ तृं तृष्णायै नमः॥८॥ ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः ॥९॥ ॐ जां जात्यै नमः॥१०॥ ॐ लं लज्जायै नमः॥११॥ ॐ शां शान्त्यै नमः॥१२॥

ॐ श्रं श्रद्धायै नमः ॥१३॥ ॐ कां कान्त्यै नमः ॥ १४ ॥ ॐ लं लक्ष्म्यै नमः ॥१५॥ ॐ धृं धृत्यै नमः॥१६॥ ॐ वृं वृत्त्यै नमः॥१७॥ ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः ॥१८॥ ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः ॥१९॥ ॐ तुं तुष्ट्यै नमः ॥२०॥ ॐ पुं पुष्ट्यै नमः ॥२१॥ ॐ दं दयायै नमः ॥ २२ ॥ ॐ मां मात्रे नमः ॥ २३ ॥ ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः ॥ २४ ॥ ततो बहिर्भूगृहचतुष्कोणेषु । ईशान्याम्–ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ आग्नेय्याम्–ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ २ ॥ नैर्ऋत्याम्–ॐ बं बटुकाय नमः ॥३॥ वायव्याम्–ॐ यों योगिनीभ्यो नमः ॥ ४ ॥ पुनः पूर्वादिषु प्रदक्षिणक्रमेण–ॐ लं इन्द्राय नमः ॥१॥ ॐ रं अग्नये नमः ॥२॥ ॐ मं यमाय नमः ॥३॥ ॐ क्षं निर्ऋतये ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः ॥५॥ ॐ यं वायवे नमः ॥६॥ ॐ सों सोमाय नमः ॥७॥ ॐ हं रुद्राय नमः ॥८॥ ऊर्ध्वं ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ॥९॥ अधः–ॐ अं अनन्ताय नमः इति पूजयेत्। तद्बाह्ये–ॐ वज्राय नमः ॥१॥ शक्तये नमः ॥२॥ दण्डाय नमः ॥३॥ खड्गाय नमः ॥४॥ पाशाय नमः ॥५॥ अङ्कुशाय नमः ॥६॥ गदायै नमः ॥७॥ त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ पद्माय नमः ॥ ९ ॥

चक्राय नमः ॥१०॥ इत्यायुधानि च पूजयेत्। एवमावरणपूजां कृत्वा देव्यै हरिद्राकुंकुमसिन्दूर-रक्तचन्दनालक्तकपरिमलद्रव्याणि समर्पयेत् ॥

अथाङ्गपूजा। ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि ॥ ॐ गिरिजायै नमः गुल्फौ पूजयामि ॥ ॐ अपर्णायै नमः जानुनो पूजयामि ॥ ॐ हरिप्रियायै नमः ऊरू० ॥ ॐ पार्वत्यै० कटिं पू० ॥ ॐ आर्यायै नमः नाभिं० ॥ ॐ जगन्मात्रे० उदरं० ॥ ॐ मङ्गलायै० कुक्षिं० ॥ ॐ शिवायै० हृदयं० ॥ ॐ माहेश्वर्यै कण्ठं० ॥ विश्ववन्द्यायै० स्कन्धौ० ॥ ॐ काल्यै० बाहू० ॥ ॐ आद्यायै० हस्तौ० ॥ ॐवरदायै० मुखं० ॥ ॐसुवाण्यै० नासिकां० ॥ ॐकमलाक्ष्यै० नेत्रे० ॥ ॐ अम्बिकायै० शिरः० ॥ ॐ देव्यैनमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥ इत्यंगपूजां कृत्वा ततः पूर्वोक्तमन्त्र-धूपदीपनानाविधनैवेद्यताम्बूलपूगीफलदक्षिणादिमन्त्रपुष्पान्तपूजां कृत्वा राजोपचारान् निवेद्य शतवर्तिकाभिर्दशभिर्वा कर्पूरगर्भिताभिर्महानीराजनं प्रदक्षिणामेकां नमस्कारांश्च कृत्वा 'नमो देव्यै महादेव्यै' इत्यादिमन्त्रैः स्तुतिं कृत्वा यथासम्भवं छत्रचामरव्यजनघण्टागीतनृत्यवाद्यादि समर्प्य कूष्माण्डनारिकेलकदलीफलेक्षुदण्डादिबलिं दत्त्वा अखण्डदीपकं प्रतिष्ठापयेत् ॥

❀ श्रीदुर्गापूजनम् ❀

पूर्वं शुद्धस्थले सर्वतोभद्रमण्डलं विधाय चतुर्विंशतिदलाकारं षड्दलाकारं यन्त्रं विलिख्य तत्र ब्रह्मादिमण्डलदेवता आवाह्य सम्पूज्य यन्त्रोपरि पूर्वोक्तविधिना प्रधानकलशं संस्थाप्य कलशे वरुणं सम्पूज्य तन्मूले—मूलाधाराय नमः मूलाधारमावाहयामि पूजयामि। एवं सर्वत्र। तदुपरि—कूर्माय नमः कूर्ममा० स्था०। तदुपरि—शेषाय नमः शेषमा० स्था०। तदुपरि—पृथिव्यै नमः पृथिवीमा० स्था०। पूर्णपात्राय नमः। पूर्वे—ॐ कारपीठाय नमः। निर्ऋतिभागे—पूर्णगिरिपीठाय नमः। वायुकोणे—कामगिरिपीठाय नमः। एवं आवाहनं पूजनं कृत्वा तदुपरि दुर्गां संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। तत्रादौ 'ॐ ऐं हृदयाय नमः' इत्यादिना मूलषडङ्गन्यासं विधाय (संक्षेपसंकल्पः)—अद्येत्यादि अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्म्माहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं अनन्ताव्यवच्छिन्नशाश्वतलक्ष्मीप्राप्तिद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थं च पूजनं करिष्ये।

अथ ध्यानम् । खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥ शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिनयनामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥ इति ध्यानम् । आवाहनम्—

ॐ मन॑सुः कामुमाकू॑तिं वाचः सुत्यम॑शीय ॥ पुशूना॑ᳪ रूपमन्न॑स्युरसोयशुः श्रीः श्र॑यतां माय स्वाहा॑ ॥१॥

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केम्बा॑लि॒के न मा॑नयति॒ कश्च॒न ॥ ससं॑स्त्य-

श्वकःसुभांझ्रिकाङ्क्षाम्पीलवासिनीम् ॥२॥ ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मी
श्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥
इष्णन्निषाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वलोकम्मंऽइषाण ॥ ३ ॥ ॐ
देवीस्तिस्रस्तिस्रोदेवीःपतिमिन्द्रमवर्द्धयन् ॥ अस्पृक्षद्भा-
रतीदिवꣳरुद्रैर्य्यज्ञꣳसरस्वतीडावसुमतीगृहान्वसुवनेवसु-
धेयस्यव्यन्तुयज ॥४॥ ॐ हिरण्यवर्णांहरिणींसुवर्णरजत-
स्रजाम् ॥ चन्द्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोममावह ॥५॥

ॐ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदनि ॥ पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये ॥ १ ॥ सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्वितम् ॥ इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवि गणैः सह ॥ २ ॥ दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ॥ बलिं पूजां गृहाण त्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ ३ ॥ शङ्खचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे शुभासने ॥ मम देवि वरं देहि सर्वैश्वर्यप्रदायिनि ॥ ४ ॥ एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा ॥ आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ५ ॥ अस्यां मूर्तौ समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे विश्वेश्वरि नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि ॥

अथ प्राणप्रतिष्ठा ॥ हृदि हस्तं दत्त्वा—ॐ आंह्रींक्रों मम प्राणा इह प्राणाः । ॐ आंह्रींक्रों मम जीव इह स्थितः । ॐ आंह्रींक्रों मम सर्वेन्द्रियाणि । ॐ आंह्रींक्रों मम वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

ॐ असुंनीतेपुनंरस्मासुचक्षुश्पुनंःप्राणमिहनोंधेहिभो-

गंम् ॥ ज्योक्पंश्येमसूर्यंमुच्चरंन्तमनुंमतेमृडयानंः स्वस्ति ॥

मम गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारसिद्ध्यर्थं पञ्चदशप्रणवावृत्तीः करिष्ये । रक्ताम्भोधिस्थ-पोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान् ॥ बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥ सुप्रतिष्ठितम् । ततो मातृकान्यासो यथा—अञ्जलिं बद्ध्वा—अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं, इति मातृकाबीजान्यञ्जलिगतानि विभाव्य मूर्धादिपादान्तं त्रिवारं प्रक्षिपेत् ॥

ॐ मनोज्जूतिर्जुषतामिति, ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, इति च मन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठापनम् ॥ आसनम्—

ॐ वृषमोंऽस्मिसमानानामुद्यतामिवसूर्य्यः ॥ इमन्तम-

भितिष्ठामियोमाकश्चाभिदासति ॥ १ ॥ ॐ तांम्ऽआवह-
जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यांहिरण्यंविन्देयं
गामश्वंपुरुषानहम् ॥२॥ अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् । कार्त्तस्वरमयं
दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः,
आसनं समर्पयामि ॥ पाद्यम्—

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायांश्चपूरुषः ॥ पादो-
स्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥१॥ ॐ अश्वपूर्वां-
रथमध्यांहस्तिनादप्रमोदिनीम् ॥ श्रियंदेवीमुपह्वयेश्रीर्मादे-

वीर्जुषताम् ॥ २ ॥ गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् । तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि ॥ अर्घ्यम्—

ॐ धामंन्तेविश्श्वम्भुवंनुमाधिंश्श्रितमुन्तःसमुंद्रेहृद्द्य न्तरा-युषि ॥ अपामनीकेसामिथेयऽआभृंतुस्तमंश्यामुमधुंमन्त-न्तऽऊर्म्मिमम् ॥१॥

ॐ कांसोस्मितांहिरंण्यप्राकारांमार्द्रांज्वलंन्तींतृप्तांतर्प-यंन्तीम् ॥ पुद्मेस्थितांपुद्मवंर्णांतामिहोपंह्वयेश्रियंम् ॥ २ ॥

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं संपादितं मया। गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि॥ आचमनीयम्—

ॐ इमम्मेवरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय॥ त्वामवस्युराचके॥ १॥ ॐ चन्द्राम्प्रभासाँयशसाज्वलन्तीं श्रियँलोके देवजुष्टामुदाराम्॥ तांपद्मिनीमीं शरणमहम्प्रपद्येअलक्ष्मीर्मे नश्यतांत्वांवृणोमि॥ २॥ आचम्यतां त्वया देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु। ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, आचमनीयं समर्पयामि॥ स्नानम्—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँ-

श्रीश्चंकेव्वायुषयानाराण्यायाग्रम्याश्रीयसे ॥१॥ आदित्यवर्णेतप-
सोऽधिजातोवनस्पतिस्तववृक्षोऽथबिल्वः ॥ तस्यफलानि-
तपसानुदन्तुमायान्तरायाश्चबाह्याऽअलक्ष्मीः ॥ २ ॥

जाह्नवीतोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम्। स्नापयामि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादिफलप्रदाम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, स्नानं समर्पयामि ॥ पञ्चामृतस्नानम्—

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः ॥ सरस्वती-
तुपञ्चधासोदेशेऽभवत्सरित् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-
महासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥ पयःस्नानम्—

ॐ पय॑÷पृथि॒व्याम्पय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑-
धाः॑पय॑स्वतीः॒प्र॒दिश॑÷सन्तु॒मह्य॑म् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, पयःस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ दधिस्नानम्—

ॐ द॒धि॒क्राव्णो॑ऽअकारिषञ्जि॒ष्णोरश्व॑स्यवा॒जिन॑÷ ॥
सु॒र॒भिनो॒मुखा॑कर॒त्प्रण॒ऽआयू॑ᳬषितारिषत् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, दधिस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ घृतस्नानम्—

ॐ घृ॒तङ्घृ॒तपावानः॑पिबतव॒सां॑वसापावानः॒पिबता॒न्तरि॑क्ष

स्यहविरंसिस्वाहा ॥ दिशःप्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दि-
शोदिग्भ्यःस्वाहा ॥१॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, घृतस्नानं सम० ॥
शुद्धोदकस्नानं सम० ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ मधुस्नानम्—

ॐमधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्नः
सन्त्वोषधीः ॥१॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः ॥
मधुद्यौरस्तुनःपिता ॥२॥ मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाꣳअ-
स्तुसूर्यः ॥ माध्वीर्गावोभवन्तुनः ॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, मधुस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ शर्करास्नानम्—

ॐ अपाᳬंरसमुद्द्वयसᳬंसूर्य्येसन्तᳬंसमाहितम् ॥ अपाᳬं रसस्ययोरसस्तंवोगृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ गन्धोदकस्नानम्—

ॐ गन्धर्व्वस्त्वाविश्वावसुᳬंपरिदधातुविश्वस्यारिष्टयैयजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ उद्वर्तनस्नानम्—

ॐ अꣳशुनाते ऽअꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः ॥ गन्धस्ते-सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ पञ्चामृतादिस्नानांगपूजा—ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, वस्त्रोपवस्त्रार्थे अक्षतान् समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतार्थे अक्षतान् समर्पयामि ॥ गन्धं समर्पयामि ॥ अक्षतान् समर्पयामि ॥ नानापरिमलसौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि ॥ यथाऋतुकालोद्भवपुष्पाणि समर्पयामि ॥ धूपमाघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यम्—ॐ प्राणाय स्वाहा ॥ ॐ अपानाय स्वाहा ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा ॥ ॐ समानाय

स्वाहा ॥ ॐ उदानाय स्वाहा ॥ नैवेद्यं समर्पयामि ॥ नैवेद्यान्ते हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनं च समर्पयामि ॥ करोद्वर्त्तनार्थं चन्दनं समर्पयामि ॥ मुखवासार्थं पूगीफलं ताम्बूलं च समर्पयामि ॥ दक्षिणां समर्पयामि ॥ कर्पूरार्तिक्यं दर्शयामि ॥ प्रदक्षिणां करोमि ॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिसमर्पणं करोमि ॥ प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि ॥ अनेन यथाशक्त्या ध्यानादिस्नानांगपूर्वाराधनेन श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्तां न मम ॥ अथ अभिषेकस्नानम्—श्रीवेदपुरुषाय नमः ॥

ॐ हिरंण्यवर्णांहरिंणींसुवर्णरंजतस्रजाम् ॥ चन्द्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातंवेदोमृमावंह ॥ १ ॥ ॐ ताम्मऽआवंहजातवेदोलक्ष्मीमनंपगामिनीम् ॥ यस्यांहिरंण्यंविन्देयंगामश्वंपुरुंषानहम् ॥ २ ॥ ॐ अश्वपूर्वांरंथमध्यांहस्तिनांदप्रमोदिनीम् ॥ श्रियंदेवीमुपंह्वयेश्रीर्मांदेवीजुंषताम् ॥ ३ ॥ ॐ कांसोस्मितांहिरंण्यप्राकारांमार्द्रांज्वलंन्तींतृप्तांतर्पयंन्तीम् ॥ पद्मेस्थितांपद्मवंर्णांतामिहोपंह्वयेश्रियंम् ॥४॥ ॐ

चन्द्रांप्रभासांयशसाज्वलन्तींश्रियंलोकेदेवजुष्टामुदाराम् ॥ तांपद्मिनीमींशरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्म्मेनश्यतांत्वावृणोमि ॥ ५ ॥ ॐ आदित्यवर्णेतपसोऽधिजातोवनस्पतिस्तववृक्षोऽथबिल्वः ॥ तस्यफलानितपसानुदन्तुमायान्तरायाश्चबाह्याऽअलक्ष्मीः ॥ ६ ॥ ॐ उपैतुमांदेवसखःकीर्तिश्चमणिनासह ॥ प्रादुर्भूतोसुराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिंवृद्धिंददातुमे ॥ ७ ॥ ॐ क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसंमृद्धिंचसर्वांनिर्णुदमेगृहात् ॥ ८ ॥ ॐ गन्धद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ ९ ॥ ॐ मनसःकाममाकूतिंवाचःसत्यमशीमहि ॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्यमयिश्रीःश्रयतांयशः ॥ १० ॥ ॐ कर्द्दमेनप्रजाभूतामयिसम्भ्रमकर्द्दम ॥ श्रियंवासयमेकुलेमातरंपद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥ ॐ आपःस्रजन्तुस्निग्धानिचिक्लीतवसमेगृहे ॥ निचदेवींमातरंश्रियंवासयमेकुले ॥ १२ ॥

ॐ आर्द्रांपुष्करिणींपुष्टिंसुवर्णांहेममालिनीम् ॥ सूर्य्यांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदो
ममावह ॥ १३ ॥ ॐ आर्द्रांयःकरिणींयष्टिंपिङ्गलांपद्ममालिनीम् ॥ चन्द्रांहिरण्मयीं
लक्ष्मींजातवेदोमआवह ॥१४॥ ॐ तांमऽआवहजातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥
यस्यांहिरण्यंप्रभूतिंगावोदास्योश्वान्विन्देयंपुरुषानहम् ॥ १५ ॥ ॐ यःशुचिः
प्रयतोभूत्वाजुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तंपञ्चदशर्चञ्चश्रीकामःसततंजपेत् ॥ १६ ॥

ॐ द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिःपृथिवीशान्तिरापःशान्तिरोषधयःशान्तिः ॥
वनस्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्रह्मशान्तिःसर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः
सामाशान्तिरेधि ॥१७॥ यतोयतःसमीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नःकुरुप्रजा-
भ्योऽभयन्नःपशुभ्यः ॥ १८ ॥ ॐ सर्वेषांवाऽएषवेदानाꣳरसोयत्सामसर्वेषामे-
वैनमेतद्वेदानाꣳरसेनाभिषिञ्चति ॥ १९ ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु ॥ सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥ अमृताभिषेकोऽस्तु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, अभिषेकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानम्—

ॐ शुद्धवालꣳसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाꣳश्येतः श्येताक्षोरुणास्ते-रुद्रायपशुपतयेकर्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाꣳपार्ज्जन्न्याꣳ ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ वस्त्रम्—

ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः ॥ वासोऽअग्नेविश्वरूपꣳ संव्ययस्वविभावसो ॥ १ ॥ ॐ उपैतुमान्देव० ॥ २ ॥

वस्त्रम्—वस्त्रं च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम् । मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, वस्त्रं (वस्त्राभावे रक्तसूत्रं, रक्तसूत्राभावे अक्षतान्) समर्पयामि ॥ कञ्चुकीं वस्त्रञ्च—

ॐ क्षुत्पिपासामलां० ॥ १ ॥

उपवस्त्रम्—ॐ यामाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा। तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम्॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, कञ्चुकीं वस्त्रञ्च (तदभावे अक्षतान्) समर्पयामि ॥ तदन्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ मधुपर्कम्—दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम्। मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने ॥ यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री० देवीभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं स० ॥ गन्धं—

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्प्पतिः ॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत ॥ १ ॥ ॐ गन्धद्वारां० ॥ २ ॥

गन्धं—कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसंभवम्। कुङ्कुमेनार्चितं देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि ॥ अक्षतान्—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत ॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि ॥ आभूषणम्—हारकङ्कणकेयूरमेखलाकुण्डलादिभिः। रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ आभूषणं समर्पयामि ॥ पुष्पम्—

ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ॥ अश्वाऽइवसजित्त्वरी-
र्व्वीरुधः पारयिष्ण्वः ॥ १ ॥ ॐ समंक्रन्ये देव्व्याधियासन्ददक्षिणायोरुचक्षसा ॥
मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहन्तवव्वीरंव्विदेयतवदेविसन्दृशि ॥२॥ ॐ मनस० ॥३॥

पुष्पाणि—मन्दारपारिजातादिपाटलीकेतकानि च । जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, पुष्पाणि समर्पयामि ॥ बिल्वपत्रम्—अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवि ! प्रियः सदा । बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥ बिल्वपत्रं स० ॥ दूर्वांकुरान्—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ इति दूर्वांकुरान् समर्पयामि । सौभाग्यद्रव्याणि—

ॐ अहिंरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुञ्ज्यायाहेतिम्परिबाधमानः ॥ हस्तग्घ्नोव्विश्वा-
व्वयुनानिव्विद्द्वान्पुमान्पुमांसम्परिपातुव्विश्वतः ॥ १ ॥

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् । नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वरि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि ॥ कज्जलम्—देवि देवि महादेवि सुभगे शान्ततारके । अक्षिभ्यां कज्जलं दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥ कज्जलं स० ॥ सिन्दूरम्—सिन्दूरं श्रीमतं देवि सर्वमांग-

ल्यदायकम् । सर्वरत्नाधिकं दिव्यं सिन्दूरमुररीकुरु ॥ सिन्दूरं स० ॥ सुगन्धिद्रव्यम्—जननि चम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः । सुरभिगन्धमिदं च चतुःसमं सपदि सर्वमिदं परिगृह्यताम् ॥ सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि ॥

❀ अथावरणपूजा ❀

आवरणदेवता आवाह्य सम्पूजयेत् । 'पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची दिक् सम्प्रकीर्तिता ।' इति वचनमनुसृत्य प्रागादिदिशो ग्राह्याः । इन्द्रादिलोकपालतदायुधविषये तु सूर्योदयिकैवेति ज्ञेयम् । तत्र यन्त्रषट्कोणस्थपश्चिमकोणे महालक्ष्मीपृष्ठभागे—सरस्वतीब्रह्मभ्यां नमः, सरस्वतीब्रह्माणावावाहयामीत्येवं सर्वत्रावाहने वाच्यम् ॥ १ ॥ एवं नैर्ऋत्य-कोणे-गौरीरुद्राभ्यां० २ । वायुकोणे—लक्ष्मीहृषीकेशाभ्यां० ३ । पूर्वकोणे—अष्टादशभुजायै० ४ । अग्निकोणे—दशाननायै० ५ । ईशानकोणे—अष्टभुजायै० ६ । ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ अनेन प्रथमावरणार्चनेन भगवतीश्रीमहा० ३ प्रीयन्ताम् ॥ १ ॥ पुनः षट्कोणेषु प्रागादिषु-ॐनं नन्दजायै० १ । ॐ रं रक्तदन्तिकायै० २ । ॐ शां शाकम्भर्यै० ३ । ॐ दुं दुर्गायै० ४ । ॐ भीं भीमायै० ५ । ॐ भ्रां भ्रामर्यै० ६ । ॐ दयाब्धे त्राहि० द्वितीयावरणार्चनम् ॥ अनेन द्वितीयावरणार्चनेन भगवतीश्रीमहा० प्रीयन्ताम् ॥ २ ॥ षट्कोणाद्बहि-राग्नेयादिचतुर्भागेषु—ॐ जं जयायै० १ । ॐ विं विजयायै० २ । ॐ जं जयन्त्यै० ३ । ॐ अं अपराजितायै० ४ । षट्कोणपार्श्वयोः दक्षिणभागे—ॐ सिंहाय० ५ । उत्तरभागे-ॐ महिषाय० ६ । ॐ दयाब्धे० तृतीयावरणार्चनम् ॥

तृतीयावरणार्चनेन भगवतीश्रीमहा० प्रीयन्ताम् ॥ ३ ॥ अष्टपत्रेषु प्रागादिषु—ॐ ब्रां ब्राह्मयै० १ । ॐ मां माहेश्वर्यै० २ । ॐ कौं कौमार्यै० ३ । ॐ वैं वैष्णव्यै० ४ । ॐ वां वाराह्यै० ५ । ॐ नां नारसिंह्यै० ६ । ॐ ऐं ऐन्द्र्यै० ७ । ॐ शिं शिवदूत्यै नमः० ८ ॥ ॐ चां चामुण्डायै० ९ । ॐ दयाब्धे० चतुर्थावरणार्चनम् ॥ अनेन चतुर्थावरणार्चनेन भगवती-श्रीमहा० प्रीयन्ताम् ॥ ४ ॥ पुनरष्टदलेषु प्रागादिषु—ॐ अं असितांगभैरवाय० । ॐ रुं रुरुभैरवाय० २ । ॐ चं चण्ड-भैरवाय० ३ । ॐ क्रों क्रोधभैरवाय० ४ । ॐ उं उन्मत्तभैरवाय० ५ । ॐ कं कपालभैरवाय० ६ । ॐ भीं भीषणभैरवाय० ७ । ॐ सं संहारभैरवाय० ८ । ॐ दयाब्धे० पञ्चमावरणार्चनम् ॥ अनेन पञ्चमावरणार्चनेन भगवतीश्रीमहा० प्रीयन्ताम् ॥ ५ ॥ चतुर्विंशतिदलेषु प्रागादिक्रमेण—ॐ विष्णुमायायै० १ । ॐ चेतनायै० २ । एवं प्रणवः सर्वत्रादौ प्रयोक्तव्यः ॥ बुद्ध्यै० ३ । निद्रायै० ४ । क्षुधायै० ५ । छायायै० ६ । शक्त्यै० ७ । तृष्णायै० ८ । क्षान्त्यै० ९ जात्यै० १० । लज्जायै० ११ । शान्त्यै० १२ । श्रद्धायै० १३ । कान्त्यै० १४ । लक्ष्म्यै० १५ । धृत्यै० १६ । वृत्त्यै० १७ । स्मृत्यै० १८ । दयायै० १९ । तुष्ट्यै० २० । पुष्ट्यै० २१ । मात्रे० २२ । भ्रान्त्यै० २३ । चित्यै० २४ । ॐ दयाब्धे० षष्ठाख्यावरणार्चनम् ॥ अनेनं षष्ठाख्यावरणार्चनेन भगवतीश्रीमहा० प्रीयन्ताम् ॥ ६ ॥ भूगृहरव्युदयप्रागादिषु—ॐ लं इन्द्राय० १ । रं अग्नये० २ । मं यमाय न० ३ । क्षां निर्ऋतये० ४ । वं वरुणाय० ५ । यं वायवे० ६ । सं सोमाय० ७ । हं रुद्राय० ८ । ईशानीप्रागन्तराले—ॐ आं ब्रह्मणे० ९ । वरुणनिर्ऋत्यन्तराले—ह्रीं शेषाय० १० । ॐ दयाब्धे० सप्तमावरणार्चनम् ॥ अनेन सप्तमावरणार्चनेन भगवतीश्रीमहा० प्रीयन्ताम् ॥ ७ ॥ पुनस्तेनैव क्रमेण—वं वज्राय० १ । शं शक्त्यै० २ । दं दण्डाय० ३ । खं खड्गाय०

४। पां पाशाय० ५। अं अंकुशाय० ६। गं गदायै० ७। त्रिं त्रिशूलाय० ८। पं पद्माय० ९। चं चक्राय० १० ॐ दयाब्धे० अष्टमावरणार्चनम् ॥ अनेन अष्टमावरणार्चनेन भगवतीश्रीमहा० प्रीयन्ताम् ॥ ८ ॥ भूगृहाद्बहिः प्रागादि-दिक्षु—ॐ गं गणपतये० १। क्षें क्षेत्रपालाय० २। वं बटुकाय० ३। यों योगिनीभ्यो नमः ४। ॐ दयाब्धे० नवमावरणार्चनम् ॥ अनेन नवमावरणार्चनेन भगवतीश्रीमहा० प्रीयन्ताम् ॥ ९ ॥ ॐ आवरणदेवताभ्यो नमः, चन्दनं समर्पयामि। इत्यादि-पञ्चोपचारपूजा ॥ (देव्याः दक्षिणे कालाय नमः। रुद्राय नमः। देव्याः वामे मृत्यवे नमः। विनायकाय नमः) ॥

❋ अथाङ्गपूजा ❋

ॐ दुर्गायै नमः, पादौ पूजयामि ॥ ॐ महाकाल्यै नमः, गुल्फौ पूजयामि ॥ ॐ मंगलायै नमः, जानुनी पूजयामि ॥ ॐ कात्यायन्यै नमः, ऊरू पू० ॥ ॐ भद्रकाल्यै नमः, कटिं पू० ॥ ॐ कमलायै नमः, नाभिं पूज० ॥ ॐ शिवायै नमः, उदरं पू०॥ ॐ क्षमायै नमः, हृदयं पूज० ॥ ॐ स्कन्दाय नमः, कण्ठं पूज० ॥ ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः, नेत्रे पूज० ॥ ॐ उमायै नमः, शिरः पूज० ॥ ॐ विन्ध्यवासिन्यै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि ॥ ॐ देव्याः दक्षिणे—सिंहं पूजयामि ॥ वामे—महिषं पूजयामि ॥ इत्यङ्गपूजां कृत्वा धूपम्—

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः ॥ देवानामसि वह्नितमᳪं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥ १ ॥ ॐ कर्दमेन प्रजा॰ ॥ २ ॥

धूपम्—दशांगगुग्गुलं धूपं चन्दनागरुसंयुतम् । समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि ॥ दीपम्—

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिष्मान्रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान् ॥ सहस्रदा असि सहस्राय त्वा ॥ १ ॥ ॐ आपः स्रजन्तु ॥ २ ॥

दीपम्—घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम् । दीपं दास्यामि देवेशि ! सुप्रीता भव सर्वदा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यम्—

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ॥ प्रप्रदातारन्तारिष ऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ १ ॥ ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं॰ ॥ २ ॥

नैवेद्यम्—अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् । नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥ ॐ प्राणाय

स्वाहा ॥ ॐ अपानाय स्वाहा ॥ ॐ उदानाय स्वाहा ॥ ॐ समानाय स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, नैवेद्यं समर्पयामि ॥ पूर्वापोशनं समर्पयामि ॥ नैवेद्यमध्ये पानीयम्—एलोशीरलवङ्गादिकर्पूर-परिवासितम् । प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वरि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, मध्ये पानीयं समर्पयामि ॥ उत्तरापोशनं समर्पयामि ॥ हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि ॥ मुखप्रक्षालनं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि ॥ मुखवासार्थे ताम्बूलम्—

ॐ उतस्म्मास्यद्द्रवतस्तुरण्यतᳪपर्ण्णन्नवेरनुवातिप्प्रगर्द्धिनः॥ श्येनस्येवद्ध्रजतोऽअङ्कसम्परिंदधिक्क्राव्णः सहोर्ज्जातरित्रतᳪस्वाहा॥१॥ ॐ आर्द्रीयः करिणीं०॥२॥

ताम्बूलम्—एलालवंगकस्तूरीकर्पूरैः पुष्पवासिताम् । वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, ताम्बूलं समर्पयामि ॥ फलम्—

ॐ याᳪफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वᳪहसः ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, फलं समर्पयामि ॥ दक्षिणा—

ॐ अद्दृत्तंय्यत्परादानंय्यत्पूर्त्तंय्याश्चदार्दिणाः ॥ तदग्निवैंश्वकर्म्मणः स्वर्द्देवेषुनोदधत् ॥ १ ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, पुष्पदक्षिणां समर्पयामि ॥ कर्पूरार्तिक्यम्—ज्वालामालिन्यै नमः, गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्प्रायिधामभिः ॥ दिवः सदाꣳसिबृहतीविर्तिष्ठस ऽआत्वेषंवर्त्ततेतमः ॥ १ ॥

॥ दुर्गाजी की आर्ती ॥

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी ॥ मैया जय मङ्गलकरणी मैया जय आनन्द करणी ॥ तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री । जय० ॥ १ ॥ मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को ॥ मैया टीको० ॥ उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको ॥ जय अम्बे० ॥ २ ॥ कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ॥ मैया रक्ता० ॥ रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥ जय अम्बे० ॥ ३ ॥ केहरि वाहन राजत, खड्गखप्पर धारी ॥ मैया खड्ग ख० ॥ सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःखहारी ॥ जय अम्बे० ॥ ४ ॥ कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ॥ मैया नासा० ॥

कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती ॥ जय अम्बे० ॥ ५ ॥ शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ॥ मया महिषा० ॥ धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥ जय अम्बे० ॥ ६ ॥ चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे ॥ माई शोणित० ॥ मधु कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे ॥ जय अम्बे० ॥ ७ ॥ ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ॥ माई तुम कमला० ॥ आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे० ॥ ८ ॥ चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों ॥ मैया नृत्य० ॥ बाजत ताल मृदंगा, और बाजे डमरू ॥ जय अम्बे० ॥ ९ ॥ तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता ॥ माई तुम० ॥ भक्तन की दुःख हरता सुख संपति करता ॥ जय अम्बे० ॥ १० ॥ भुजा चार अति शोभित, वर अभय धारी ॥ मैया वर० ॥ मन वाञ्छित फल पावत, सेवत नर नारी ॥ जय अम्बे० ॥ ११ ॥ कञ्चन थाल विराजत अगर कपुर बाती ॥ माई अग० ॥ श्रीमालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योती ॥ जय अम्बे० ॥ १२ ॥ अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावै ॥ मैया जो० ॥ कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥ जय अम्बे गौरी ॥ १३ ॥ इति ॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् । आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदा भव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, कर्पूरार्तिक्यं दर्शयामि ॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिः—

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानःसचन्तयत्रपूर्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः ॥१॥ ॐ राजाधिराजायप्रसह्यसाहिने ॥

नमोवयंवैश्रवणायकुर्महे ॥ समेकामान्कामकामायमह्यम्॥ कामेश्वरोवैश्रवणोददातु ॥
कुबेरायवैश्रवणाय ॥ महाराजायनमः ॥ २ ॥

ॐ स्वस्ति॥ साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् ॥ पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे ॥ आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद—

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः ॥१॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके नमानयतिकश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥२॥ॐश्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णान्निषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण ॥३॥ ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित् ॥ ४ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । प्रदक्षिणा—

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥ १ ॥ ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ २ ॥

प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥ १ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥

विशेषार्घ्यम्—अर्घ्यपात्रे जलं प्रपूर्य गन्धाक्षतपुष्पहिरण्यसहितं नारिकेलं पूगीफलं—वा धृत्वा—रक्ष रक्ष महादेवि रक्ष त्रैलोक्यरक्षिके । भक्तानामभयं कर्त्री त्राहि देवि भवार्णवात् ॥ वरदे त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थदे । अनेन सफलार्घ्येण फलदास्तु सदा मम ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि । राजोपचारः—छत्रं च चामरं चैव व्यजनं दर्पणं तथा । पादुकादि च सर्वाणि गृह्यतां परमेश्वरि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकाली ३ देवीभ्यः राजोपचारान्समर्पयामि ॥ प्रार्थनापूर्वकनमस्कारः—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् । सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, प्रार्थनापूर्वकनमस्कारं समर्पयामि ॥ क्षमापनम्—अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥१॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥ २ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ॥ यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ३ ॥ अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ॥ यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥४॥ सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ॥ इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥५॥ अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात् ॥७॥ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् सुरेश्वरि ॥८॥ यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥९॥ विसर्गबिन्दुमात्राश्च पदपादाक्षराणि च । न्यूनानि चातिरिक्तानि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥१०॥ अर्पणम्—अनेनावाहनासनपाद्यार्घाचमनीयस्नानवस्त्रोपवस्त्रगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलदक्षिणानमस्कारप्रदक्षिणामन्त्रपुष्परूपैः षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतपूजनेन श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्तां न मम ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ ॐ श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ अथ चतुःषष्टियोगिनीपूजा ॥

देव्यग्रे रक्तवस्त्रोपरि तण्डुलान्नेन गोधूमैर्वा अष्टौ पंक्तिरूपेण चतुःषष्टिकोष्ठकानि कृत्वा तत्र क्रमेण—ॐ जये इहागच्छ इहतिष्ठ इत्यावाहयेत् ॥ १ ॥ एवं-ॐ विजये इहागच्छ इह तिष्ठ ॥२॥ ॐ जयन्ति इहा० ॥३॥ ॐ अपराजिते इहा० ॥४॥ ॐ दिव्ययोगिनि इहा० ॥५॥ ॐ महायोगिनि० ॥६॥ ॐ सिद्धयोगिनि० ॥७॥ ॐ गणेश्वरि० ॥८॥ इति प्रथमाष्टकम् । ॐ प्रेतासनि इहा० ॥ ९ ॥ ॐ डाकिनि इहा० ॥१०॥ ॐ कालि इहा० ॥११। ॐ कालरात्रि इहा० ॥१२॥ ॐ निशाचरि इहा० ॥ १३ ॥ ॐ टङ्कारिणि इहा० ॥१४॥ ॐ रुद्रवेतालिनि इहा० ॥१५॥ ॐ हुङ्कारिणि इहा० ॥१६॥ इति द्वितीयाष्टकम् ॥ ॐ ऊर्ध्वकेशि इहा० ॥ १७ ॥ ॐ विरूपाक्षि इहा० ॥ १८ ॥ ॐ शुष्काङ्गि इहा० ॥१९॥ ॐ नरभोजिनि इहा० ॥२०॥ ॐ फट्कारिणि इहा० ॥ २१ ॥ ॐ वीरभद्रे इहा० ॥२२॥ ॐ धूम्राङ्गि इहा० ॥२३। ॐ कलहप्रिये इहा० ॥२४॥ इति तृतीयाष्टकम् ॥ ॐ राक्षसि इहा० ॥२५॥ ॐ रक्ताक्षि इहा० ॥२६॥ ॐ विश्वरूपे इहा० ॥२७॥ ॐ भयङ्करि इहा० ॥२८॥ ॐ वीरकौमारि इहा० ॥२९॥ ॐ चण्डिके इहा० ॥३०॥ ॐ वाराहि इहा० ॥३१॥ ॐ मुण्डधारिणि इहा० ॥३२॥ इति चतुर्थाष्टकम् ॥ ॐ भैरवि इहा० ॥३३॥ ॐ ध्वांक्षिणि इहा० ॥३४॥ ॐ धूम्राङ्गि इहा० ॥३५॥ ॐ प्रेतवाराहि इहा० ॥३६॥ ॐ खड्गिनि इहा० ॥३७॥ ॐ दीर्घलम्बोष्ठि इहा० ॥३८॥ ॐ मालिनि इहा० ॥३९॥ ॐ मन्त्रयोगिनि इहा० ॥४०॥ इति पञ्चमाष्टकम् ॥ ॐ कालिनि इहा० ॥४१॥ ॐ चक्रिणि इहा० ॥४२॥ ॐ कंकालि इहा० ॥४३॥

ॐ भुवनेश्वरि इहा० ॥४४॥ ॐ शटकि इहा० ॥ ४५ ॥ ॐ महामारि इहा० ॥४६॥ यमदूति इहा० ॥४७॥ ॐ करालिनि इहा० ॥४८॥ इति षष्ठाष्टकम् ॥ ॐ केशिनि इहा० ॥ ४९ ॥ ॐ मर्दिनि इहा० ॥५०॥ ॐ रोमजंघे इहा० ॥ ५१ ॥ ॐ निवारिणि इहा० ॥५२॥ ॐ विशालिनि इहा० ॥५३॥ ॐ कार्मुकि इहा० ॥ ५४ ॥ ॐ लोलि इहा० ॥५५॥ ॐ अधोमुखि इहा० ॥५६॥ इति सप्तमाष्टकम् ॥ ॐ मुण्डाग्रधारिणि इहा० ॥५७॥ ॐ व्याघ्रि इहा० ॥५८॥ ॐ कांक्षिणि इहा० ॥५९॥ ॐ प्रेतरूपिणि इहा० ॥ ६० ॥ ॐ धूर्जटि इहा० ॥ ६१ ॥ ॐ घोरि इहा० ॥ ६२ ॥ ॐ करालि इहा० ॥६३ ॐ विषलम्बिनि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥६४॥ इत्यष्टमाष्टकम् ॥ एवमावाह्य ॐ मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः सम्पूज्य पायसबलिं दद्यात् ॥ ततस्तत्रैव एकदेशे—ॐ बं बटुकाय नमः। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः। इति सम्पूज्य ॐ बं बटुकाय पिंगलभासुरनेत्राय बलिं गृहाण गृहाण भक्ष भक्ष कन्दन कन्दन ह्रीं हूं स्वाहा—इति मन्त्रेण बटुकाय क्षेत्रपालाय पायसादिनानाद्रव्यबलिं दत्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ ततः अनेन पूजनेन श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यः प्रीयन्तामिति देवीदक्षिणतो जलमुत्सृज्य देव्यग्रे कुमारीपूजां कुर्यात्। तद्यथा—देशकालौ संकीर्त्य नवचण्डीजपाङ्गत्वेन कुमारीपूजां करिष्ये इति संकल्प्य। नवार्णमन्त्रेण पूर्वोक्तं षडङ्गन्यासं कृत्वा "ॐ मन्त्राक्षरमयीं देवीं मातॄणां रूपधारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥ इत्यावाह्य नवरात्रविधिना यथासम्भवं पूजयेत्। कुमार्यश्च प्रत्यहं शतं नव वा पूज्याः। प्रत्यहमेकवृद्ध्या वा पूजयेत्। ततो ब्राह्मणसुवासिनीपूजा।

१ 'यजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभम्। द्विवर्षाद्याः दशाब्दान्ताः कुमारीः परिपूजयेत् ॥' इतिवचनात्ततोऽल्पवयस्का वर्ज्याः।

एवं देवीकुमार्यादिपूजा प्रत्यहं कार्या । द्वितीयदिने द्विगुणा २ तृतीये त्रिगुणा ३ चतुर्थे च चतुर्गुणा ४ विधेया ॥ ता आसने उपवेश्यावाहयेन्मन्त्रेण–मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥ अनेनैव मन्त्रेण नवापि आवाहयेत् ॥ अशक्तौ यथाशक्ति एकामपि ॥ अथ नवानां पूजामन्त्राः । द्विहायना कुमारीसंज्ञका ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ त्रिहायना त्रिमूर्तिस्तन्मन्त्रः ॥ त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्षां ज्ञानरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥ चतुर्वर्षा कल्याणी, तत्पूजामन्त्रः ॥ कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ॥ कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ४ ॥ पञ्चवर्षा रोहिणी, तत्पूजामन्त्रः ॥ अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ॥ अनन्तशक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥ षड्वर्षा कालिका, तत्पूजामन्त्रः ॥ कामचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥६॥ सप्तवर्षा चण्डिका, तत्पूजामन्त्रः ॥ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम् ॥ पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥ ७ ॥ अष्टवर्षा शाम्भवी, तत्पूजामन्त्रः ॥ सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ ८ ॥ नवहायना दुर्गा, तत्पूजामन्त्रः ॥ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम् ॥ ९ ॥ दशवर्षा सुभद्रा, तत्पूजामन्त्रः ॥ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥१०॥ इति प्रत्येकमन्त्रान्ते तत्तन्नाममन्त्रेण नवापि षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत् ॥ इति कुमारी पूजनम् ॥

॥ अथ देवीपूजाङ्गहोमप्रयोगः ॥

अद्येत्यादि० तिथौ मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीत्रिगुणात्मिकादुर्गादेवीप्रीतये पूजांगहोमं करिष्ये । तत्रादौ देवीदक्षिणे हस्तमात्रस्थण्डिले कुण्डे वा संस्कारचतुष्टयं कुर्यात् ॥ तद्यथा—मूलेनेक्षणम् । फडिति प्रोक्षणम् । फडिति दर्भैश्चतुर्भिस्ताडनम् । हुं मुष्टिना अप आसिच्य । अग्निपात्रमादाय हुं इत्युद्धाट्य नैर्ऋत्ये फडिति क्रव्यादांशं परित्यज्य । पुनः अग्नेः संस्कारचतुष्टयं कुर्यात् ॥ तद्यथा—मूलेनेक्षणम् । फडिति प्रोक्षणम् । फडिति दर्भैश्चतुर्भिस्ताडनम् । हुं इति मुष्टिना अप आसिच्य । परमात्मानलेनाथ जाठरेणापि वह्निना । ऐक्यं स्मरन् चैतन्यं योजयेत् ॥ ह्रीं इत्यभिमन्त्र्य । वमिति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य । फडिति संरक्ष्य । कवचेनावगुण्ठ्य । त्रिवारं प्रणवं पठन् । कुण्डोपरि वा स्थण्डिलोपरि वह्निं भ्रामयित्वा । ह्रीं वह्निचैतन्याय नमः, इति स्थापयेत् ॥ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय नमः, इत्यग्निमभ्यर्च्य मूलेन निर्वाणमुद्रया प्रधानपीठादग्नौ देवीमावाह्य । आवाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य । तद्यथा—आवाहिता भव । स्थापिता भव । सन्निहिता भव । सन्निरुद्धा भव । सम्मुखीकृता भव । प्रार्थिता भव । परमीकृता भव । योनिमुद्रया प्रणमेत् । अग्निं सम्पूज्य । घृताहुतीर्जुहुयात् । ॐ अग्नये स्वाहा । ॐ वायवे स्वाहा । ॐ सूर्याय स्वाहा । ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥४॥ मूलेन पञ्चविंशतिं आहुतीर्जुहुयात् । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ॥२५॥ षडंगमन्त्रैश्च षडाहुतयः । मूलं हृदयायेत्यादि ॥६॥ पुनः—अग्नये स्वाहा । वायवे स्वाहा । सूर्याय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा ॥७॥ ब्रह्मार्पणमन्त्रेणैकाम-

हुतिं घृतेन हुत्वा । इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्कृतं यदुक्तं यत्स्मृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु नमः । संहारमुद्रया देवीं स्वस्थाने संस्थाप्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ १ ॥ विसृज्य अनेन नित्यहोमाख्येन कर्मणा त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवी प्रीयताम् ॥

॥ अथ देवीपूजाङ्गबलिदानप्रयोगः ॥

उक्तं च कुलार्णवे—ऐशाने बटुकं देवमाग्नेये योगिनीबलिम् ॥ नैर्ऋत्ये क्षेत्रपालं च वायव्ये गणनायकम् ॥ १ ॥ उत्तरे सर्वभूतेभ्यो मध्ये च मुख्यदेवताम् ॥ अदत्त्वा बटुकादीनां यः पूजयति चण्डिकाम् ॥ पूजा च विफला तस्य देवीशापः प्रजायते ॥ २ ॥ देव्या ईशानभागे बिन्दुत्रिकोणवृत्तचतुरस्रं मण्डलं कृत्वा मण्डलाय नमः इति सम्पूज्य, आधारपात्रं निधाय बलिं पूरयित्वा नैवेद्यात् किञ्चिद् बलिमध्ये निक्षिप्य 'बलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य ह्रीं बटुकाय एह्येहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर पिंगलत्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितमिमं बलिं गृह्ण गृह्ण नमः । वामांगुष्ठानामिकाभ्यां बलिपात्रामृतेन धारारूपेण जलमुत्सृजेत् । पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः ॥ शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः ॥ इति ध्यात्वा एष बलिर्बटुकाय न मम । योनिमुद्रया प्रणमेत् । आग्नेये योगिनीबलिः । पूर्ववत् मण्डलं कृत्वा सम्पूज्य बलिं निधाय । 'यां योगिनीबलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य ।

जलमादाय—ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निस्तले वा पाताले वा तले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा ॥ क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः ॥ १ ॥ शुक्लवर्णे त्रिशूलडमरुपाशांकुशधरे सर्वालंकारभूषिते ससैन्ये सौम्ये चतुःषष्टियोगिनीसहिते एह्येहि आगच्छ आगच्छ सर्वयोगिनीभ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वभूताधिपतिभ्यो डाकिनीभ्यः शाकिनीभ्यस्त्रैलोक्यनिवासिनीभ्य इमं बलिं गृह्णीत २ ममेप्सितं कार्यं कुरुत कुरुत नमः ॥ वामांगुष्ठमध्यमानामिकांगुलिभिर्जलमुत्सृजेत् । पुष्पं गृहीत्वा—याः काश्चिद्योगिनीरौद्राः सौम्या घोरतराः पराः ॥ खेचरी-भूचरी-व्योमचर्यः प्रीतास्तु मे सदा ॥ पुष्पं निक्षिप्य । एष बलिर्योगिनीभ्यो न मम ॥ योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ इति ॥ अथ नैर्ऋत्ये क्षेत्रपालबलिः—मण्डलादि पूर्ववत् ॥ मण्डलं सम्पूज्य तदुपरि आधारे बलिं निधाय क्षं क्षेत्रपालाय० सम्पूज्य ॥ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः एह्येहि देवीपुत्र उच्छिष्टहारिन् मुहुर्मुहु रक्ष क्षं क्षेत्रपाल सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितमिमं बलिं गृह्ण गृह्ण नमः ॥ वामांगुष्ठतर्जनीभ्यां जलमुत्सृजेत् ॥ पुष्पं गृहीत्वा—यं यं यं यक्षरूपं दशदिशि वदनं भूमिकम्पायमानं सं सं सं संहारमूर्तिं शिरसि धृतजटा शेखरं चन्द्रबिम्बम् ॥ दं दं दं दीर्घकायं कृतनरवपुषं ऊर्ध्वरेखाकरालं पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ १ ॥ यो यस्मिन् क्षेत्रवासी च क्षेत्रपालः स किंकरः ॥ प्रीतोऽसौ बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे ॥२॥ पुष्पं निक्षिप्य, एष बलिः क्षेत्रपालाय न मम ॥ योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ अथ वायव्ये गणपतिबलिः—मण्डलादि पूर्ववत् ॥ मण्डलं सम्पूज्य तदुपरि आधारे बलिं निधाय 'बलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य ॥ गां गीं गूं गैं गौं गः श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद

सर्वजनं मे वशमानय इमं बलिं गृह्ण गृह्ण नमः । वाममध्यमया वक्रया जलमुत्सृजेत् ॥ पुष्पं गृहीत्वा—सर्वदा सर्वकार्याणि निर्विघ्नं साधयाम्यहम् ॥ शान्तिं करोतु मे नित्यं विघ्नराज सदा क्रियाम् ॥ पुष्पं निक्षिप्य—एष बलिर्गणपतये न मम ॥ योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ ४ ॥ अथोत्तरे सर्वभूतबलिः—मण्डलादि पूर्ववत् कृत्वा मण्डलं सम्पूज्य तदुपरि आधारे बलिं निधाय 'बलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य । ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् इमं बलिं गृह्ण गृह्ण नमः ॥ वामकर-सर्वांगुलिभिर्बलिमुत्सृजेत् ॥ पुष्पं गृहीत्वा—भूता ये विविधाकारा दिव्यभूम्यन्तरिक्षगाः ॥ पातालतलसंस्थाश्च शिवयोगेन भाविताः ॥ १ ॥ कराद्याः शतसंख्याकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः ॥ तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥ नानावर्णकृतैर्वक्त्रैर्नानाभूषाम्बरायुधैः ॥ नानाभूतगणैर्यूथैः सर्वभूतेश्वरं भजेत् ॥ ३ ॥ पुष्पं निक्षिप्य, एष बलिः सर्वभूतेभ्यो न मम ॥ योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ अथ देव्यग्रे मुख्यबलिः । पूर्ववत् मण्डलं कृत्वा सम्पूज्य आधारं संस्थाप्य तदुपरि बलिं निधाय 'बलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य ॥ मूलम्—सांगायै सपरिवारायै श्रीमहाकालीमहा-लक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिणीश्रीत्रिगुणात्मिकादुर्गादेवतायै नम इमं सदीपबलिं गृह्ण गृह्ण नमः ॥ देवीतीर्थेन जलमुत्सृजेत् ॥ मूलेन पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥ एष बलिः श्रीत्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेवतायै न मम । योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥

॥ अथ प्रार्थना ॥

सर्वपीठोपपीठानि द्वारोपस्तरणेऽपि च ॥ क्षेत्रे क्षेत्रे हि संदेहे सर्वे दिग्भागसंस्थिताः ॥१॥ योगा नियोगवीरेन्द्राः सर्वे यन्त्रसमागताः ॥ नगरे वाथ वा ग्रामे अटव्यां सरितस्तटे ॥२॥ वापीकूपेषु वृक्षेषु श्मशानेषु चतुष्पथे ॥ नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये ॥३॥ ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा ॥ शरणागतोऽस्म्यहं तेषां ते सर्वे मे वसुप्रदाः ॥४॥ बलिदानेन सन्तुष्टाः प्रयच्छन्तु ममेप्सितम् ॥ सर्वे कार्याणि कुर्वन्तु दोषांश्च घ्नन्तु मे सदा ॥५॥ इति सम्प्रार्थ्य पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा पठेत् । भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ तानि क्षमन्तामिह वा रमन्तां गच्छन्तु चान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥ १ ॥ इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य नाराचमुद्रया भूतानि विसृजेत् ॥ तत्र मन्त्राः—बलिं गृह्णन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ १ ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ॥ डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥२॥ जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा मालाविद्याधरा नगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥३॥ जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ॥ मा विघ्नं मा च पापं च मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ ४ ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ॥ ५ ॥ इति पठित्वा नाराचमुद्रया भूतानि विसृज्य । मूलमन्त्रेण शुद्धजलेनात्मानमभ्युक्ष्याचामेत् ॥ इति ॥

॥ अथ दुर्गासप्तशतीपाठप्रयोगः ॥

अथ साधकः कृतमंगलस्नानतिलकनित्यविधिः प्राङ्मुखः शुद्धासनोपविष्टः आदावाचामेत् । तद्यथा—ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा, ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा, ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ततः पवित्रपाणिः पूर्वोक्तविधिना प्राणायामं कुर्यात् । ततः देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिकामः मम आत्मनः सपुत्रस्त्रीबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृतराजकृतसर्वविधपीडानिवृत्तिपूर्वकं नैरुज्यदीर्घायुःपुष्टिधनधान्यसमृद्ध्यर्थं सर्वापन्निवृत्तिसर्वाभीष्टफलावाप्तिधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं शापोद्धारपूर्वकं कवचार्गलाकीलकपठनरात्रिसूक्त (देव्यथर्वशीर्ष) पाठैकादशन्यासविधिसहितनवार्णमन्त्राष्टोत्तरशतजपसप्तशतीन्यासध्यानसहितचरित्रसंबन्धिविनियोगन्यासध्यानपूर्वकं च मार्कण्डेय उवाच, सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः—इत्यारभ्य सावर्णिर्भविता मनुरित्यन्तं दुर्गासप्तशतीपाठं तदन्ते न्यासविधिसहितनवार्णमन्त्राष्टोत्तरशतजपं तन्त्रोक्तदेवीसूक्तपाठं रहस्यत्रयपठनं शापोद्धारादिकं च करिष्ये । सम्पुटितपाठे तु प्रतिमन्त्रं यथाकामनया अमुकमन्त्रसंपुटितायाः दुर्गासप्तशत्याः पाठं करिष्ये—इति विशेषः । ततः आसनशुद्धिं कुर्यात्—यथा ॐ अनन्तासनाय नमः, ॐ कूर्मासनाय नमः, ॐ विमलासनाय नमः, ॐ पद्मासनाय नमः, ॐ योगासनाय नमः, ॐ आधारशक्त्यै नमः, ॐ दुष्टविद्रावणनृसिंहासनाय नमः, मध्ये परमसुखासनाय नमः ॥

॥ अथ सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम् ॥

शिव उवाच—शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् । येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥ १ ॥ न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् । न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२॥ कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् । अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥ ३॥ गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति । मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् । पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥ ४ ॥

अथ मन्त्रः—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः पालय पालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥ नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि । नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥१॥ नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ॥२॥ जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे । ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ॥३॥ क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते । चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ॥४॥ विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥५॥ धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी । क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥६॥ हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी । भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥ ७ ॥ अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा । पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥८॥ सां सीं सूं सप्तशतीदेव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥ इदं तु कुञ्जिका-

स्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे ॥९॥ अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति। यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ॥१०॥ न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥ इति—

श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्। ॐ तत्सत् ॥

॥ अथ चण्डीस्तोत्रम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ हं सौं ह्रीं क्लीं श्रीं जय जय चण्डिके त्रिदशमुकुटकोटिसंघट्टितचरणारविन्दे गायत्री-सावित्री-सरस्वती-महीक्षुताभरणे भैरवधारिणि प्रकटितदंष्ट्रोग्रवदने महाघोराट्टहासे धूम्रलोचनपरायणे चण्डमुण्डादिशिरश्छे-दिनि रक्तबीजादिरुधिरशोषिणि रक्तपानप्रिये महायोगिनि भूतवैतालभैरवादितुष्टिविधायिनि निशुम्भशुम्भशिरश्छेदिनि निखिलासुरबलार्दिनि त्रिदशराज्यदायिनि सर्वश्रीरत्नरूपिणि दिव्यदेहे निर्गुणे सगुणे सदसद्रूपधारिणि सुरवरदेभ क्तगणतत्परे वरे वरदे सहस्रारि अयुताक्षरसप्तकोटिचामुण्डारूपिणि नवकोटिकात्यायनीरूपे अनेकलक्षालक्षस्वरूपे महाकालिके इन्द्राणि ब्रह्माणि रुद्राणि कौमारि वैष्णवि वाराहि शिवदूतिनि माहेश्वरि ईशानि अपराजिते भूमि भ्रामरि नारसिंहिके त्रयस्त्रिंशतकोटि-दैवतं अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिके चतुरशीतिलक्षमुनिसंस्तुते सप्तमहामन्त्रस्वरूपे महाकालरात्रिप्रकाशे कलाकाष्ठादिरूपिणि चतुर्दशभुवनालंकारिणि गरुडगामिनि क्रौंकार-ह्रींकार-श्रींकार-सौंकार-जूंकार-सौंकार-ऐंकार-क्लींकार-ह्रींकार-हौंकारनामबीज-

कूटनिर्मितशरीरे सकलसुन्दरीगणसेवितचरणारविन्दे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि कामे सद्दयिते करुणारसकल्लोलिनि कल्पवृक्षाधः-स्थितचिन्तामणिमन्दिरनिवासे चापिनि खड्गिनि चक्रिणि शूलिनि गदिनि पद्मिनि निखिलभैरवाराधिते समस्तयोगिनि चक्रपरिवृते कालिके कालतारे रेतोत्पत्ते सुतारे ज्वालामुखि छिन्नमस्तके भुवनेश्वरि त्रिपुरे त्रिलोकजननि विष्णुवक्षःस्थला-लंकारिणि अमिते अजिते अमराधिपे अनुपमचरिते गर्भवासादिदुःखापहारिणि मुक्तक्षेत्राधिष्ठापनि शिवे शान्ते कुमारिरूपे देवीसूक्तसंस्तुते दशशतावतारे कृष्णे चण्डि चामुण्डे महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीत्रयीविग्रहे प्रसीद २ सर्वमनोरथान् पूरय २ सर्वारिष्टविघ्नान् छिन्धि २ सर्वग्रहपीडां नाशय २ सर्वत्रिभुवनजीवजातं वशमानय २ मोक्षमार्गं दर्शय २ प्रकाशय २ अज्ञतमं मां निरसय सर्वकल्याणानि कल्पय २ मां रक्ष २ सर्वापद्भ्यो निस्तारय २ सपरिवारं मां रक्ष २ मम वज्रशरीरं साधय २ सं आं क्लीं ह्रीं ऐं ॥ शुभमिति ॥

॥ अथ शापमोचनम् ॥

ॐ अस्य चण्डिकाब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य वशिष्ठनारदसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषयः। श्रीसर्वैश्वर्यकारिणी दुर्गा देवता। चरितत्रयं बीजम्। ह्रीं शक्तिरूपेण कल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ रीं रक्षस्वरूपायै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव॥ ॐ श्रीं बुद्धिरूपिण्यै सैन्यनाशिन्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव॥ ॐ रं रक्तरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव॥ ॐ क्षुं क्षुधारूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव॥ ॐ छां छायारूपिण्यै दूतसंवादिन्यै

ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ श्रीं शक्तिरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ तृं तृष्णारूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ क्षां क्षान्तिरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ जां जातिरूपिण्यै निशुम्भवधिन्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ लं लज्जारूपिण्यै शुम्भवधिन्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ शां शान्तिरूपिण्यै फलधात्र्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ श्रं श्रद्धारूपिण्यै फलधात्र्यै ब्रह्मशापद्विमुक्ता भव ॥ ॐ कां कान्तिरूपिण्यै राजवरदायै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ मां मातृरूपिण्यै अनर्गलमहिम्ने ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ ह्रीं श्रीं रं दुर्गायै सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ नमः शिवायै अभेद्यकवचरूपिण्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ काल्यै काली ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः ॥ आत्मानं चैव दातारं क्षयं कुर्यान्न संशयः ॥ इति ॥ अथ कीलकमन्त्रः ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ २१ वारम् ॥ ॐ श्रीं श्रीं ॐ रुद्रशापं मोचय २ हूं फट् स्वाहा ॥ ६ वारम् ॥

॥ अथ देव्यथर्वशीर्षम् ॥

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवी । साब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाशून्यं च अहमानन्दानानन्दौ अहं विज्ञानाविज्ञाने अहं ब्रह्माब्रह्मणी द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये । इति चाथर्वणी श्रुतिः । अहं पञ्चभूतानि अहं पञ्चतन्मात्राणि अहमखिलं जगत् वेदोहमवेदोहम् विद्याहमविद्याहम् अजाहमनजाहम् अधश्चोर्ध्वं च

तिर्यक्चाहम् अहठं० रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि अहमिन्द्राग्नी अहमश्विना उभा अहठं० सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि अहं विष्णुमुरुक्रमम् ब्रह्माणमुतप्रजापतिं दधामि अहं दधामि द्रविणठं० हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुव्रते अहठं० राज्ञीसंगमनी वसूनाम् चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् अहठं० सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वान्तः समुद्रे य एवं वेद सदैवीठं० सम्पदमाप्नोति ते देवा अब्रुवन्। नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ॥ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु॥ कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्। सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्॥ अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्षया दुहिता तव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः॥ कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहाहंसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः। पुनर्गुहा सकला मायया चापृथक्क्लेशा विश्वमातादिविद्याः॥ एषात्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी पाशांकुशधनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति। नमस्ते भगवती मातरस्मान्पाहि सर्वतः। सैषा वैष्णवा वसवः सैवैकादश रुद्राः सैषा द्वादशादित्याः सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचयक्षसिद्धाः सैषा सत्त्वरजस्तमांसि सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतिष्कलाकाष्ठादिविश्वरूपिणी तामहं प्रणौमि नित्यम्। पापापहरिणी देवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी। अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां सर्वदा शिवाम्॥ वियदाकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।

अर्द्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ एवमेकाक्षरं मन्त्रं यतयः शुद्धचेतसः । ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः ॥ वाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मात् षष्ठवक्त्रसमन्वितम् । सूर्यो वामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्ताष्टतृतीयकम् ॥ नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधार-युक्तयः । विच्चे नवार्णकोणस्य महानानन्ददायकः ॥ हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम् । पाशांकुशधरां सौम्यां वरदा-भयहस्तकाम् ॥ त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुहं भजे । भजामि त्वां महादेवि महाभयविनाशिनि ॥ महादारिद्र्यशमनी महाकारुण्यरूपिणी । यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति ॥ तस्मादुच्यते अज्ञेया । यस्यान्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्षं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्षा । यस्या जननं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अजा । एकैव सर्वत्र वर्त्तते तस्मादुच्यते एका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यतेऽनेका । अत एवोच्यतेऽज्ञेयानन्तालक्षाजैकानेका । मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी । ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ॥ यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकी-र्तिता । तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् ॥ नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥ इदमथर्वशीर्षं योऽधीते । स पञ्चाथर्वशीर्षफलमाप्नोति । इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति । शतलक्षं प्रजप्त्वापि नार्चासिद्धिं च विन्दति । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः । दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते । महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति । निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति । नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति । भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति । स महामृत्युं तरति । य एवं वेद इत्युपनिषत् ॥ इति देव्यथर्वशीर्षम् ॥

॥ अथ काम्यप्रयोगविमर्शः ॥

उक्तं च कात्यायनीतन्त्रे–प्रतिश्लोकमाद्यन्तयोः प्रणवेन जपे मन्त्रसिद्धिः स्यात् ॥ अग्रे सर्वत्र श्लोकपदं मन्त्रोपलक्षणम् ॥ सप्रणवमनुलोमव्याहृतित्रयमादौ–अन्ते तु विलोमन्तदित्येवं प्रतिश्लोकं कृत्वा महास्तोत्रं पठेत् ॥ शतावृत्तिपाठेऽतिशीघ्रं मन्त्रसिद्धिः ॥ प्रणवं व्याहृतित्रयं च श्लोकादौ जपेत्तेन मन्त्रसिद्धिः ॥ सप्तव्याहृतिसम्पुटितं श्लोकं कृत्वा जपेत्तेनापि मन्त्रसिद्धिः ॥ सप्तव्याहृतिपूर्वकं कृत्वापि मन्त्रसिद्धिः ॥ सप्तव्याहृतियुक्तां त्रिव्याहृतियुक्तां वा गायत्रीमादावन्ते वा कृत्वा श्लोकं पठेत्तदा महाफलं स्यात् ॥ जातवेदसे सुनवाम० इति ऋचा वा शरणागतदीनार्त० इति श्लोकेन, अथवा करोतु सा नः शुभहेतु० इत्यर्धश्लोकेन वा सम्पुटीकरणे सर्वकामनासिद्धिः ॥ एवं देव्या वरं० इति श्लोकेन सम्पुटीकरणे त्वभीष्टतरप्राप्तिः ॥ सर्वबाधाप्रशमनं० इति श्लोकेन शत्रुनाशः ॥ ततो वव्रे नृपः० इत्यनेन स्वराज्यलाभः ॥ इत्थं यदा यदा० इत्यनेन लक्षजपेन महामारीनाशः ॥ कांसोस्मि तां० इत्यृचा लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ दुर्गे स्मृता हरसि० इति दारिद्र्यदुःखादिनाशः ॥ सर्वबाधाविनिर्मुक्त० इति सर्वबाधाविमुक्तिः धनपुत्रादिप्राप्तिश्च ॥ अनृणा अस्मिन्निति० ऋचा ऋणपरिहारः ॥ एवमुक्त्वा समु० इत्यनेन सम्पुटीकरणे मारणार्थसिद्धिः ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि० इत्यनेन समीपबलिदानबन्धने बालग्रहशान्तिः ॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि० इति श्लोकजपमात्रेण सद्यो मोहनमित्यनुभवसिद्धम् ॥ रोगानशेषान्० इति श्लोकस्य प्रतिश्लोकं पाठे वा तन्मन्त्रजपेऽपि सकलरोगनाशः ॥ इत्युक्त्वा सा तदा देवी० इति प्रतिश्लोकं पाठे पृथग् जपे वा

विद्याप्राप्तिर्वाग्वैकृतनाशश्च स्यात् ।। देवि प्रपन्नार्ति० इति श्लोकस्य यथाकार्यं लक्षायुतसहस्रशतान्यतमे जपे प्रतिश्लोकं पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामावाप्तिश्च स्यात् ।। एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकेषु दीपाग्रे केवलमेव नमस्कारकरणे अतिशीघ्रसिद्धिः ।। प्रतिश्लोकं 'क्लीं' कामबीजसम्पुटितस्य-एकचत्वारिंशद्दिनं प्रत्यहं त्रिरावृत्तौ पुत्रप्राप्तिः स्यात् ।। एकविंशतिदिनपर्यन्तमुक्तरीत्या प्रत्यहं दशावृत्त्या वशीकरणसिद्धिः ।। 'ह्रीं' मायाबीजसम्पुटितस्य 'फट्' पल्लवसहितस्य सप्तदिनपर्यन्तं त्रयोदशावृत्तौ-उच्चाटनसिद्धिः ।। तादृशस्यैव दिनचतुष्टयमेकादशावृत्तौ सर्वोपद्रवनाशः ।। एकोनपञ्चाशद्दिनपर्यन्तं प्रतिश्लोकं 'श्रीं' बीजसम्पुटितस्य पञ्चदशावृत्तौ लक्ष्मीप्राप्तिः ।। प्रतिश्लोकं 'ऐं' बीजसम्पुटितस्य शतावृत्त्या विद्याप्राप्तिः ।। एकस्मिन्दिने ब्रह्मावृत्तिकरणासामर्थ्ये ब्राह्मणद्वारा प्रयोगः कारयितव्यः ।। इति काम्यप्रयोगविमर्शः ।।

अथ सप्तशतीपाठारम्भः ।। तत्रादौ सरस्वतीपुस्तकपूजनम् ।। नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।। ॐ नमः पिशाचिनि करंकिनि त्रिशूलखड्गहस्ते सिंहारूढे एह्येहि आगच्छ आगच्छ इमां पूजां गृह्ण गृह्ण स्वाहा

---

१. माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः । धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः ।। १ ।। गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः । अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः ।।२।। यावन्न पूर्यतेऽध्यायस्तावन्न विरमेत्पठन् । यदि प्रमादादध्याये विरामो भवति प्रिये ।। पुनरध्यायमारभ्य पठेत्सर्वं मुहुर्मुहुः ।।३।। अज्ञानात्स्थापिते हस्ते पाठे ह्यर्धफलं ध्रुवम् । न मानसे पठेत्स्तोत्रं वाचिकं तु प्रशस्यते ।।४।। उच्चैः पाठं निषिद्धं स्यात्त्वरां च परिवर्जयेत् । शुद्धेनाचलचित्तेन पठितव्यं प्रयत्नतः ।। ५ ।।

श्रीसप्तशतिसरस्वत्यै नमः आवाहयामि ॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः इति मन्त्रेण षोडशोपचार-पूजनम् । तदनन्तरं शापोद्धारजपः—ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिके देवि शापानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा, सप्तवारं जपेत् । तत उत्कीलनमन्त्रः—ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा २१ वारं जपेत् ॥

श्रीगणेशाय नमः । श्रीसरस्वत्यै नमः । श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीकुलदेवतायै नमः । अविघ्नमस्तु । ॐ नारायणाय नमः । ॐ नराय नरोत्तमाय नमः । ॐ सरस्वतीदेव्यै नमः । ॐ वेदव्यासाय नमः । ॐ नमश्चण्डिकायै । ॐ मार्कण्डेय उवाच । यद्गुह्यमित्यादि सार्धपञ्चाशत् ५०॥ श्लोकात्मकं कवचं पठित्वा ॐ जयन्तीत्यादित्रयोविंशतिश्लोकात्मका-मर्गलां पठित्वा ॐ विशुद्धेत्यादिचतुर्दशश्लोकात्मकं कीलकं पठेत् ।

अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । चामुण्डा देवता । अंगन्यासोक्त-मातरो बीजम् । दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम् । श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठांगजपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ॐ यद् गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥१॥ ब्रह्मोवाच ॥ अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतो-
पकारकम् ॥ देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २ ॥ प्रथमं शैलपुत्रीति द्वितीयं
ब्रह्मचारिणी ॥ तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं
कात्यायनीति च ॥ सप्तमं कालरात्रिश्च महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥ नवमं सिद्धिदात्री च
नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥५॥ अग्निना दह्यमा-
नस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ॥ विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गता ॥ ६ ॥ न तेषां जायते
किञ्चिदशुभं रणसंकटे ॥ नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ॥ ७ ॥ यैस्तु भक्त्या
स्मृता नूनं तेषां सिद्धिः प्रजायते ॥ प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ॥८॥ ऐन्द्री
गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ॥ ९ ॥ ब्राह्मी
हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिता ॥१०॥ दृश्यन्ते

रथमारूढा दैत्यः क्रोधसमाकुलाः ॥ शंखं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ ११ ॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ॥ कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ १२ ॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ॥ धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥१३॥
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनी ॥१४॥
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी
॥ १५ ॥ प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी ॥ उदीच्यां रक्ष कावेरि ईशान्यां शूल-
धारिणी ॥१६॥ ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णावी तथा ॥ एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा
शववाहना ॥ १७ ॥ जया मे अग्रतः स्थातु विजया स्थातु पृष्ठतः ॥ अजिता वामपार्श्वे तु
दक्षिणे चापराजिता ॥ १८ ॥ शिखां मे द्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥ मालाधारी
ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी ॥१९॥ त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥ शंखिनी
चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ॥२०॥ कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी ॥ नासि-

कायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ॥ २१ ॥ अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठमध्ये तु चण्डिका ॥२२॥ घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च
तालुके ॥ कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्वमंगला ॥ २३ ॥ ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे
धनुर्धरी ॥ नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नालिकां नलकूबरी ॥ २४ ॥ खड्गधारिण्युभौ स्कन्धौ बाहू
मे वज्रधारिणी ॥ हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चांगुलीस्तथा ॥ २५ ॥ नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्
कुक्षौ रक्षेन्नलेश्वरी ॥ स्तनौ रक्षेन्महालक्ष्मीर्मनश्शोकविनाशिनी ॥ २६ ॥ हृदये ललिता
देवी उदरे शूलधारिणी ॥ नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ॥२७॥ कट्यां भगवती
रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ॥ भूतनाथा च मेढ्रं मे ऊरू महिषवाहिनी ॥ २८ ॥ जंघे महाबला
प्रोक्ता सर्वकामप्रदायिनी ॥ गुल्फयोर्नारसिंही च पादौ चामिततेजसी ॥ २९ ॥ पादांगुलीः
श्रीर्मे रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥ नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ॥ ३० ॥ रोम-
कूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ॥ ३१ ॥

अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी॥ पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ॥३२॥ ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु॥ शुक्रं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ॥३३॥ अहंकारं मनो बुद्धिं रक्ष मे धर्मचारिणी ॥ प्राणापानौ तथा व्यानं समानोदानमेव च ॥३४॥ यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च सदा रक्षतु वैष्णवी ॥ गोत्रमिन्द्राणी मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ॥ ३५ ॥ पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥ मार्गं क्षेमकरी रक्षेद्विजया सर्वतः स्थिता ॥ ३६ ॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥ तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ ३७ ॥ पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥ कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्राधिगच्छति ॥ ३८ ॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ॥ यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ ३९ ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ॥ ४० ॥ त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्॥ ४१ ॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयाऽन्वितः ॥ दैवी कला

भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ॥ ४२ ॥ जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ॥ ४३ ॥ स्थावरं जङ्गमं वापि कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ॥ ४४ ॥ भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥ सहजाः कुलजा मालाः शाकिनी डाकिनी तथा ॥ ४५ ॥ अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥ ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ४६ ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥ नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥ ४७ ॥ मानोन्नतिर्भवेद्राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥ यशसा वर्धते सोऽपि कीर्त्तिमण्डितभूतले ॥ ४८ ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥ यावद् भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ॥ ४९ ॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥ ५० ॥ प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥ श्रीवाराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचम् ॥ १ ॥ श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॥

अथ अर्गलास्तोत्रं प्रारभ्यते ॥ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः । अनुष्टुप्-छन्दः । श्रीमहालक्ष्मीर्देवता । श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठांगजपे विनियोगः ॥

ॐनमश्चण्डिकायै ॥ जयन्ती मंगलाकाली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥१॥ मधुकैटभाविद्राविविधातृवरदे नमः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २ ॥ महिषासुरनिर्नाशविधात्रि वरदे नमः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥३॥ वन्दितांघ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥ रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥ अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ६ ॥ नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥७॥ स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ८ ॥ चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो

देहि द्विषो जहि ॥ ९ ॥ देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि देवि परं सुखम् ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १० ॥ विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ११ ॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१२॥ विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥ प्रचण्डदैत्यदर्पघ्नि चण्डिके प्रणताय मे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १४॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १५ ॥ कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या त्वमम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१६॥ हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १७ ॥ सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१८॥ इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९ ॥ देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो

जहि ॥२०॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२१॥ पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ॥ तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २२ ॥ इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ॥ स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॥ २३ ॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे अर्गलास्तोत्रम् ॥ २ ॥ श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॥

अथ कीलकस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीमहासरस्वती देवता। श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठांगजपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ॥ श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे ॥१॥ सर्वमेतद्विना यस्तु मन्त्राणामपि कीलकम् ॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥२॥ सिध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ॥ एतेन स्तुवतां नित्यं स्तोत्रमात्रेण सिध्यति ॥ ३ ॥ न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते ॥ विना जाप्येन सिध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ ४ ॥ समग्राण्यपि सिध्यन्ति लोकशंकामिमां

हरः ॥ कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥ ५ ॥ स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुह्यं चकार सः ॥ समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥ ६ ॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ॥ कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ ७ ॥ ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ॥ इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥ यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ॥ स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते वने ॥ ९ ॥ न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापि हि जायते ॥ नाऽपमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १० ॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विनश्यति ॥ ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥ सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने ॥ तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥ १२ ॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन्स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ॥ भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥ १३ ॥ ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः ॥ शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥ १४ ॥ श्रीभगवत्याः कीलकस्तोत्रम् ॥ ३ ॥ श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॥

ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः। नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः। रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि। अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि। श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमो हृदि। नन्दाशाकम्भरीभीमाशक्तिभ्यो नमो दक्षिणस्तने। रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामरीबीजेभ्यो नमो वामस्तने। अग्निवायुसूर्यतत्त्वेभ्यो नमो नाभौ॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥ मूलेन करौ संशोध्य। अथैकादशन्यासाः। तत्रादौ मातृकान्यासः। सर्वत्रादौ प्रणवोच्चारः। अं नमो ललाटे। आं नमो मुखवृत्ते। इं नमो दक्षिणनेत्रे। ईं नमो वामनेत्रे। उं नमो दक्षिणकर्णे। ऊं नमो वामकर्णे। ऋं नमो दक्षिणनसि। ॠं नमो वामनसि। लृं नमो दक्षिणगण्डे। लॄं नमो वामगण्डे। एं नम ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं नमोऽधरोष्ठे। ओं नम ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ। औं नमोऽधोदन्तपङ्क्तौ। अं नमः

शिरसि। अः नमो मुखे। कं नमो दक्षबाहुमूले। खं नमो दक्षकूर्परे। गं नमो दक्षमणिबन्धे। घं नमो दक्षांगुलिमूले। ङं नमो दक्षांगुल्यग्रे। चं नमो वामबाहुमूले। छं नमो वामकूर्परे। जं नमो वाममणिबन्धे। झं नमो वामांगुलिमूले। ञं नमो वामांगुल्यग्रे। टं नमो दक्षपादमूले। ठं नमो दक्षजानुनि। डं नमो दक्षगुल्फे। ढं नमो दक्षपादांगुलिमूले। णं नमो दक्षपादांगुल्यग्रे। तं नमो वामपादमूले। थं नमो वामजानुनि। दं नमो वामगुल्फे। धं नमो वामपादांगुलिमूले। नं नमो वामपादांगुल्यग्रे। पं नमो दक्षपार्श्वे। फं नमो वामपार्श्वे। बं नमः पृष्ठे। भं नमो नाभौ। मं नमो जठरे। यं नमो हृदि। रं नमो दक्षांसे। लं नमः ककुदि। वं नमो वामांसे। शं नमो हृदादिदक्षहस्तान्ते। षं नमो हृदादिवामहस्तान्ते। सं नमो हृदादिदक्षपादान्ते। हं नमो हृदादिवामपादान्ते। ळं नमो जठरे। क्षं नमो मुखे॥ इति मातृकान्यासो देवसारूप्यप्रदः प्रथमः॥ १॥ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठयोः। ऐं ह्रीं क्लीं नमोऽनामिकयोः। ऐं ह्रीं क्लीं नमो मध्यमयोः। ऐं ह्रीं क्लीं नमः तर्जन्योः। ऐं ह्रीं क्लीं नमोऽङ्गुष्ठयोः। ऐं ह्रीं

क्लीं नमः करमध्ये । ऐं ह्रीं क्लीं नमः करपृष्ठे । ऐं ह्रीं क्लीं नमो मणिबन्धयोः । ऐं ह्रीं क्लीं नमः कूर्परयोः । ऐं ह्रीं क्लीं नमो हृदयाय नमः । ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिरसे स्वाहा । ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिखायै वषट् । ऐं ह्रीं क्लीं नमः कवचाय हुम् । ऐं ह्रीं क्लीं नमो नेत्रत्रयाय वौषट् । ऐं ह्रीं क्लीं नमोऽस्त्राय फट् । इति सारस्वतो जाड्यविनाशको द्वितीयः ॥२॥ ह्रीं ब्राह्मी पूर्वस्यां मां पातु । ह्रीं माहेश्वरी आग्नेय्यां मां पातु । ह्रीं कौमारी दक्षिणस्यां मां पातु । ह्रीं वैष्णवी नैर्ऋत्यां मां पातु । ह्रीं वाराही पश्चिमायां मां पातु । ह्रीं इन्द्राणी वायव्यां मां पातु । ह्रीं चामुण्डा उत्तरस्यां मां पातु । ह्रीं महालक्ष्मीरैशान्यां मां पातु । ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वं मां पातु । ह्रीं सप्तद्वीपेश्वरी भूमौ मां पातु । ह्रीं कामेश्वरी पाताले मां पातु ॥ इति मातृगणन्यासस्त्रैलोक्य-विजयप्रदस्तृतीयः ॥ ३ ॥ कमलाङ्कुशमण्डिता नन्दजा पूर्वाङ्गं मे पातु । खड्गपात्रधरा रक्तदन्तिका दक्षिणाङ्गं मे पातु । पुष्पपल्लवसंयुता शाकम्भरी पश्चिमाङ्गं मे पातु । धनुर्बाणकरा दुर्गा वामाङ्गं मे पातु । शिरःपात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणावधि मां पातु । चित्रकान्तिभृद्भ्रामरी

पादादिमस्तकान्तं मे पातु॥ इति जरामृत्युहरो नन्दजादिन्यासश्चतुर्थः ॥४॥ पादादिनाभिपर्यन्तं ब्रह्मा मां पातु। नाभेर्विशुद्धिपर्यन्तं जनार्दनो मां पातु। विशुद्धेर्ब्रह्मरन्ध्रान्तं रुद्रो मां पातु। हंसो मे पदद्वयं पातु। वैनतेयः करद्वयं मे पातु। वृषभश्चक्षुषी मे पातु। गजाननः सर्वाङ्गं मे पातु। आनन्दमयो हरिः परापरौ देहभागौ मे पातु॥ इति सर्वकामप्रदो ब्रह्मादिन्यासः पञ्चमः ॥ ५ ॥ अष्टादशभुजा लक्ष्मीर्मध्यभागं मे पातु। अष्टभुजा महासरस्वती ऊर्ध्वभागं मे पातु। दशभुजा महाकाली अधोभागं मे पातु। सिंहो हस्तद्वयं मे पातु। परहंसोऽक्षियुगं मे पातु। महिषारूढो यमः पदद्वयं मे पातु। महेशश्चण्डिकायुक्तः सर्वाङ्गं मे पातु। इति महालक्ष्म्यादिन्यासः सद्गतिप्रदः षष्ठः ॥६॥ ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रीं नमो दक्षिणनेत्रे। क्लीं नमो वामनेत्रे। चां नमो दक्षिणकर्णे। मुं नमो वामकर्णे। डां नमो दक्षिणनासापुटे। यैं नमो वामनासापुटे। विं नमो मुखे। च्चें नमो गुह्ये। इति मूलाक्षरन्यासो रोगक्षयकरः सप्तमः ॥७॥ च्चें नमो गुह्ये। विं नमो मुखे। यैं नमो वामनासापुटे। डां नमो दक्षिणनासापुटे। मुं नमो वामकर्णे। चां

नमो दक्षकर्णे । क्लीं नमो वामनेत्रे । ह्रीं नमो दक्षनेत्रे । ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे ॥ इति विलोमाक्ष-
रन्यासः सर्वदुःखनाशकोऽष्टमः ॥ ८ ॥ मूलमुच्चार्य मस्तकाच्चरणान्तं चरणान्मस्तकान्तं अष्ट-
वारं व्यापकं कुर्यात् ॥ स यथा प्रथमं पुरतो मूलेन मस्तकाच्चरणावधि ॥ १ ॥ ततश्चरणान्म-
स्तकावधि मूलोच्चारेण व्यापकम् ॥ २ ॥ एवं दक्षिणतः पश्चाद्वामभागे चेति प्रतिदिग्भागेऽनु-
लोमविलोमतया द्विर्द्विरिति अष्टवारं व्यापकं भवति ॥ इति देवताप्रीतिकरो मूलव्यापको
नवमः ॥ ९ ॥ मूलमुच्चार्य हृदयाय नमः । एवं प्रत्यङ्गं सर्वमूलमुच्चार्य षडङ्गेषु न्यसेत् ॥ इति
मूलषडङ्गन्यासस्त्रैलोक्यवशकरो दशमः ॥ १० ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी
तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा ॥ १ ॥ सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्य
स्त्वतिसुन्दरी ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ २ ॥ यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदस-
द्वाखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥३॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा
जगत्पातात्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ ४ ॥ विष्णुः

शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥५॥
आद्यं वाग्बीजं कृष्णतरं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसामि । इति सर्वाङ्गे न्यसेत् ॥ शूलेन पाहि नो
देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ १ ॥ प्राच्यां रक्ष
प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २ ॥ सौम्यानि
यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ३ ॥
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसंगीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वतः ॥ ४ ॥
द्वितीयं मायाबीजं सूर्यसदृशं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसेत् ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥१॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु
नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥२॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं
पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥३॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा
घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ ४ ॥ असुराऽसृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥

शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ ५ ॥ तृतीयं कामबीजं स्फटिकाभं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसामि । इति सर्वाङ्गे विन्यसेत् ॥ इति सूक्तादिबीजत्रयन्यासः सर्वानिष्टहरः सर्वाभीष्टदः सर्वरक्षाकरश्चैकादशः ॥ ११ ॥

अथ मूलषडङ्गन्यासः ॥ ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । ततोऽक्षरन्यासः । ॐ ऐं नमः शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे । ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे । ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे । ॐ मुं नमः वामकर्णे । ॐ डां नमः दक्षिणनासायाम् । ॐ यैं नमः वामनासायाम् । ॐ विं नमः मुखे । ॐ च्चें नमः गुह्ये । एवं विन्यस्याष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात् । अथाङ्गन्यासः । ॐ ऐं प्राच्यै नमः । ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः । ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः । ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः । ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः । ॐ क्लीं वायव्यै नमः । ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः । ॐ विच्चे ईशान्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः ॥

अथ ध्यानम् । खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥ अक्षस्रक्परशू गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥ शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥ मानसोपचारैः सम्पूज्य ॥ ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मां सिद्धिदा भव ॥१॥ इति मालां प्रार्थ्य । ॐ सिद्ध्यै नमः । इति मालां नत्वा जपेत् । मन्त्रार्थस्तु महासरस्वत्यादिरूपे चित्सदानन्दमये चण्डिके त्वां ब्रह्मविद्याप्राप्त्यर्थं वयं सर्वदा ध्यायामः ।

इत्यर्थानुसन्धानपूर्वकं १०८ नवार्णमन्त्रं जप्त्वा षडङ्गन्यासं कृत्वा रात्रिसूक्तं जपेत्। तद्वैदिकं पौराणं वा ॥ तत्रेदं वैदिकम्। रात्रीति सूक्तस्य कुशिक ऋषिः। रात्रिर्देवता। गायत्रीच्छन्दः। श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठादौ जपे विनियोगः ॥

ॐ रात्रीव्यख्यदायतीपुरुत्रादेव्य१क्षभिः ॥ विश्वाअधिश्रीयोऽधित ॥ ओर्वप्राअमर्त्यानिवतोदेव्यु१द्वतः ॥ ज्योतिषाबाधतेतमः ॥ निरुस्वसारमस्कृतोषसंदेव्यायती ॥ अपेदुहासतेतमः ॥ सानोअद्ययस्यावयंनितेयामन्नविक्ष्महि ॥ वृक्षेनवसतिंवयः ॥ निग्रामासोअविक्षतनिपद्वन्तोनिपक्षिणः ॥ निश्येनासश्चिदर्थिनः ॥ यावयावृक्यं१वृकंयवयस्तेनमूर्म्ये ॥ अथानःसुतराभव ॥ उपमापेपिशत्तमःकृष्णंव्यक्तमस्थित ॥ उषऋणेवयातय ॥ उपतेगाइवाकरंवृणीष्वदुहितर्दिवः ॥ रात्रिस्तोमन्नजिग्युषे ॥ १ ॥ इति ॥

अथ पौराणं रात्रिसूक्तम् ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्-कारः स्वरात्मिका ॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥२॥ अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥ त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ ३ ॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ ४ ॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥५॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ महामोहा च भवती महादेवी महेश्वरी ॥६॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ ७ ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्ति-रेव च ॥ ८ ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डीपरिघायुधा ॥९॥ सौम्यासौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्वातिसुन्दरी ॥ परापराणां परमा

त्वमेव परमेश्वरी ॥ १० ॥ यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥ ११ ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ १२ ॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ १३ ॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ १४ ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥१५॥ पौराणं रात्रिसूक्तम् ॥ अथ पल्लवयोजना सम्पुटीकरणपाठज्ञापकं यथा ॥ पल्लवप्रकारः सर्वमंगल० इति मन्त्रपल्लवे ॐ मार्कण्डेय उवाच सर्वमंगल० इति प्रणवादिप्रतिसप्तशतीमन्त्रान्ते पल्लवमन्त्रं पठेदिति ॥ अथ योजनाप्रकारः ॥ ॐ सर्वमं० ॥ मार्कण्डेय उवाच—इति सप्तशतीप्रतिमन्त्रादौ सप्रणवं योजनामन्त्रं पठेत् ॥ अथ सम्पुटीकरणप्रकारः ॥ ॐ शरण्ये० ॥ मार्कण्डेय उवाच शरण्ये० एवं सप्तशतीमन्त्रादौ मन्त्रान्ते च सम्पुटमन्त्रं पठेत् । अयं तु शान्तिकपौष्टिकवशीकरणादिशुभकर्मसु ॥ शत्रु-

विद्रावणोच्चाटनाद्युग्रकर्मसु तु तथा ॐ ह्रुं फट् मार्कण्डेय उवाच फट् ह्रुं ॐ इति सप्तशतीमन्त्रादौ विद्रावणबीजानि पठित्वा तान्येवान्ते विलोमानि पठेदिति ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ अस्य श्री-सप्तशतीस्तोत्रमालामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि । श्रीमहा-कालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः । नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः । रक्तदन्तिकादुर्गा-भ्रामर्यो बीजानि । अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि । ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि । मम सकलकामना-सिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ तत्रादौ न्यासाः ॥ ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघा-युधा ॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥

अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि० ॥ ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा० हृदयाय नमः । ॐ शूलेन पाहि नो देवि० शिरसे स्वाहा । ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च० शिखायै वषट् । ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि० कवचाय हुम् । ॐ खड्गशूलगदादीनि० नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे० अस्त्राय फट् ॥ अथ चण्डीपश्चाक्षरमन्त्रन्यासः ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः । ॐ चं शिरसे स्वाहा । ॐ डिं शिखायै वषट् । ॐ कां कवचाय हुम् । ॐ यैं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्रीं चण्डिकायै अस्त्राय फट् । अथ चक्रन्यासः ॥ ॐ शम्भुतेजोज्वलज्वालामालिनि पावके ह्रां नन्दायै अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ शम्भुतेजोज्वलज्वालामालिनि पावके ह्रीं रक्तदन्तिकायै तर्जनीभ्यां नमः । ॐ शम्भुतेजोज्वलज्वालामालिनि पावके ह्रूं शाकम्भर्यै मध्यमाभ्यां नमः । ॐ शम्भुतेजोज्वलज्वाला-

मालिनि पावके हैं दुर्गायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ शम्भुतेजोज्वलज्वालामालिनि पावके ह्रौं भीमायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ शम्भुतेजोज्वलज्वालामालिनि पावके ह्रः भ्रामर्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादिषडंगन्यासः ॥

अथ ध्यानम् ॥ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ॥ हस्तैश्चक्रधरालिखेटाविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मनसा सम्पूज्य गुरुदेवतात्मैक्यं विभाव्यार्थानुसन्धानपूर्वकं मध्यमस्वरेण चण्डीस्तवं पठेत् ॥

प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । महाकाली देवता । गायत्री छन्दः । नन्दा शक्तिः । रक्तदन्तिका बीजम् । अग्निस्तत्त्वम् । ऋग्वेदः स्वरूपम् । श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थं धर्मार्थं जपे विनियोगः ॥

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांग-

भूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच ॥१॥ सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ॥ निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम ॥ २ ॥ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः ॥ स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ ३ ॥ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः ॥ सुरथो नाम राजाऽभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ॥४॥ तस्य पालयतः सम्यक्प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ॥ बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा ॥ ५ ॥ तस्य तैरभवद्युद्धमति-प्रबलदण्डिनः ॥ न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥ ६ ॥ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ॥ आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥ ७ ॥ अमात्यैर्बलिभि-र्दुष्टैर्बलस्य दुरात्मभिः ॥ कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ८ ॥ ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः ॥ एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥ ९ ॥ स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः ॥ प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥ १० ॥ तस्थौ कञ्चित्स

कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ॥ इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥ ११ ॥ सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टमानसः ॥१२॥ मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥ मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तै-र्धर्मतः पाल्यते न वा ॥१३॥ न जाने स प्रधानो मे शूरो हस्ती सदामदः ॥ मम वैरिवशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते ॥ १४ ॥ ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ॥ अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् ॥ १५ ॥ असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥ सञ्चितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति ॥१६॥ एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ॥ १७ ॥ स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥ सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे ॥१८॥ इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् ॥१९॥ वैश्य उवाच ॥२०॥ समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥ पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः ॥२१॥ विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे

शूरहस्ती, इति पाठः ।

धनम् ॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः ॥ २२ ॥ सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशला-
कुशलात्मिकाम् ॥ प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः ॥ २३ ॥ किं नु तेषां गृहे
क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ॥ २४ ॥ कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥ २५ ॥
राजोवाच ॥२६॥ यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥२७॥ तेषु किं भवतः स्नेहमनु-
बध्नाति मानसम् ॥ २८ ॥ वैश्य उवाच ॥ २९ ॥ एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥ किं
करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ॥ ३० ॥ यैः सन्त्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥
पतिस्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः ॥ ३१ ॥ किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥
यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ॥३२॥ तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥३३॥
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥३४॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ३५ ॥ ततस्तौ सहितौ
विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥३६॥ समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ॥३७॥ कृत्वा तु
तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥ उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥ ३८ ॥

राजोवाच ॥ ३९ ॥ भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ ४० ॥ दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना ।.४१॥ ममत्वं गतराज्यस्य राज्यांगेष्वखिलेष्वपि ॥ जानतोऽपि यथाऽज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम ॥ ४२ ॥ अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥ स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्याति ॥४३॥ एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥ दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ ॥ ४४ ॥ तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥ ४५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ४६ ॥ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥ विषयाश्च महाभाग यान्ति चैवं पृथक्पृथक् ॥ ४७ ॥ दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ॥ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ॥ ४८ ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किन्तु ते न हि केवलम् ॥ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ॥ ४९ ॥ ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥ मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ॥५०॥ ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा॥५१॥

मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान्प्रति॥ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान्किं न पश्यसि॥५२॥ तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्त्ते निपातिताः ॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा ॥ ५३ ॥ तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥ महामाया हरेश्चैषा तया संमोह्यते जगत् ॥५४॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥५५॥ तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ॥ ५६ ॥ सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥ ५७ ॥ संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ५८ ॥ राजोवाच ॥५९॥ भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ॥६०॥ यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥ ६१ ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥६२॥ ऋषिरुवाच ॥६३॥ नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥६४॥ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ॥६५॥ देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥ उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याऽप्यभिधीयते ॥ ६६ ॥ योगनिद्रां यदा विष्णुर्जग-

त्येकार्णवीकृते ॥ आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान्प्रभुः ॥ ६७ ॥ तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥ विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ ॥ ६८ ॥ स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥ दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् ॥ ६९ ॥ तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयः स्थितः ॥ विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम् ॥७०॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ७१ ॥ ब्रह्मोवाच ॥७२॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ ७३ ॥ अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥ त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ ७४ ॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥७५॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥७६॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ महामोहा च भवती महादेवी महेश्वरी ॥७७॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ काल-

रात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥७८॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ७९ ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ ८०॥ सौम्यासौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥८१॥ यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥८२॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥८३॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥८४॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥८५॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ ८६ ॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥८७॥ ऋषिरुवाच ॥८८॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ॥ ८९ ॥ नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ

ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ॥ ९० ॥ उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥ एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ ॥९१॥ मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ॥ ९२ ॥ समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान्हरिः ॥ पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः ॥९३॥ तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥९४॥ उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥९५॥ श्रीभगवानुवाच ॥९६॥ भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥९७॥ किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मया ॥९८॥ ऋषिरुवाच ॥९९॥ वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान्कमलेक्षणः ॥१००॥ आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥१॥ ऋषिरुवाच ॥२॥ तथेत्युक्त्वा भगवता शंखचक्रगदाभृता ॥ कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ ३ ॥ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ॥ प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ ऐं ॐ ॥ १०४ ॥ श्रीमार्क-

---

१ इतिशब्दो हरेल्लक्ष्मीं वधः कुलविनाशकः । अध्यायो हरते प्राणान्मार्कण्डेयादिकं वदेत् ॥

ण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये प्रथमः ॥१॥ उवाचमन्त्राः ॥१४॥ अर्धमन्त्राः ॥२४॥ श्लोकमन्त्राः ॥६६॥ एवं मन्त्राः ॥१०४॥

प्रथमाध्याय की वैदिक आहुति—एक पान पर शाकल्य, १ कमलगट्टा घृताक्त, १ सुपारी, २ लोंग, १ छोटी इलायची, और शहद ये सब चीजें स्रुची में रखकर खड़ा होकर मंत्र बोलना--

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा। अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनी १०० स्वाहा॥ बाद में स्रुवे से घी छोड़ना और यह मन्त्र बोलना—ॐ घृतं घृतपावानः पिबतव्वसां वसा पावानः। पिबतांतरिक्षस्य हविरसि स्वाहा प्रदिश आदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा॥ प्रथम अध्याय में विशेष मधु ही है।

तांत्रक आहुति—उपर्युक्त सामान लेकर ॐ सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै ऐं बीजाधिष्ठात्र्यै महाकालिकाय महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु। ऐसा बोलकर जल छोड़ना।❀

❀ यह प्रति-अध्याय के अन्त में करना।

अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

मध्यमचरितस्य विष्णुर्ऋषिः । महालक्ष्मीर्देवता । उष्णिक्छन्दः । शाकम्भरी शक्तिः । दुर्गा बीजम् । वायुस्तत्त्वम् । यजुर्वेदः स्वरूपम् । महालक्ष्मीप्रीत्यर्थं अर्थार्थे जपे विनियोगः ॥

अथ ध्यानम् ॥ अक्षस्रक्परशू गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां दण्डं शक्तिमासिञ्च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥ शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ॥ महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥ २ ॥ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम् ॥ जित्वा च सकलान्देवा-निन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ३ ॥ ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम् ॥ पुरस्कृत्य गता-स्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ४ ॥ यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् ॥ त्रिदशाः कथयामा-सुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ५ ॥ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च ॥ अन्येषां चाधि-

कारान् सः स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६ ॥ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ॥ विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥७॥ एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम् ॥ शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८ ॥ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ॥ चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ ९ ॥ ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः ॥ निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च ॥ १० ॥ अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ॥ निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥ ११ ॥ अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम् ॥ ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥१२॥ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ॥ एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १३ ॥ यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ॥ याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥१४॥ सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ॥ वारुणेन च जंघोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥१५॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदंगुल्योऽर्कतेजसा ॥ वसूनां च करांगुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ १६ ॥ तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा ॥

नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥ १७ ॥ भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च ॥ अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥ १८ ॥ ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् ॥ तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ॥ १९ ॥ ततो देवा ददुस्तस्यै स्वानि स्वान्यायुधानि च ॥ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ॥ २० ॥ चक्रं च दत्तवान्कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः ॥ शंखं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ॥ २१ ॥ मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥ वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः ॥ २२ ॥ ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात् ॥ कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ ॥ २३ ॥ प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन्दिवाकरः ॥ २४ ॥ कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्यै चर्म च निर्मलम् ॥ क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे ॥ २५ ॥ चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥ अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान्सर्वबाहुषु ॥२६॥ नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ अंगुलीयकरत्नानि समस्तास्वंगुलीषु च ॥२७॥ विश्व-

कर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम् ॥ २८ ॥
अम्लानपंकजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥ अददज्जलधिस्तस्यै पंकजं चातिशोभनम् ॥२९॥
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः ॥३०॥
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम् ॥३१॥
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥ संमानिता ननादोच्चैः साऽट्टहासं मुहुर्मुहुः ॥ ३२ ॥
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् ॥३३॥
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ॥३४॥
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः ॥ ३५ ॥
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ॥३६॥
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः ॥ ३७ ॥
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥ पादाक्रान्त्याऽऽनतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्

॥ ३८ ॥ चोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम् ॥ दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम् ॥ ३९ ॥ ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपित-दिगन्तरम् ॥ ४० ॥ महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरंग-बलान्वितः ॥ ४१ ॥ रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥ अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः ॥ ४२ ॥ पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे ॥ ४३ ॥ गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परवारितः ॥ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मि-न्नयुध्यत ॥ ४४ ॥ बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः ॥ ४५ ॥ अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ॥ युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः ॥ ४६ ॥ कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ हयानां च वृतो युद्धे तत्राभू-न्महिषासुरः ॥ ४७ ॥ तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः ॥ ४८ ॥ केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे ॥ देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां

हन्तुं प्रचक्रमुः ॥४९॥ सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ लीलयैव प्रचिच्छेद निज-
शस्त्रास्त्रवर्षिणी ॥५०॥ अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥ मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्य-
स्त्राणि चेश्वरी ॥ ५१ ॥ सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ॥ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव
हुताशनः ॥५२॥ निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥ त एव सद्यः सम्भूता गणाः
शतसहस्रशः ॥५३॥ युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥ नाशयन्तोऽसुरगणान् देवी-
शक्त्युपबृंहिताः ॥५४॥ अवादयन्त पटहान् गणाः शंखांस्तथापरे ॥ मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मि-
न्युद्धमहोत्सवे ॥५५॥ ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥ खड्गादिभिश्च शतशो
निजघान महासुरान् ॥५६॥ पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ॥ असुरान् भुवि
पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत् ॥५७॥ केचिद् द्विधाकृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥ विपो-
थिता निपातेन गदया भुवि शेरते ॥५८॥ वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥ केचि-
न्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ॥५९॥ निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥

सेनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः ॥६०॥ केषाञ्चिद्बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥
शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ॥ ६१ ॥ विच्छिन्नजंघास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥
एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधाकृताः॥६२॥ छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः॥
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ६३ ॥ कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ॥
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६४ ॥ पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा ॥
अगम्या साऽभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥ ६५ ॥ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः ॥
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥६६॥ क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका ॥
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥ ६७ ॥ स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः ॥
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥ ६८ ॥ देव्या गणैश्च कृतं युद्धं तथाऽसुरैः ॥ यथैषां
तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥६९॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
द्वितीयः ॥ २ ॥ उवाचमन्त्राः ॥१॥ श्लोकमन्त्राः ॥ ६८ ॥ एवं ॥६९॥ एवमादितः ॥ १७३ ॥

द्वितीयाध्याय की वैदिक आहुति—

प्रथमाध्याय की आहुति के सामान में शहद को छोड़कर वही सामान लेकर उन मन्त्रों से पूर्व आहुति देना।

तांत्रिक आहुति—पूर्वोक्त सामान लेकर-ह्रीं सांगायै० श्रीमहालक्ष्म्यै अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै लक्ष्मी-बीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणे० इससे जल छोड़ना।

अथ तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ ध्यानम्॥ उद्यद्भानुसहस्रकान्तमरुणक्षौमां शिरोमालिकां रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वराम्॥ हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं देवीं बद्धहिमांशुरत्न-मुकुटां वन्दे सुमन्दस्मिताम्॥ ३॥

ऋषिरुवाच॥१॥ निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः॥ सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्॥२॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः॥ यथा मेरुगिरेः शृंगं तोयवर्षेण तोयदः॥३॥ तस्य च्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्॥ जघान तुरगान्बाणैर्यन्तारं चैव

वाजिनाम् ॥ ४ ॥ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम् ॥ विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥ ५ ॥ स छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ॥ अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ६ ॥ सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ॥ आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥७॥ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ॥ ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥८॥ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ॥ जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥९॥ दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत ॥ तेन तच्छतधा नीतं शूलं स च महासुरः ॥ १० ॥ हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ॥ आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥ ११ ॥ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम् ॥ हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥१२॥ भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ॥ चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साऽच्छिनत् ॥ १३ ॥ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः ॥ बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥१४॥ युध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं

गतौ ॥ युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥ १५ ॥ ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा ॥ करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥१६॥ उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः ॥ दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥ १७ ॥ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्॥ बाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्॥१८॥ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्॥ त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥१९॥ बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः॥ दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥२०॥ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः ॥ माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥२१॥ काँश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्॥ लांगूलताडितांश्चान्यान् श्रृंगाभ्यां च विदारितान् ॥२२॥ वेगेन काँश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च ॥ निःश्वासपवनेनान्यान्पातयामास भूतले॥२३॥ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ॥ सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥ २४॥ सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः ॥ श्रृंगाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥२५॥ वेगभ्रमणविक्षुण्णा

मही तस्य व्यशीर्यत ॥ लांगूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥२६॥ धुतशृंगविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः ॥ श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥ २७ ॥ इति क्रोध-समाध्मातमापतन्तं महासुरम् ॥ दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाऽकरोत् ॥ २८ ॥ सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम् ॥ तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥२९॥ ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः ॥ छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥३०॥ तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः ॥ तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः ॥३१॥ करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च ॥ कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥ ३२ ॥ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः ॥ तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥३३॥ ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम् ॥ पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥ ३४ ॥ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः ॥ विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥३५॥ सा च तान्प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः ॥ उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥ ३६ ॥

देव्युवाच ॥ ३७ ॥ गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ॥ मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥ ३८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३९ ॥ एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽरूढा तं महासुरम् ॥ पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥४०॥ ततः सोऽपि पदाक्रान्तस्तया निजमुखात्तदा ॥ अर्धनिष्क्रान्त एवासीद्देव्या वीर्येण संवृतः ॥ ४१ ॥ अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः ॥ तयो महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥४२॥ ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत् ॥ प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥४३॥ तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः ॥ जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ४४ ॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये तृतीयः ॥३॥ उवाच०॥३॥ श्लोक०॥४१॥ एवं ॥४४॥ एवमादितः ॥४१७॥

तृतीयाध्याय की वैदिक आहुति में सामान दूसरी अध्याय का ही है केवल भैंसा गूगल विशेष है। रीति वही है।

तांत्रिक आहुति—ॐ जयन्ती सांगायै० लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

ॐ जय जय मार्कण्डेय० इससे जल छोड़ना।

अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ ध्यानम्—कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ॥ सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं ध्याये दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपतिनुतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥ ४ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ॥ तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ॥ तामम्बिकामखिल-देवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ ३ ॥ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ॥ सा चण्डिकाऽखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥४॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ॥ श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय

देवि विश्वम् ॥५॥ किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत् किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ॥ किं चाहवेषु चरितानि तवातियानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥ हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ॥ सर्वाश्रयाऽखिलमिदं जगदंशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥ यस्याः समस्तसुरतासमुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ॥ स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥८॥ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ॥ मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि ॥९॥ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ॥ देवि त्रयी भगवती भवभावनाय वार्ताऽसि सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ १० ॥ मेधाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसंगा ॥ श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥११॥ ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ॥ अत्यद्भुतं प्रहृतमा-

त्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥१२॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशांकसदृशच्छवि यन्न सद्यः ॥ प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं कैर्जीव्यते हि
कुपितान्तकदर्शनेन ॥ १३ ॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती
कुलानि ॥ विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ १४ ॥ ते सम्मता
जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदति बन्धुवर्गः ॥ धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥१५॥ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः
प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि
तेन ॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥१७॥ एभिर्हतैर्जगदुपैति
सुखं तथैते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ॥ संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति
नूनमहितान्विनिहंसि देवि ॥ १८ ॥ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु

यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेषु साध्वी ॥ १९ ॥ खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ॥ यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥२०॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ॥ वीर्यं च हन्तृहृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥२१॥ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ २२ ॥ त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ॥ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ २३ ॥ शूलेन[1] पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ २४ ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष

---

१ होमे कवचमंत्राणां चतुर्णां आहुतिर्न दातव्या, कात्यायनीतन्त्रे निषेधात् । मंत्राणां पाठमात्रम्–आहुतिस्तु "नमश्चण्डिकायै स्वाहा" इति मंत्रेण दातव्या ।

दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५ ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्माँस्तथा भुवम् ॥ २६ ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥२७॥ ऋषिरुवाच ॥२८॥ एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः ॥ अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥२९॥ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैः सुधूपिता ॥ प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान्सुरान् ॥३०॥ देव्युवाच ॥३१॥ व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥३२॥ देवा ऊचुः ॥३३॥ भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते ॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ॥३४॥ यदि चापि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि ॥ संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ ३५ ॥ यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥ तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम् ॥ ३६ ॥ वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाऽम्बिके ॥३७॥ ऋषिरुवाच ॥३८॥ इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽत्मनः ॥ तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥ ३९ ॥ इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता

सा यथा पुरा ॥ देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥ ४० ॥ पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाऽभवत् ॥ वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ४१ ॥ रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणि ॥ तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते ॥ ह्रीं ॐ ॥४२॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थः ॥४॥ उवाचमन्त्राः ॥५॥ अर्धमन्त्राः ॥ २ ॥ श्लोकमन्त्राः ॥ ३५ ॥ एवं ॥ ४२ ॥ एवमादितः ॥ २५९ ॥

चतुर्थाध्याय की वैदिक आहुति में सब सामान पूर्वोक्त है, केवल मिश्री पायस विशेष है।

तांत्रिक आहुति—ह्रीं जयन्ती सांगायै० श्रीमहालक्ष्म्यै अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

ॐ जय जय मा० इससे जल छोड़ना।

अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

उत्तमचरितस्य रुद्र ऋषिः। महासरस्वती देवता। अनुष्टुप् छन्दः। भीमा शक्तिः। भ्रामरी बीजम्। सूर्यस्तत्त्वम्। सामवेदः स्वरूपम्। महासरस्वतीप्रीत्यर्थं कामार्थे जपे विनियोगः॥

अथ ध्यानम् ॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ५ ॥

ॐ क्लीं ऋषिरुवाच ॥१॥ पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः ॥ त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥२॥ तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् ॥ कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥३॥ तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च ॥ तता देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ ४ ॥ हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ॥ महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥ ५ ॥ तयाऽस्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः ॥ भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥६॥ इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ॥ जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ ७ ॥ देवा ऊचुः ॥ ८ ॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ९ ॥ रौद्रायै नमो नित्यायै

गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ॥ ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ १० ॥ कल्याण्यै प्रणतामृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः ॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥११॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ॥ ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ १२ ॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ॥ नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ नमस्तस्यै ॥ १४॥ नमस्तस्यै ॥१५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ॥ नमस्तस्यै ॥१७॥ नमस्तस्यै ॥ १८ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २० ॥ नमस्तस्यै ॥ २१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २३ ॥ नमस्तस्यै ॥ २४ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २६ ॥ नमस्तस्यै ॥ २७ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३०॥ नमस्तस्यै

नमो नमः ॥ ३१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥३२॥ नमस्तस्यै ॥ ३३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३८ ॥ नमस्तस्यै॥३९॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४०॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४२ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४३॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४४ ॥ नमस्तस्यै ॥४५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४६॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४७ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४८ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५० ॥ नमस्तस्यै ॥ ५१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५३ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५४ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५५॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥५६॥ नमस्तस्यै॥५७॥

नमस्तस्यै नमो नमः ॥५८॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६२ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु दया-रूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥७०॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥७१॥ नमस्तस्यै ॥७२॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥७४॥ नमस्तस्यै ॥ ७५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७६ ॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ॥ भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥७७॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् ॥ नमस्तस्यै ॥ ७८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८० ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी

शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ८१ ॥ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ८२ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ८३ ॥ एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ॥ स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ ८४ ॥ साऽब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ॥ शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताऽब्रवीच्छिवा ॥ ८५ ॥ स्तोत्रं ममैतत्क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः ॥ देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥ ८६ ॥ शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताऽम्बिका ॥ कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ ८७ । तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाऽभूत्सापि पार्वती ॥ कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥ ८८ ॥ ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम् ॥ ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८९ ॥ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता साऽतीव सुमनोहरा ॥ काऽप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥ ९० ॥ नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम् ॥ ज्ञायतां काऽप्यसौ देवी गृह्यतां

चासुरेश्वर ॥ ९१ ॥ स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशास्त्विषा ॥ सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति ॥ ९२ ॥ यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥ ९३ ॥ ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ॥ पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥ ९४ ॥ विमानं हंससंयुक्तमेतात्तिष्ठति तेऽङ्गने ॥ रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥ ९५ ॥ निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥ किंजल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥ ९६ ॥ छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्त्रावि तिष्ठति ॥ तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥ ९७ ॥ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता ॥ पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥ ९८ ॥ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः ॥ वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥ ९९ ॥ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते ॥ स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥१००॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः ॥ प्रेषयामास सुग्रीवं

दूतं देव्या महासुरम् ॥ २ ॥ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम ॥ यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ ३ ॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने ॥ तां च देवीं ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥ ४ ॥ दूत उवाच ॥ ५ ॥ देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ॥ दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥ ६ ॥ अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ॥ निर्जिताऽखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥ ७ ॥ मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः ॥ यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥ ८ ॥ त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः ॥ तथैव गजरत्नं च हृतं देवेन्द्रवाहनम् ॥ ९ ॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः ॥ उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ॥ १० ॥ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च ॥ रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥ ११ ॥ स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम् ॥ सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥ १२ ॥ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम् ॥ भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः ॥ १३ ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे

मत्परिग्रहात् ॥ एतद्बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥१४॥ ऋषिरुवाच ॥१५॥ इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ ॥ दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥ १६ ॥ देव्युवाच ॥१७॥ सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित्त्वयोदितम् ॥ त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥१८॥ किन्त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् ॥ श्रूयतामल्प-बुद्धित्वात् प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥१९॥ यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति ॥ यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ १२० ॥ तदाऽऽगच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महाबलः ॥ मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥२१॥ दूत उवाच ॥ २२ ॥ अव-लिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः ॥ त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ॥२३॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि ॥ तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥ २४ ॥ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे ॥ शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥२५॥ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ केशाकर्षणनिर्धूतगौ-

रवा मागमिष्यसि ॥२६॥ देव्युवाच ॥२७॥ एवमेतद्बली शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥ किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥२८॥ स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः ॥ तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥ १२९ ॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमः ॥५॥ उवाच ॥९॥ त्रिपान्मन्त्राः ॥६६॥ श्लोकमन्त्राः ॥५४॥ एवं ॥ १२९ ॥ एवमादितः ॥३८८॥

पंचमाध्याय की वैदिक आहुति में और सब सामान पूर्ववत् है केवल कपूर, पुष्प, ऋतुफल विशेष है।

तांत्रिक आहुति—क्लीं जयन्ती० सांगायै० धूम्राक्ष्यै विष्णुमायादिचतुर्विंशतिदेवताभ्यो महाहुतिं स० नमः स्वाहा। ॐ जय जय मा० इससे जल छोड़ना।

अथ षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ ध्यानम् ॥ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावलीं भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम् ॥ मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥ ६ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ॥ समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥२॥ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ॥ स क्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥३॥ हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः ॥ तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥४॥ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठते परः ॥ स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ ५ ॥ ऋषिरुवाच ॥६॥ तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः ॥ वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥ ७ ॥ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् ॥ जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥८॥ न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति ॥ ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥९॥ देव्युवाच ॥१०॥ दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः ॥ बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥११॥ ऋषिरुवाच ॥१२॥ इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः ॥ हूंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका तदा ॥१३॥ अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका ॥ ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः

॥ १४ ॥ ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ॥ पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥१५॥ कांश्चित्करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ॥ आक्रान्त्या चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान् ॥१६॥ केषाञ्चित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी ॥ तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान्पृथक् ॥ १७ ॥ विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे ॥ पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥ १८ ॥ क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ॥ तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥१९॥ श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम् ॥ बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥२०॥ चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः ॥ आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥२१॥ हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारतौ ॥ तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥२२॥ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि ॥ तदाऽशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥२३॥ तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ॥ शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॥ २४ ॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके

मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये षष्ठः ॥ ६ ॥ उवाच० ॥ ४ ॥ अर्ध० ॥ ० ॥ श्लोकमन्त्राः ॥ २० ॥ एवं ॥ २४ ॥ एवमादितः ॥ ४१२ ॥

षष्ठाध्याय की वैदिक आहुति पूर्वोक्त है केवल भोजपत्र विशेष है ।

तांत्रिक आहुति—क्लीं जयन्तीं सांगायै० शताक्ष्यै धूम्रलोचनायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।

ॐ जय जय मा० । इससे जल छोड़ना ।

अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

अथ ध्यानम् ॥ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ॥ कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चूडिकां रक्तवस्त्रां मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम् ॥ ७ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः ॥ चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ २ ॥ ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् ॥ सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥३॥ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः ॥ आकृष्टचापासिधरास्त-

शान्ये तत्समीपगाः ॥४॥ ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति ॥ कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा ॥ ५ ॥ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद् द्रुतम् ॥ काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ॥ ६ ॥ विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा ॥ द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा ॥ ७ ॥ अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा ॥ निमग्नारक्तनयना नादापूरितादिङ्मुखा ॥८॥ सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान् ॥ सैन्ये तत्र सुरारी-णामभक्षयत तद्बलम् ॥ ९ ॥ पार्ष्णिग्राहांकुशग्राहयोधघण्टासमन्वितान् ॥ समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥ १० ॥ तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह ॥ निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यातिभैरवम् ॥ ११ ॥ एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम् ॥ पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसाऽन्यमपोथयत् ॥ १२ ॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः ॥ मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥ १३ ॥ बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम् ॥ ममर्दा-भक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तदा ॥ १४ ॥ असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः ॥

जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ॥ १५ ॥ क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां निपातितम् ॥
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥१६॥ शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः ॥
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः॥१७॥तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्॥
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥ १८ ॥ ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी ॥
काली करालवदना दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥ १९ ॥ उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत ॥
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाऽच्छिनत् ॥२०॥ अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं
निपातितम् ॥ तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥ २१ ॥ हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा
चण्डं निपातितम् ॥ मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥२२॥ शिरश्चण्डस्य काली
च गृहीत्वा मुण्डमेव च ॥ प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥ २३ ॥ मया तवा-
त्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू ॥ युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥ २४ ॥
ऋषिरुवाच ॥२५॥ तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ उवाच कालीं कल्याणी

ललितं चण्डिकावचः ॥२६॥ यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता॥ चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवी भविष्यसि ॥२७॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सप्तमः ॥ ७ ॥ उवाच ॥ २ ॥ श्लोकाः ॥ २५ ॥ एवं ॥ २७ ॥ एवमादितः ॥ ४३९ ॥

सप्तमाध्याय की वैदिक आहुति पूर्वोक्त है, केवल दो जायफल विशेष लेने चाहिए ।

तांत्रिक आहुति—क्लीं जयन्ती० सांगायै० कालीचामुण्डादेव्यै कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । ॐ जय जय मा० इससे जल छोड़ना ।

अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

अथ ध्यानम् ॥ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशमुख्यचापहस्ताम् ॥ अणि-मादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥ ८ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ॥ बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ २ ॥ ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् ॥ उद्योगं सर्वसैन्यानां

दैत्यानामादिदेश ह ॥ ३ ॥ अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ॥ कम्बूनां चतुरशीति-
र्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥ ४ ॥ कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै ॥ शतं कुलानि
धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ५ ॥ कालका दौर्हृदा मौर्याः कालिकेयास्तथासुराः ॥
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ६ ॥ इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशा-
सनः ॥ निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ७ ॥ आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्य-
मतिभीषणम् ॥ ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥८॥ ततः सिंहो महानादमतीव
कृतवान्नृप ॥ घण्टास्वनेन तन्नादानम्बिका चोपबृंहयत् ॥ ९ ॥ धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादा
पूरितदिङ्मुखा ॥ निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारिताऽऽनना ॥ १० ॥ तं निनादमुप-
श्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् ॥ देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥११॥ एतस्मिन्नन्तरे
भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ॥ भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥ १२ ॥ ब्रह्मेशगुह-
विष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ॥ शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥ १३ ॥ यस्य

देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम् ॥ तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ ॥ १४ ॥ हंस-
युक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ॥ आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणीत्यभिधीयते ॥ १५ ॥
माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी ॥ महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥ १६ ॥
कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ॥ योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥१७॥
तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता ॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥ १८ ॥
यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ॥ शक्तिः साऽप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम्
॥ १९ ॥ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ॥ प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः
॥ २० ॥ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता ॥ प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा
॥ २१ ॥ ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः ॥ हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह
चण्डिकाम् ॥ २२ ॥ ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा ॥ चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा
शिवाशतनिनादिनी ॥ २३ ॥ सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता ॥ दूतत्वं गच्छ भगवन्

पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥२४॥ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावातिगर्वितौ ॥ ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥ २५ ॥ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजाः ॥ यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥२६॥ बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकांक्षिणः ॥ तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ २७ ॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् ॥ शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥ २८ ॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्य तं महासुराः ॥ अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥२९॥ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ॥ ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥ ३० ॥ सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान् ॥ चिच्छेद लीलयाध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥३१॥ तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान् ॥ खट्वांगपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा ॥ ३२ ॥ कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः ॥ ब्रह्माणी चाऽकरोच्छत्रून्येन येन स्म धावति ॥३३॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ॥ दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना ॥३४॥ ऐन्द्री

कुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः ॥ पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥ ३५ ॥ तुण्ड-
प्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ॥ वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥ ३६ ॥ नखै-
र्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान् ॥ नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥३७॥
चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ॥ पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ॥३८॥
इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् ॥ दृष्ट्वाऽभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥ ३९ ॥
पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान्मातृगणार्दितान् ॥ योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः
॥ ४० ॥ रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः ॥ समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणो महासुरः
॥ ४१ ॥ युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः ॥ ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत्
॥ ४२ ॥ कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्परा
क्रमाः ॥ ४३ ॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः ॥ तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्य-
बलविक्रमाः ॥ ४४ ॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः ॥ समं मातृभिरत्युग्रशस्त्र-

पातातिभीषणम् ॥ ४५ ॥ पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा ॥ ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥ ४६ ॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह ॥ गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥ ४७ ॥ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः ॥ सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥ ४८ ॥ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथाऽसिना ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥ ४९ ॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत्पृथक् ॥ मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥५०॥ तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि ॥ पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥ ५१ ॥ तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत् ॥ व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥ ५२ ॥ तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरम् ॥ उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥ ५३ ॥ मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान् ॥ रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥ ५४ ॥ भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान् । एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ ५५ ॥ भक्ष्यमाणा-

स्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे ॥ इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥५६॥
मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ॥ ५७॥ ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डि-
काम् ॥ न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि ॥५८॥ तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव
शोणितम् ॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति ॥ ५९ ॥ मुखे समुद्गता येऽस्या
रक्तपातान्महासुराः ॥ तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ॥ ६० ॥ देवी शूलेन
वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥ जघान रक्तबीजं तं चामुण्डा पीतशोणितम् ॥ ६१ ॥ स
पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंघसमाहतः ॥ नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ॥ ६२ ॥ ततस्ते
हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥ तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ ६३ ॥ श्रीमार्क-
ण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये अष्टमः ॥ ८ ॥ उवाच० ॥ १ ॥ अर्ध० ॥ १ ॥
श्लोकाः ॥ ६१ ॥ एवं ॥ ६३ ॥ एवमादितः ॥ ५०२ ॥ ॥

अष्टमाध्याय की वैदिक आहुति पूर्वोक्त ही है केवल लालचन्दन विशेष है ।

तांत्रिक आहुति—क्लीं जयन्ती० सांगायै० रक्ताक्ष्यै अष्टमातृसहितायै महाहुतिं स० नमः स्वाहा ।
ॐ जय जय मा० जल छोड़ना ।

अथ नवमोऽध्यायः॥

ध्यानम् ॥ बन्धूककाञ्चननिभां रुचिराक्षमालां पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः ॥ बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणां त्रिनेत्रामर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥ ९ ॥

राजोवाच ॥ १ ॥ विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम ॥ देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥२॥ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ॥ चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥३॥ ऋषिरुवाच ॥४॥ चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते ॥ शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ५ ॥ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् ॥ अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययाऽसुरसेनया ॥६॥ तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः ॥ संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥७॥ आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः ॥ निहन्तुं

चण्डिकां कोपात् कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥८॥ ततो युद्धमतीवासीद्देव्याः शुम्भनिशुम्भयोः ॥
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥९॥ चिच्छेदाऽस्तांञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः ॥
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥१०॥ निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम् ॥
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥ ११ ॥ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ॥
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥१२॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप
सोऽसुरः ॥ तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥१३॥ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं
जग्राह दानवः ॥ आयान्तं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥१४॥ आविध्याथ गदां सोऽपि
चिक्षेप चण्डिकां प्रति ॥ साऽपि देव्यास्त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥ १५ ॥ ततः
परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम् ॥ आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥१६॥ तस्मिन्निपतिते
भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे ॥ भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥१७॥ स रथस्थ-
स्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ॥ भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥ १८ ॥ तमायान्तं

समालोक्य देवी शङ्खमवादयत् ॥ ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुस्सहम् ॥१९॥ पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च ॥ समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥ २० ॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः ॥ पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश ॥ २१ ॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् ॥ कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः ॥२२॥ अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह ॥ तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥ २३ ॥ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा ॥ तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥२४॥ शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा ॥ आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥ २५ ॥ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् ॥ निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥ २६ ॥ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् ॥ चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ २७ ॥ ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम् ॥ स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ॥२८॥ ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः ॥

आजघान शरैर्देवीं कालीं केशरिणं तथा ॥ २९ ॥ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः ॥ चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥३०॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ॥ चिच्छेद देवी चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥ ३१ ॥ ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम् ॥ अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसैन्यसमावृतः ॥३२॥ तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका ॥ खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥३३॥ शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भ-ममरार्दनम् ॥ हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥ ३४ ॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः ॥ महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥ ३५ ॥ तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः ॥ शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥३६॥ ततः सिंहश्चखा-दोग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ॥ असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥ ३७ ॥ कौमारी-शक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ॥ ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ३८ ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे ॥ वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥ ३९ ॥

खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ॥ वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथाऽपरे ॥४०॥ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् ॥ भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः॥४१॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये नवमः ॥ ९ ॥ उवाच ॥ २ ॥ श्लोकाः ॥ ३९ ॥ एवं ॥ ४१ ॥ एवमादितः ॥ ५४३ ॥

नवमाध्याय की वैदिक आहुति पूर्वोक्त है, इसमें केवल १ बेलफल व मैनफल विशेष है।

तांत्रिक आहुति—क्लीं जयन्ती० सांगायै० भैरव्यै तारादेव्यै महाहुतिं स० नमः स्वाहा।

ॐ जय जय मा० जल छोड़ना।

अथ दशमोऽध्यायः ॥ अथ ध्यानम् ॥ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्निनेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम् ॥ रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ॥ १० ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम् ॥ हन्यमानं बलं चैव

शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥२॥ बलावलेपदुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ॥ अन्यासां बलमाश्रित्य युध्यसे चातिमानिनी ॥ ३ ॥ देव्युवाच ॥ ४ ॥ एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ॥ पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥५॥ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम् ॥ तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥ ६ ॥ देव्युवाच ॥७॥ अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता ॥ तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥८॥ ऋषिरुवाच ॥ ९ ॥ ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः ॥ पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥ १० ॥ शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथा चास्त्रैः सुदारुणैः ॥ तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयंकरम् ॥ ११ ॥ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका ॥ बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥१२॥ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ॥ बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥१३॥ ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः ॥ साऽपि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥१४॥ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे ॥ चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥१५॥

ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत् ॥ अभ्यधावत तां देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥१६॥
तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका ॥ धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥१७॥
अश्वांश्च पातयामास रथं सारथिना सह ॥ हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः ॥१८॥
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ॥१९॥
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः ॥२०॥
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥ तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले ॥ २१ ॥
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः ॥ २२ ॥
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥२३॥ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् ॥
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥२४॥ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ॥
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥ २५ ॥ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य
वेगवान् ॥ अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥२६॥ तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्य-

जनेश्वरम् ॥ जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥ २७ ॥ स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः ॥ चालयन्सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥२८॥ ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन्दुरात्मनि ॥ जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥ २९ ॥ उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः ॥ सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥ ३० ॥ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः ॥ बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥३१॥ अवा-दयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥ जज्वलुश्चा-ग्नयः शान्ताः शान्तदिग्जनितस्वनाः ॥ ३२ ॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये दशमः ॥ १० ॥ उवाच ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ १ ॥ श्लोकमंत्राः ॥ २७ ॥ एवं ॥ ३२ ॥ एवमादितः ॥ ५७५ ॥

दशमाध्याय की वैदिक आहुति नवमाध्याय के समान है।

तांत्रिक आहुति——क्लीं जयन्ती० सांगायै० सिंहासनायै त्रिशूलपाशधारिण्यै महाहुतिं स० नमः स्वाहा।

ॐ जय जय मा० बोलकर जल छोड़ना।

अथ एकादशोऽध्यायः ॥ अथ ध्यानम् ॥ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ॥ स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥ ११ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ॥ कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकाशिवक्त्राब्जविकासिताशाः ॥२॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ॥ प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥३॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थिताऽसि ॥ अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलंघ्यवीर्ये ॥ ४ ॥ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया ॥ सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥५॥ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ॥ त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ॥६॥ सर्वभूता यदा देवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥७॥ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ॥ स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि

नमोऽस्तु ते ॥८॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि ॥ विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥९॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥१०॥ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ॥ गुणाश्रये गुणमये नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥११॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु
ते ॥ १२ ॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ॥ कौशांभःक्षरिके देवि नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥ १३ ॥ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ॥ माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥ १४ ॥ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे ॥ कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ॥ प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥ १६ ॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे ॥ वराहरूपिणि शिवे नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥१७॥ नृसिंहरूपेणोग्रेण हतुं दैत्यान् कृतोद्यमे ॥ त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि
नमोऽस्तु ते ॥१८॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ॥ वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि

नमोऽस्तु ते ॥ १९ ॥ शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ॥ घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२०॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ॥ चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २१ ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ॥ महारात्रि महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२२॥ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ॥ नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२३॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥२४॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥२६॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥ २७ ॥ असुरासृग्वसापंकचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ २८ ॥ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् ॥ त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥२९॥

एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाऽद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिं कृत्वाऽम्बिके तत् प्रकरोति काऽन्या ॥ ३० ॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३१॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ॥ दावानलो यत्र तथाऽब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ ३२ ॥ विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीह विश्वम् ॥ विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥ ३३ ॥ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथाऽसुरवधादधुनैव सद्यः ॥ पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ३४॥ प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ॥ त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥३५॥ देव्युवाच ॥३६॥ वरदाऽहं सुरगणा वरं यं मनसेच्छथ ॥ तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥३७॥ देवा ऊचुः ॥३८॥ सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥३९॥ देव्युवाच ॥४०॥ वैवस्वतेन्तरे

प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे ॥ शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥४१॥ नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा॥ ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥४२॥ पुनरप्यति-रौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ॥ अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांश्च दानवान् ॥४३॥ भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान् ॥ रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥ ४४ ॥ ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः ॥ स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम्॥४५॥ भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि ॥ मुनिभिः संस्मृता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ॥४६॥ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्याम्यहं मुनीन् ॥ कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ ४७ ॥ ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः ॥ भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥४८॥ शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ॥४९॥ तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥ दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ॥ ५० ॥ पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् ॥५१॥ तदा मां

मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥ भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ॥ ५२ ॥ यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥ तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम् ॥५३॥ त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥ भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ॥५४॥ इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ तदा तदाऽवतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥५५॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये नारायणीस्तुतिर्नामैकादशः ॥ ११ ॥ उवाच ॥ ४ ॥ अर्धमंत्राः ॥ १ ॥ श्लोकमंत्राः ॥ ५० ॥ एवं ॥५५॥ एवमादितः ॥ ६३० ॥

एकादशाध्याय की वैदिक आहुति पूर्ववत् है केवल पुष्प, पायस विशेष हैं।

तांत्रिक आहुति—क्लीं जयन्ती० सांगायै० लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्य गरुडवाहिन्यै नारायणीदेव्यै महाहुति समर्पयामि नमः स्वाहा।

ॐ जय जय मा० इससे जल छोड़ना।

अथ द्वादशोऽध्यायः ॥ अथ ध्यानम् ॥ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ॥ हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥१२॥

देव्युवाच ॥ १ ॥ एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ॥ तस्याहं सकलां बाधां शमयिष्याम्यसंशयम् ॥ २ ॥ मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् ॥ कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद्वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥३॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ॥ श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥४॥ न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः ॥ भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥ ५ ॥ शत्रुभ्यो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः ॥ न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित् सम्भविष्यति ॥ ६ ॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः ॥ श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत् ॥७॥ उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ॥ तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥८॥ यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्-

नित्यमायतने मम ॥ सदा न तद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ९ ॥ बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे ॥ सर्वं ममैतन्माहात्म्यमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥ १० ॥ जानताऽजानता वापि बलिपूजां यथाकृताम् ॥ प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् ॥११॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ॥ तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥१२॥ सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसमन्वितः ॥ मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥१३॥ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ॥ पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥१४॥ रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते ॥ नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥१५॥ शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने ॥ ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥ १६ ॥ उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः ॥ दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥१७॥ बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् ॥ संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥ १८ ॥ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम् ॥ रक्षोभूतपिशाचानां

पठनादेव नाशनम् ॥१९॥ सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् ॥ २० ॥ पशुपुष्पार्घ-धूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥ विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् ॥२१॥ अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥ प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृदुच्चरिते श्रुते ॥२२॥ श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥ रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम ॥२३॥ युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥ तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते ॥२४॥ युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्तु शुभां मतिम् ॥ २५ ॥ अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः ॥ दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः ॥२६॥ सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥ राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा ॥२७॥ आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे ॥ २८ ॥ सर्वबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात् ॥२९॥ मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥ दूरादेव पलायन्ते

स्मरतश्चरितं मम ॥३०॥ ऋषिरुवाच ॥३१॥ इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥
पश्यतां सर्वदेवानां तत्रैवान्तरधीयत ॥३२॥ तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान्यथा पुरा ॥
यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः ॥ ३३ ॥ दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥
जगद्विध्वंसके तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे ॥३४॥ निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः
॥३५॥ एवं भगवती देवी सा नित्याऽपि पुनः पुनः ॥ सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपाल-
नम् ॥ ३६ ॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ॥ सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं
प्रयच्छति ॥३७॥ व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर ॥ महादेव्या महाकालीमहामारी-
स्वरूपया ॥ ३८ ॥ सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा ॥ स्थितिं करोति भूतानां सैव
काले सनातनी ॥३९॥ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे ॥ सैवाभावे तथा लक्ष्मी-
र्विनाशायोपजायते॥४०॥ स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्गन्धधूपादिभिस्तथा ॥ ददाति वित्तं पुत्रांश्च
मतिं धर्मे तथा शुभाम् ॥४१॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देव्याश्चरितमाहात्म्ये

फलस्तुतिर्नाम द्वादशः ॥ १२ ॥ उवाच ॥ २ ॥ अर्ध ॥ २ ॥ श्लोकाः ॥३७॥ एवं ॥ ४१ ॥
एवमादितः ॥ ६७१ ॥

द्वादशाध्याय की वैदिक आहुति में सामान पूर्वोक्त है; केवल ऋतुफल व केला ही विशेष है।

तांत्रिक आहुति—क्लीं जयन्ती० सांगायै० वरप्रदायै वैष्णवीदेव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

ॐ जय जय मा० इससे जल छोड़ना।

अथ त्रयोदशोऽध्यायः ॥ अथ ध्यानम् ॥ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशांकुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे ॥ १३ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ २ ॥ एवंप्रभावा सा
देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया ॥३॥ तया त्वमेष वैश्यश्च
तथैवान्ये विवेकिनः ॥ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे ॥ ४ ॥ तामुपैहि महाराज
शरणं परमेश्वरीम् ॥ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥५॥ मार्कण्डेय उवाच ॥६॥

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम् ॥७॥
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ॥ ८ ॥
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनमास्थितः ॥ स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् ॥ ९ ॥
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नि-
तर्पणैः ॥ १० ॥ निराहारौ यतात्मानौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ ददतुस्तौ बलिं चैव निज-
गात्रासृगुक्षितम् ॥ ११ ॥ एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं
प्राह चण्डिका ॥ १२ ॥ देव्युवाच ॥ १३ ॥ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन ॥
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि ते ॥ १४ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ १५ ॥ ततो वव्रे नृपो
राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि ॥ अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥१६॥ सोऽपि वैश्यस्ततो
ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः ॥ ममेत्यहमिति प्राज्ञः संगविच्युतिकारकम् ॥१७॥ देव्युवाच ॥१८॥
स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥१९॥ हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥२०॥

मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्मदेवाद्विवस्वतः ॥२१॥ सावर्णिको मनुर्नाम भवान् भुवि भविष्यति ॥ २२ ॥ वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ॥ २३ ॥ तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ॥२४॥ मार्कण्डेय उवाच ॥२५॥ इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ॥ बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥२६॥ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥२७॥ पुनः—इति दत्त्वा तयो० ॥२८॥ पुनः—एवं देव्या वरं० ॥ २९ ॥ क्लीं ॐ श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथ-वैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशः ॥१३॥ उवाचमंत्राः ॥६॥ अर्धमंत्राः ॥ ७॥ श्लोकमंत्राः ॥१६॥ एवं ॥ २९ ॥ एवमादितः ॥ ७०० ॥

त्रयोदशाध्याय की वैदिक आहुति—पूर्वोक्त सब सामान और १ फल-फूल लेकर ॐ प्राणाय स्वाहा० ३—ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके० इत्यादि मन्त्र बोलकर आहुति देना फिर—घृतं घृतपावानः० इस मन्त्र से घृत की आहुति देना।

तांत्रिक आहुति—क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु। ऐसा बोलकर जल छोड़ना।

अथोत्तरन्यासाः ॥ ॐ ह्रीं हृद०। ॐ चं शिर०। ॐ डिं शिखायै०। ॐ कां कव०। ॐ यैं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रीं चण्डिकायै अस्त्राय०॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा॥ शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥ हृदयाय नमः। शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ शिरसे स्वाहा। प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी॥ शिखायै वषट्। सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते॥ यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ कवचाय हुम्। खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि

तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ अस्त्राय फट् ॥ अथ ध्यानम् ॥ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविल-सद्धस्ताभिरासेविताम् ॥ हस्तैश्चक्रधरालिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ १ ॥

अथ वैदिकं देवीसूक्तम् ॥ अहं रुद्रेभिरित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागाम्भृणी ऋषिः । श्रीआदिशक्तिर्देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । द्वितीया जगती । श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशती-जपान्ते जपे विनियोगः ॥

ॐ अहंरुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुतविश्वदेवैः ॥ अहंमित्रावरुणोभाबिभर्म्यहमिन्द्राग्नीअहमश्विनोभा ॥ अहंसोममाहनसं बिभर्म्यहंत्वष्टारमुतपूषणंभगम् ॥

अहंदधामिद्रविणंहविष्मतेसुप्राव्ये ३ यजमानायसुन्वते ॥ अहंराष्ट्रीसंगमनीवसूनां चिकितुषीप्रथमायज्ञियानाम् ॥ तांमादेवाव्यदधुः पुरुत्राभूरिस्थात्राभूर्यावेशयंतीम् ॥ मयासोअन्नमत्तियोविपश्यतियःप्राणितियईंशृणोत्युक्तम् ॥ अमंतवोमांतउपक्षियन्ति श्रुधिश्रुतश्रद्धिवंतेवदामि ॥ अहमेवस्वयमिदंवदामिजुष्टंदेवेभिरुतमानुषेभिः । यंकाम येतंतमुग्रंकृणोमितंब्रह्माणंतमृषिंतंसुमेधाम् ॥१॥ अहंरुद्रायधनुरातनोमिब्रह्मद्विषेश रवेहंतवाऽउ ॥ अहंजनायसमदंकृणोम्यहंद्यावापृथिवीआविवेश ॥ अहंसुवेपितरमस्य मूर्धन्ममयोनिरप्स्वं १ तःसमुद्रे ॥ ततोवितिष्ठेभुवनानुविश्वोतामूंद्यांवर्ष्मणोपस्पृ शामि ॥ अहमेववातइवप्रवाम्यारभमाणाभुवनानिविश्वा ॥ परोदिवापरएना पृथिव्यैतावतीमहिनासंबभूव ॥ २ ॥

अथ तान्त्रिकं देवीसूक्तम् ॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ १ ॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ॥ ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥२॥ कल्याण्यै प्रणतामृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः ॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥३॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्व-कारिण्यै ॥ ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ॥ नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥५॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥६॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥७॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥८॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥९॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २० ॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ॥
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ॥
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ॥
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ॥
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥२७॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता
जगत् ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः
॥२९॥ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव
हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥३०॥ एवं श्रीदेवीसूक्तं पठित्वा अष्टोत्तरशतनवार्ण-
मन्त्रजपं कुर्यात् । तदुत्तरन्यासांश्च कुर्यात्—

ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि ।

श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः । नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः । रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि । अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि । श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमो मुखे । श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमो हृदि । नन्दाशाकम्भरीभीमाशक्तिभ्यो नमो दक्षिणस्तने । रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामरीबीजेभ्यो नमो वामस्तने । अग्निवायुसूर्यतत्त्वेभ्यो नमो नाभौ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ मूलेन करौ संशोध्य ।

अथ मूलषडङ्गन्यासः ॥ ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादि० । ततोऽक्षरन्यासः । ॐ ऐं नमः शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे । ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे । ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे । ॐ मुं नमः वामकर्णे । ॐ डां नमः दक्षिणनासायाम् । ॐ यैं

नमः वामनासायाम्। ॐ विं नमः मुखे। ॐ च्चें नमः गुह्ये। एवं विन्यस्याष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्। ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ विच्चे ईशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः॥

अथ ध्यानम्॥ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ १॥ अक्षस्रक्परशू गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्॥ शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजास्थिताम्॥ २॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्॥

गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥ मानसोपचारैः सम्पूज्य ॥ ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मां सिद्धिदा भव ॥ १ ॥ इति मालां प्रार्थ्य । (ॐ सिद्ध्यै नमः)। इति मालां नत्वा जपेत् । मन्त्रार्थस्तु महासरस्वत्यादिरूपे चित्सदानन्दमये चण्डिके त्वां ब्रह्म-विद्याप्राप्त्यर्थं वयं सर्वदा ध्यायामः। इत्यर्थानुसन्धानपूर्वकं १०८ नवार्णमन्त्र-(ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) जपं कृत्वा तदुत्तरन्यासान् विधाय ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ इति देव्या वामहस्ते जपं निवेदयेत् ॥

अथ प्राधानिकरहस्यम् ॥ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः । श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः । अनुष्टुप् छन्दः । नवदुर्गामहालक्ष्मीर्बीजम् । श्रीं शक्तिः । ममाभीष्टफलसिद्ध्यर्थे सप्तशतीपाठान्ते जपे विनियोगः ॥

राजोवाच ॥ भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः ॥ एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं

वक्तुमर्हसि ॥ १ ॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन वै द्विज ॥ विधिना ब्रूहि सकलं यथावत् प्रणतस्य मे ॥२॥ ऋषिरुवाच ॥ इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते ॥ भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप ॥ ३ ॥ सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ॥ लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ॥ ४ ॥ मातुलिङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती ॥ नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि ॥५॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा ॥ शून्यं तदाखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥ ६ ॥ शून्यं तदाखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी ॥ बभार रूपमपरं तमसा केवलेन हि ॥ ७ ॥ सा भिन्नाञ्जनसङ्काशा दंष्ट्राञ्चितवरानना ॥ विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥८॥ खड्गपात्रशिरःखेटैरलङ्कृतचतुर्भुजा ॥ कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम् ॥ ९ ॥ तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम् ॥ ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥ १० ॥ महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा ॥ निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥ ११ ॥ इमानि तव

नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः ॥ एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥१२॥
तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप ॥ सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ॥१३॥
अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी ॥ सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ
॥ १४ ॥ महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती ॥ आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा
सुरेश्वरी ॥ १५ ॥ अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम् ॥ युवां जनयतां देव्यौ
मिथुने स्वानुरूपतः ॥१६॥ इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् ॥ हिरण्यगर्भौ
रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥१७॥ ब्रह्मन् विधे विरञ्चेति धातरित्याह तं नरम् ॥ श्रीः पद्मे
कमले लक्ष्मीत्याह माता स्त्रियं च ताम् ॥ १८ ॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः
सह ॥ एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥ १९ ॥ नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं
चन्द्रशेखरम् ॥ जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥ २० ॥ स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः
कपर्दी च त्रिलोचनः ॥ त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषा स्वराऽक्षरा ॥ २१ ॥ सरस्वती

स्त्रियं गौरीं कृष्णां च पुरुषं नृप ॥ जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते ॥ २२ ॥ विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः ॥ उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शुभा ॥२३॥ एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ॥ चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरे तद्विदो जनाः ॥ २४ ॥ ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्॥ रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥२५॥ स्वरया सह सम्भूय विरञ्चोऽण्डमजीजनत् ॥ बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान् ॥ २६ ॥ अण्डमध्ये प्रधानादिकार्यजातमभून्नृप ॥ महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥२७॥ पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः ॥ महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी ॥२८॥ निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत् ॥ नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥ २९ ॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे प्राधानिकं रहस्यम् ॥

अथ वैकृतिकं रहस्यम् ॥ ऋषिरुवाच॥ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्वयोदिता॥ सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ॥१॥ योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा ॥

मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः ॥ २ ॥ दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा ॥ विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥ ३ ॥ स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप ॥ रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियाम् ॥४॥ खड्गबाणगदाशूलशंखचक्रभुशुण्डिभृत् ॥ परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ॥५॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया ॥ आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥ ६ ॥ सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूताऽमितप्रभा ॥ त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ ७ ॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तन-मण्डला ॥ रक्तमध्या रक्तपादा रक्तजंघोरुरुन्मदा ॥ ८ ॥ सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बर-विभूषणा ॥ चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ ९ ॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ॥ आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥१०॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ॥ चक्रं त्रिशूलं परशुः शंखो घण्टा च पाशकः ॥ ११ ॥ शक्ति-र्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ॥ अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥ १२ ॥

सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ॥ पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥ १३ ॥
गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया ॥ साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१४॥
दधौ चाष्टभुजा बाणान् मुसलं शूलचक्रभृत् ॥ शंखं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥१५॥
एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति ॥ निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१६॥
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव ॥ उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥१७॥
महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती ॥ दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥१८॥
विरिञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे ॥ वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम् ॥१९॥
अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना ॥ दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥२०॥
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप ॥ दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥२१॥
कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये ॥ यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥२२॥
नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तथा रुद्रविनायकौ ॥ नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत्

॥ २३ ॥ अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः ॥ अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिष-
मर्दिनी ॥२४॥ महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती ॥ ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोक-
महेश्वरी ॥ २५ ॥ महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः ॥ पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां
भक्तवत्सलाम् ॥२६॥ अर्घादिभिरलङ्कारैर्गन्धपुष्पैस्तथोत्तमैः ॥ धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्य-
समन्वितैः ॥ २७ ॥ रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप ॥ प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन
सुगन्धिना ॥२८॥ सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः ॥ वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं
महासुरम् ॥ २९ ॥ पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया ॥ दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं
धर्ममीश्वरम् ॥३०॥ वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् ॥ ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत
चरितैरिमैः ॥ ३१ ॥ एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥ चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रम-
वाप्नुयात् ॥ ३२ ॥ स्तोत्रमन्त्रैः स्तुवीतेमां यदि वा जगदम्बिकाम् ॥ प्रदक्षिणनमस्कारान्
कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥ ३३ ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः ॥ प्रतिश्लोकं च

जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा ॥ ३४ ॥ जुहुयात् स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः ॥ नमो नमःपदैर्देवीं पूजयेत् सुसमाहितः ॥ ३५ ॥ प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्राणानारोप्य चात्मनि ॥ सुचिरं भावयेद्देवीं चण्डिकां तन्मयो भवेत् ॥३६॥एवं यः पूजयेद् भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् ॥ भुक्त्वा भोगान्यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ३७ ॥ यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥ भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी ॥ ३८ ॥ तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम् ॥ यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥३९॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे वैकृतिकं रहस्यम् ॥

अथ मूर्तिरहस्यम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा ॥ सा स्तुता पूजिता ध्याता वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥१॥ कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा ॥ देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा ॥२॥ कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा ॥ इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्रीरुक्माम्बुजासना ॥३॥ या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयाऽनघ ॥

तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम् ॥ ४ ॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा ॥
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥५॥ रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदंष्ट्रिका ॥ पतिं
नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥ ६ ॥ वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी ॥ दीर्घौ
लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥७॥ कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी ॥ भक्तान्
संपाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥ ८ ॥ खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा ॥
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगीश्वरीति च ॥९॥ अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥
इमां यः पूजयेद् भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥ १० ॥ अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या
वपुःस्तवम् ॥ तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ॥११॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पल-
विलोचना ॥ गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥१२॥ सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी ॥
मुष्टिं शिलीमुखैः पूर्णां कमलं कमलालया ॥ १३ ॥ पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम् ॥
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युजरापहम् ॥१४॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभर्ति परमेश्वरी ॥

शाकम्भरी शताक्षी स्यात् सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ १५ ॥ शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायन् जपन् सम्पूजयन्नमन् ॥ अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानादि सर्वशः ॥ १६ ॥ भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा ॥ विशाललोचना नारी वृत्तपीनघनस्तनी ॥ १७ ॥ चन्द्रहासं च डमरुं शिरःपात्रं च बिभ्रती ॥ एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥ १८ ॥ तेजोमण्डल-दुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत् ॥ चित्रभ्रमरसंकाशा महामारीति गीयते ॥ १९ ॥ इत्येता मूर्तयो देव्या व्याख्याता वसुधाधिप ॥ जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः ॥२०॥ इदं रहस्यं परमं न वाच्यं यस्य कस्यचित् ॥ व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामधीष्वावहितः स्वयम् ॥ २१ ॥ देव्या ध्यानं तवाख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफल-प्रदम् ॥ २२ ॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणे खिलांशे मूर्तिरहस्यम् ॥

अथोत्तरविधिः ॥ पुनरुत्कीलनमन्त्रजपः ॥ ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा २१ । श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं यन्त्रस्थदेवतानां

पाठोत्तराङ्गपञ्चोपचारपूजनं करिष्ये ॥ अस्य श्रीनवार्ण० पाठोत्तरांगपूजने विनियोगः ॥
मूलमन्त्रेणावाहितदेवताः सम्पूज्य । अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति
मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥१॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजां चैव
न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥२॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वरि ॥ यत्पूजितं
मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥३॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ॥ एवं
ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥४॥ अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ॥
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ५ ॥ कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ॥
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६ ॥ अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ॥
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ७ ॥ सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जग-
दम्बिके ॥ इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥८॥ सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं
जगत् ॥ अतोऽहं विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम् ॥ ९ ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाण-

स्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् सुरेश्वरि ॥ १० ॥ इति प्रार्थ्य ॥ अनेन पूर्वसङ्कल्पितशतचण्डीसंख्यापरिपूर्तये नवचण्डीसंख्यापरिपूर्तये वा कवचार्गलाकीलकनवार्ण-मन्त्राष्टोत्तरशतजपरात्रिसूक्तपठनदेव्यथर्वशीर्षपूर्वकं देवीसूक्तनवार्णमन्त्राष्टोत्तरशतजपरह-स्यत्रयजपान्तं श्रीचण्डीसप्तशत्याः पाठाख्येन कर्मणा, अथवा सपल्लवे चण्डीसप्तशत्याः प्रतिमन्त्रान्ते अमुकमन्त्रपल्लवितायाः पाठाख्येन कर्मणा, अथवा श्रीचण्डीसप्तशत्याः प्रति-मन्त्रादौ अमुकमन्त्रयोजितायाः पाठाख्येन कर्मणा, अथवा श्रीचण्डीसप्तशत्याः प्रतिमन्त्रे आद्यन्तयोः अमुकमन्त्रसम्पुटितायाः पाठाख्येन कर्मणा भगवती श्रीमहाकाली—महालक्ष्मी—महासरस्वतीस्वरूपिणी अमुकदेवता प्रीयताम् ॥ आचमनम् ॥ ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ इत्येवं द्विराचमनं विधाय ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ १ ॥ विसर्गबिन्दुमात्राश्च० ॥२॥ यन्मात्रा-

बिन्दुबिन्दुद्वितयपदपदद्वन्द्ववर्णादिहीनं भक्त्या भक्त्यानुपूर्वं प्रकृतिगुणवशाद् व्यक्तमव्य-क्तमम्ब ॥ मोहादज्ञानतो वा पठितमपठितं सांप्रतं ते स्तवेऽस्मिन् तत्सर्वं सांगमास्तां भगवति वरदे त्वत्प्रसादात्प्रसीद ॥ ३ ॥ यदत्र पाठे जगदम्बिके मया विसर्गबिन्द्वक्षरहीन-मीरितम् ॥ तदस्तु संपूर्णतमं प्रसादतः संकल्पसिद्धिस्तु सदैव जायताम् ॥ ४ ॥ न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि न च जाने स्तुतिमहो न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ॥ न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥ ५ ॥ इति सम्प्रार्थ्य–ॐ स्वः भुवः भूः ॐ, इति आसनाधोजलमृदा स्वललाटे तिलकं कृत्वा यथासुखं विहरेदिति शिवम् ॥ इति दुर्गासप्तशती सम्पूर्णा ॥

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्—

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि न च जाने स्तुतिमहो, न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः । न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनम्, परं जाने मातस्त्वदनुसरणं

क्लेशहरणम् ॥ १ ॥ विधेरज्ञानेन द्रविण विरहेणालसतया, विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् । तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः । मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥ जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया । तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥ परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया, मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि । इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता, निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥ ५ ॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः । तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥ चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी

पशुपतिः । कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफल-
मिदम् ॥७॥ न मोक्षस्याकांक्षा न च विभववाञ्छाऽपि च न मे, न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि
सुखेच्छाऽपि न पुनः । अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै, मृडानी रुद्राणी शिव
शिव भवानीति जपतः ॥ ८ ॥ नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः, किं रूक्षचिन्तनपरैर्न
कृतं वचोभिः । श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे, धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि । नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः,
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥ जगदम्ब विचित्रमत्र किं, परिपूर्णा करुणाऽस्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परावृतं, नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी
त्वत्समा नहि । एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥ १२ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं
देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ श्रीमहालक्ष्मीस्तोत्रम्—

नमोऽस्तु ते महामाये श्रीपीठे विश्वपूजिते । शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ नमस्ते गरुडारूढे कोह्लासुरभयंकरि । कौमारी वैष्णवी ब्राह्मी महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ सर्वदा सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि । सर्वसिद्धिप्रदे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥३॥ सर्वसिद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि। मन्त्रमूर्त्तिः सदा वन्द्ये महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥४॥ आद्यन्तरहिते देवि आदिशक्तिमहेश्वरि । योगिनी योगसंभूतिर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥ पद्माक्षी वै महामाये महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते । परमेश्वरि महामाये महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥६॥ श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते । मन्त्रमूर्तिः सदा वन्द्ये महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥७॥ स्थूले सूक्ष्मे महारौद्रे महाशान्तिमहोदरे । महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥८॥ महालक्ष्म्यष्टकमिदं पठते भाक्तितो नरः । दुःखदारिद्र्यशान्तिश्च राज्यप्राप्तिश्च शाश्वती ॥९॥ कालमेकं पठेन्नित्यं महापातकनाशनम् । द्विकालं पठते नित्यं

सर्वशत्रुविनाशनम् ॥ १० ॥ त्रिकालं पठते नित्यं प्रसादो हि भवेत् खलु । यः पठेत्प्रयतो नित्यं दारिद्र्यं नोपजायते ॥ ११ ॥ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥ श्रीमहालक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ श्रीसूक्तविधानम्—

ऋग्विधाने—य इच्छेद्वरदां देवीं श्रियं नित्यं कुले स्थिताम् ॥ स शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ १ ॥ श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ आवाहयेच्छ्रियं पद्मे पञ्चभिः कनकेन वा ॥२॥ उपहारानुपहरेच्छुक्लान् भक्ष्यान् पयो दधि ॥ स्थालीपाकं च शालीनां पयसा संप्रकल्पयेत् ॥३॥ चान्द्रायणकृतात्मा तु प्रपद्येत्प्रयतः श्रियै ॥ सर्वौषधीभिः पाठाभिः स्नात्वाऽद्भिः पावनैरपि ॥ ४ ॥ श्रीसूक्तं यो जपेद्भक्त्या तस्याऽलक्ष्मीर्विनश्यति ॥ जुहुयाद्यश्च धर्म्मज्ञो हविष्येण विशेषतः ॥ ५ ॥

अथ प्रयोगः ॥ तत्रादौ चान्द्रायणादिद्वारा प्रायश्चित्तं सम्पाद्य पूर्वदिने अयुतगायत्री-

जपं कृत्वा प्रारम्भदिने प्रातर्नद्यादौ स्नात्वा सन्ध्यादिनित्यकर्म समाप्य सर्वौषधियुक्तैरुष्णो-दकैर्मङ्गलस्नानं कृत्वा नवे शुक्लवाससी परिधाय यथायोग्यालंकृतो देवालयादिषु विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्पयेत् ॥ ततः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य सपवित्रकर आचम्य प्राणानायम्य । ॐ 'सुमुखश्च०' इत्यादि गणपतिस्मरणं कुर्यात् ॥ ततो देशकालौ संकीर्त्य मम अनन्ताऽव्यवच्छिन्नशाश्वतलक्ष्मीप्राप्तिद्वारा सुखसम्पदायुरारोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहालक्ष्मी-देवताप्रीत्यर्थं च अमुकसंख्यया संपुटितश्रीसूक्तजपं करिष्ये । तदंगत्वेन न्यासध्यानादि-कर्म्म करिष्ये । इति च संकल्प्य न्यासं कुर्य्यात् । ॐ अस्य श्रीश्रीसूक्तमालामन्त्रस्य श्री आनन्दकर्द्दमचिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः, श्रीरग्निश्चेत्युभे देवते, आद्यानां तिसृणामनुष्टुप् छन्दः, चतुर्थ्याः बृहती, पञ्चमीषष्ठ्योस्त्रिष्टुप्, अष्टानामनुष्टुप्, अन्त्यायाः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः । हिरण्यवर्णामिति बीजम् । काँसोस्मितामिति शक्तिः । कीर्त्तिमृद्धिं ददातु मे इति कीलकम् । अभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । श्री आनन्दकर्द्दम-

चिक्लीतेन्दिरासुताऋषिभ्यो नमः शिरसि । अनुष्टुब्बृहतीत्रिष्टुबनुष्टुप्प्रस्तारपंक्ति-
च्छन्दोभ्यो नमो मुखे । श्रीरग्निदेवताभ्यां नमो हृदि । हिरण्यवर्णामिति बीजाय नमो
गुह्ये । काँसोस्मितामिति शक्तये नमः पादयोः । कीर्त्तिमृद्धिं ददातु मे इति कीलकाय नमः
सर्वाङ्गे । अभीष्टसिद्धिविनियोगाय नमः सर्वाङ्गे । ॐ श्री इति बीजमन्त्रितजलेन त्रिवारं
करशुद्धिं कृत्वा करादिन्यासं कुर्यात्—ॐ हिरण्यवर्णायै नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ
चन्द्रायै नमः तर्जनीभ्यां नमः । ॐ रजतस्रजायै नमः मध्यमाभ्यां नमः । ॐ हिरण्यस्रजायै
नमः अनामिकाभ्यां नमः । ॐ हिरण्यायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ हिरण्यवर्णायै
नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासं कृत्वा हृदयादिन्यासं कुर्यात् । यथा—ॐ
हिरण्यवर्णायै नमः हृदयाय नमः । ॐ चन्द्रायै नमः शिरसे स्वाहा । ॐ रजतस्रजायै
नमः शिखायै वषट् । ॐ हिरण्यस्रजायै नमः कवचाय हुम् । ॐ हिरण्यायै नमः नेत्र-
त्रयाय वौषट् । ॐ हिरण्यवर्णायै नमः अस्त्राय फट् । इति हृदयादिन्यासं कृत्वाऽङ्गेषु मन्त्र-

न्यासं कुर्यात् । यथा- ॐ हिरण्यवर्णामिति शिरसि । ॐ तां म आवह० इति नेत्रयोः । ॐ अश्वपूर्णामिति कर्णयोः । ॐ काँसोस्मितामिति नासिकयोः । ॐ चन्द्रां प्रभासामिति मुखे । ॐ आदित्यवर्णे० इति गले । ॐ उपैतुमामिति बाह्वोः । ॐ क्षुत्पिपासेति हृदि । ॐ गन्धद्वारामिति नाभौ । ॐ मनसः काममिति गुह्ये । ॐ कर्द्दमेनेति गुदे । ॐ आपः सृजन्त्विति ऊर्वोः । ॐ आर्द्रां पुष्करिणीमिति जानुनोः । ॐ आर्द्रां यः करिणीमिति जंघयोः । ॐ तां म आवह इति पादयोः । इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । ध्यानम्—अरुण-कमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा, करकमलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च । मणिकटक-विचित्राऽलंकृताऽऽकल्पजालैः सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः ॥ या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी, गम्भीरावर्त्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया । या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् । ततः स्वपुरतः पीठे चतुर्द्वार-

चतुरस्त्रत्रयावृतमष्टदलं कमलं विधाय–"ॐ मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः"। इति पीठदेवताः सम्पूज्य। ॐविभूत्यै नमः ॥१॥ ॐउन्नत्यै नमः ॥२॥ ॐकान्त्यै नमः॥३॥ ॐसृष्ट्यै नमः ॥४॥ ॐ कीर्त्यै नमः ॥५॥ ॐ सन्नत्यै नमः ॥६॥ ॐ पुष्ट्यै नमः ॥७॥ ॐ उत्कृष्ट्यै नमः ॥८॥ मध्ये–ॐ ऋद्ध्यै नमः ॥९॥ इति पीठशक्तीः सम्पूजयेत्। तत्र–ॐ श्रीं कमलासनाय नमः, इत्यासनं दत्त्वा तत्र स्वर्णमयीं महालक्ष्मीप्रतिमां सावयवां संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ॐ हिरण्यवर्णामित्यादिश्रीसूक्तेनावाहनादिश्वेतपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य पूर्वोक्तैकाक्षरप्रयोगवदावरणपूजां कृत्वा धूपदीपशुक्लभक्ष्यान् पयो दधि शुक्लानुपहारांश्च निवेद्य नीराजनान्तं कृत्वा अष्टोत्तरशतं ॐ श्रीं श्रियै नमः इति मंत्रं जपित्वा "गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥" इति देवीदक्षकरे निवेद्य यथाशक्ति श्रीसूक्तं जपेत्।

अथ सम्पुटविधिः ।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ॥ चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ १ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ १ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ ताम्म॒ऽआवह जातवेदोल॒क्ष्मीमनंपग॒ामिनीम् ॥ यस्य॒ांहिरंण्यं वि॒न्देय॒ं गामश्व॒ं पुरुंषान॒हम् ॥ २ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ २ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ अ॒श्वपू॒र्वां रथम॒ध्यां ह॒स्तिनांदप्र॒मोदिंनीम् ॥ श्रियं दे॒वीमुपंह्वये॒ श्रीर्मा दे॒वीर्जुंषताम् ॥ ३ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ३ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ काँसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ॥ पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ४ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ॥ तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥ ५ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्य नमः ॥ ५ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ॥ तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ६ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ॥ प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ७ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ८ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ ६ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ९ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ मनसःकाममाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि ॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्य मयिश्रीः श्रयतांयशः ॥ १० ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ १० ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥
ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भ्रम कर्दम ॥ श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ११ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥
ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ॥ नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ १२ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिंसुवर्णांहेममालिनीम् ॥ सूर्य्यांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोममावह ॥ १३ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ १३ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ आर्द्रांयः करिणींयष्टिंपिङ्गलांपद्ममालिनीम् ॥ चन्द्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोमआवह ॥ १४ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ १४ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ तांम्ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योश्वान्विदेयं पुरुषानहम् ॥ १५ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ १५ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥

ॐ यःशुचिःप्रयतोभूत्वाजुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ १६ ॥ इति श्रीसूक्तम् ॥

एवं यथासङ्कल्पितसंख्यया सूक्तं पठित्वा प्रत्यहं तत्संख्यया वा समिद्धेऽग्नौ घृतहोमं कृत्वा भगवतीं प्रार्थयेत् ।

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षी पद्मसंभवे ॥ तन्मे भजसि पद्माक्षी येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ अश्वदायै गोदायै धनदायै महाधने ॥ धनं मे लभतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ॥ विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि संनिधत्स्व ॥ पुत्रपौत्रधनंधान्यंहस्त्यश्वादिगवेरथम् ॥ प्रजानांभवसीमाताआयुष्मंतं

करोतुमे ॥ धनमग्निर्धनंवायुर्धनंसूर्योधनंवसुः ॥ धनमिंद्रोबृहस्पतिर्वरुणंधनमस्तुमे ॥ वैनतेयसोमंपिबसोमंपिबतुवृत्रहा ॥ सोमंधनस्यसोमिनोमह्यंददातुसोमिनः ॥ नक्रोधोनचमात्सर्यंनलोभोनाशुभामतिः ॥ भवंतिकृतपुण्यानांभक्तानांश्रीसूक्तंजपेत् ॥ सरसिजनिलयेसरोजहस्तेधवलतरांशुकगंधमाल्यशोभे ॥ भगवतिहरिवल्लभेमनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरिप्रसीदमह्यम् ॥ विष्णुंपत्नींत्वमांदेवींमाधवींमाधवप्रियाम् ॥ लक्ष्मीं प्रियसखींदेवींनमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥ महालक्ष्मीचविद्महेविष्णुपत्नीचधीमहि ॥ तन्नोलक्ष्मीःप्रचोदयात् ॥ श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्शोभमानंमहीयते । धनंधान्यंपशुंबहुपुत्रलाभंशतसंवत्सरंदीर्घमायुः ॥ इति श्रीसूक्तीयप्रार्थनं समाप्तम् ॥

ऋग्विधाने—चन्द्रामिति तु पद्मानि जुहुयात्सर्पिषा द्विजः । आदित्यवर्णे, इत्यनया बिल्वहोमो विधीयते ॥ बिल्वमध्य एवाग्निः स्यात्स्थालीपाकं हुनेद् द्विजः । दशसाहस्त्रिको

होमः श्रीकामः प्रथमो विधिः ॥ हुत्वा तु प्रयुतं सम्यगनन्तं विन्दते श्रियम् । अयुतं शत-
कृत्वस्तु हुत्वा शुक्लानि सर्पिषा ॥ अनन्तामव्यवच्छिन्नां शाश्वतीं विन्दते श्रियम् । अशक्तौ
जप एवोक्तो दशसाहस्रिको वरः ॥ जप्त्वा तु प्रयुतं सम्यगनन्तं विन्दते श्रियम् । अयुतं
शतकृत्वस्तु जप्त्वा श्रियमुपाश्नुते ॥ अप्स्वेव जुहुयान्नित्यं पद्मान्ययुतशो निशि । दृष्ट्वा श्रियं
तूपरमेत्किलासत्त्वाद्विभेतवे ॥ बिल्वाशी बिल्वानिलये जुह्वद्बिल्वानि सर्पिषा । एकविंशतिरात्रेण
परां सिद्धिं नियच्छति ॥ येन येन च कामेन जुहोति प्रयतः श्रियै । पद्मान्यथापि बिल्वानि
स स कामः समृध्यति ॥ न जातु कृपणोऽर्थाय श्रियमावाहयेत् क्वचित् ॥ न च किञ्चनकामेन
होमः कार्यः कथञ्चन ॥ महद्धा प्रार्थ्यमानेन राज्यकामेन वा पुनः । वाचः परं प्रार्थयिता
यतात्युक्तः श्रियं जपेत् ॥ विष्णुधर्मोत्तरेऽपि—श्रीसूक्तं यो जपेद्भक्त्या तस्याऽलक्ष्मीर्विनश्यति ।
जुहुयाद्यश्च धर्मज्ञो हविष्येण विशेषतः ॥ श्रीसूक्तेन तु पद्मानां घृताक्तानां भृगूत्तम । अयुतं
होमयेद्यस्तु वह्नौ भक्तियुतो नरः ॥ पद्महस्तद्वयालाभं भजन्तमुपतिष्ठति । दशायुतं तु पद्मानां

जुहुयाद्यस्तथा जले ॥ नापैति तत्कुलाल्लक्ष्मीर्विष्णोर्वक्षोगता यथा । घृताक्तानां तु विल्वानां हुत्वा रामायुतं तथा ॥ बहुवित्तमवाप्नोति स यावन्मनसेच्छति । विल्वानां लक्षहोमेन कुले लक्ष्मीमुपाश्नुते ॥ पद्मानामथ बिल्वानां कोटिहोमं समाचरेत् । सत्यलोकमवाप्नोति देवेन्द्रत्वमपि ध्रुवम् ॥ सम्पूज्य देवीं वरदां यथावत्पद्मैः सितैर्वा कुसुमैस्तथान्यैः । क्षीरेण धूपैः परमान्नभक्ष्यैर्लक्ष्मीमवाप्नोति विधानतश्च ॥ इति श्रीसूक्तविधानं समाप्तम् ॥

अथ सरस्वतीस्तोत्रम् ।

अस्य श्रीवाग्वादिनीशारदामन्त्रस्य मार्कण्डेय आश्वलायनऋषिः । स्रग्धरानुष्टुप्छन्दांसि । श्रीसरस्वती देवता । श्रीसरस्वतीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ॥ हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ह्रीं ह्रीं हृद्यैकविद्ये शशिरुचिकमलाकल्पविस्पष्टशोभे भव्ये भावानुकूले कुमतिवनदहे विश्ववन्द्याङ्घ्रिपद्मे ॥ पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनोमोदसम्पादयित्रि प्रोत्फुल्लज्ञानकूपे हरिनिजदयिते देवि संसारसारे ॥१॥ ऐं ऐं ऐं इष्टमन्त्रे कमलभवमुखाम्भोजरूपे स्वरूपे रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे ॥ न स्थूले नैव

सूक्ष्मेऽप्यविदितविषये नापि विज्ञाततत्त्वे विश्वे विश्वान्तराले सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥ २ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं जाप्यतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते मातर्मातर्नमस्ते दहदह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम् ॥ विद्ये वेदान्तगीते श्रुतिपरिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे मार्गातीतप्रभावे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे ॥ ३ ॥ ध्रीं ध्रीं ध्रीं धारणाख्ये धृतिमतिनुतिभिर्नामभिः कीर्त्तनीये नित्येऽनित्ये निमित्त मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे ॥ पुण्ये पुण्यप्रभावे हरिहरनमिते वर्णशुद्धे सुवर्णे मात्रे मात्रार्थतत्त्वे मतिमति मतिदे माधवप्रीतिनादे ॥४॥ ह्रीं क्ष्रीं धीं ह्रीं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते सन्तुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृम्भणिस्तम्भविद्ये ॥ मोहे मुग्धप्रबोधे मम कुरु सुमतिं ध्वान्तविध्वंसिनित्ये गीर्वाग्गौर्भारति त्वं कविवृषरसनासिद्धिदा सिद्धिसाध्या ॥५॥ सौं सौं सौं शक्तिबीजे कमलभवमुखाम्भोजभूतस्वरूपे रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे ॥ न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदितविभवे जाप्यविज्ञानतत्त्वे विश्वे विश्वान्तराले सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥ ६ ॥ स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे भज मम रसनां मा कदाचित्त्यजेथा मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न मनो देवि मे यातु पापम् ॥ मा मे दुःखं कदाचिद्विपदि च समयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदाचित् ॥ ७ ॥ इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो वाण्या वाचस्पतेरप्यतिमतिविभवो वाक्पटु-र्नष्टपङ्कः ॥ स स्यादिष्टार्थलाभः सुतमिव सततं पाति तं सा च देवी सौभाग्यं तस्य लोके प्रसरति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥ ८ ॥ ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः ॥ सारस्वतो नरः पाठात्स स्यादिष्टार्थलाभवान् ॥ ९ ॥ पक्षद्वयेऽपि यो भक्त्या त्रयोदश्येकविंशतिः ॥ अविच्छेदं पठेद्धीमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥ १० ॥ शुक्लाम्बरधरां

देवीं शुक्लाभरणभूषिताम् ॥ वाञ्छितं फलमाप्नोति स लोके नात्र संशयः ॥ ११ ॥ इति ब्रह्मा स्वयं प्राह सरस्वत्याः स्तवं शुभम् ॥ प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वं प्रयच्छति ॥ १२ ॥ इति ब्रह्मपुराणे ब्रह्मणा कृतं सरस्वत्याः स्तोत्रम् ॥

अथ श्रीभवान्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् ।

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता । न जाया न वित्तं न वृत्तिर्ममैवं गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ १ ॥ न जानामि दानं न सन्ध्याभिमानं न जानामि मन्त्रं न च स्तोत्रयन्त्रम् । न जानामि पूजां न संन्यासयोगं गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥२॥ भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः प्रपञ्चप्रभीतः प्रमादी प्रलोभी । कुमायः कुहूजः सदाहं भजामि गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ३ ॥ न जानामि तीर्थं न जानामि पुण्यं न जानामि युक्तमालयं वाक्यमेतत् । न जानामि भक्त्या व्रतं चापि मातर्गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ४ ॥ कुसङ्गी कुकर्मी कुबुद्धिः कुदासः कुलाचारहीनः सदाचारहीनः । कुदृष्टिः कुवाक्यः सदाहं भजामि गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ५ ॥ प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं गणेशं दिनेशं च शेषं कदाचित् । न जानामि चान्यं शरण्यं सदाहं गतित्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ६ ॥ अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रा । विपत्तिप्रविष्टं सदाहं भजामि गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ७ ॥ विवादे विषादे प्रवासे जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये । अरण्ये शरण्ये सदाहं भजामि गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥८॥ य इह पठति भक्त्या स्तोत्रमेतत्समस्तं स भवति सुरपूज्यो माननीयो नृपाणाम् ।

बहुजनकुलभर्ता मुक्तिभाजां कवीन्द्रः सकलभुवनमातस्त्वं हि भूयो नमस्ते ॥९॥ माता भवानी जनको भवानी बन्धुर्भवानी भगिनी भवानी। गोत्रं भवानी स्वकुलं भवानी विना भवानीं न हि किञ्चिदस्ति ॥ १० ॥ भवानी भवानी भवानीति वाणीमुदारामुदारां मुदा ये जपन्ति। न रोगं न शोकं न दुःखं विदन्ति कथञ्चित् कदाचित् कुतश्चिज्जनास्ते ॥ ११ ॥
इति भवान्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् ॥

अथ हवनप्रयोगः।

कृतनित्यक्रियो यजमानः सपत्नीक[1]: आचम्य प्राणानायम्य ॐ आनोभद्रादिशान्तिपाठं कृत्वा लक्ष्मीनारायणादिदेवान् नमस्कृत्य ततो देशकालौ संकीर्त्य अद्येत्यादि ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थमेतज्जन्मजन्मान्तरीयकायिकवाचिकमानसिकसर्वपापक्षयपूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनधान्यपुत्रपौत्राद्यविच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयसदभीष्टसिद्ध्यर्थं आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थं तथा इन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नतासिद्ध्यर्थं आधिदैविकाऽऽधिभौतिकाऽऽध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं अमुकदेवताप्रीत्यर्थं हवनं करिष्ये [अमुककामनया ब्राह्मणद्वरा कृतस्यामुकमन्त्रपुरश्चरणस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थममुकसंख्यापरिमितजपदशांशहोमं तद्दशांशतर्पणं तद्दशांशमार्जनं च करिष्ये। तद्दशांश ब्राह्मणान् भोजयिष्ये] तदंगत्वेन गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं-

१ वापीकूपतडागानां प्रतिष्ठायां महोत्सवे। व्रतादौ शान्तिके चैव पत्नी स्याद्दुत्तरे तथा॥ शान्तिकेषु च सर्वेषु प्रतिष्ठोद्यापनादिषु, वामे।

वसोर्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धं ग्रहपूजनं रक्षाविधानं चतुःषष्टियोगिनीपूजनं क्षेत्रपालपूजनं वास्तुपूजनं सर्वतोभद्रमण्डलदेवतापूजनं यंत्रपूजनस्थापनपूर्वकं प्रधानदेवतापीठपूजनं च करिष्ये। इति संकल्प्य ॐ सुमुखश्चैकदन्त-श्चेत्यादिस्मरणपूर्वकं गणपतिपूजनादिप्रधानदेवतापूजनान्तं सर्वं पूर्ववत् कृत्वा आचार्यादिवरणं कुर्यात्। आचार्यस्य पाद-प्रक्षालनम्। वरणद्रव्याणि जलं चादाय। आचार्यस्य दक्षिणं जान्वालभ्य। देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाणामुकजपदशांश-होमकर्मणि अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रिकाकमण्डलुयुग्मवासोभिराचार्यत्वेन त्वामहं वृणे, इति वृत्वा वृतोऽस्मीति प्रतिवचनानन्तरं गन्धादिभिः सम्पूज्य—ॐ आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत॥ इति प्रार्थयेत्॥

अथ ब्रह्मणो वरणम्॥ तथैव देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाणामुकजपदशांशहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्म-कर्म्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रिकाकमण्डलुवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनानन्तरं ब्रह्माणं सम्पूज्य—यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥ इति प्रार्थयेत्॥ अथ ऋत्विग्वरणम्॥ सर्वानृत्विज उदङ्मुखानुपवेश्य। देशकालौ स्मृत्वा करिष्यमाणामुकजपदशांशहोमकर्मणि तत्तत्कर्मकरणार्थममुकामुकगोत्रोत्पन्नानमुकामुकशर्मब्राह्मणान् ऋत्विक्त्वेन युष्मानहं वृणे। वृताः स्मः इति तैरुक्ते तान् गन्धादिभिः सम्पूज्य—ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्॥ यूयं तथा मे भवितुमृत्विजोऽर्हथ सत्तमाः॥ इति प्रार्थयेत्॥ यजमानर्त्विजः परस्परं यज्ञकङ्कणं बध्नीयुः॥ ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति

दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ॥ दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ ततो यजमानस्य ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रः इत्यादिमन्त्रैः तिलकाशीर्वादः कार्यः ॥ अथ प्रार्थना ॥ ब्राह्मणाः सन्तु मे शस्ताः पापात् पान्तु समाहिताः ॥ देहिनां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनाम् ॥ १ ॥ जपयज्ञे तथा होमे दीनैश्च विविधैः पुनः ॥ देवानां च ऋषीणां च तृप्त्यर्थं याजकाः कृताः ॥ २ ॥ येषां देहे स्थिता वेदा पावयन्ति जगत्त्रयम् ॥ रक्षन्तु सततं ते वै जपयज्ञे व्यवस्थिताः ॥ ३ ॥ ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥ तेषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिना जनाः ॥ ४ ॥ पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः ॥ शुभकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥ ५ ॥ श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा ॥ यद्वाक्यामृतसंसिक्ताः शुद्धिं यान्तु नरद्रुमाः ॥६॥ अङ्गीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषः ॥ यथोक्तनियमैर्युक्ता मन्त्रार्थस्थिर-बुद्धयः ॥ ७ ॥ यत्कृपालोकनात् सर्वे ऋषयो वृद्धिमाप्नुयुः ॥ अस्मिन्होमे मया पूज्याः सन्तु मे नियमान्विताः ॥ ८ ॥ अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ॥ ग्रहध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ ९ ॥ अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः ॥ ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥१०॥ अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्चिता मया ॥ सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं शान्तिकं विधिपूर्वकम् ॥ ११ ॥ इत्याचार्यादिवरणप्रयोगः ॥ अथाचार्यकर्म ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा सनवग्रहमखामुकदेवताजपदशांशहोमकर्मणि यजमानेन वृतोऽहमाचार्यकर्म करिष्ये०, तदङ्गत्वेन शरीरशुद्ध्यर्थं पुरुषसूक्तजपं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य पुरुषसूक्तषोडशर्चं जपेत् ॥ तत आचार्यो वामहस्ते गौरसर्षपांल्लाजमिश्रितान् गृहीत्वा दिग्रक्षणं कुर्यात् । मन्त्राः पूर्वे द्रष्टव्याः ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु

शिवाज्ञया ॥ १ ॥ आपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ॥ सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्म समारभे ॥ २ ॥ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः ॥ स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ ३ ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः ॥ स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं त्विमाम् ॥४ । भूतानि राक्षसा वापि यत्र तिष्ठन्ति केचन ॥ सर्वेऽप्यपगच्छन्तु शान्तिकर्म करोम्यहम् ॥ ५ ॥ इति मन्त्रैरीशानादिसर्वदिक्षु विकिरेत् ॥ उदकोपस्पर्शः ॥ ततः पञ्चगव्यकरणम् ॥ तद्यथा—गायत्र्या गोमूत्रम् ॥ गन्धद्वारामिति गोमयम् ॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥२॥ आप्यायस्वेति क्षीरम् ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् ॥ भवावाजस्य सङ्गथे ॥ ३ ॥ दधिक्राव्णेति दधि ॥ ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ॥ सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयू ँ षितारिषत् ॥ ४ ॥ तेजोऽसीति आज्यम् ॥ ॐ तेजोसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासि ॥ प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥ ५ ॥ देवस्यत्वेति कुशोदकम् ॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ ६ ॥ ॐ इति प्रणवेन यज्ञकाष्ठेनालोड्य आपोहिष्ठेति त्रिभिर्मन्त्रैः कर्मभूमिं पूजासम्भारांश्च प्रोक्षयेत् ॥ ततो यजमानहस्तप्रमाणं चतुरस्रं चतुरङ्गुलोन्नतं स्थण्डिलं विरच्य तत्र भूमिपूजनम् ॥ ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधायाविश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ॥ पृथिवीं यच्छ पृथिवीन्दृ ँ ह पृथिवीम्माहि ँ सीः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिवीकूर्मानन्तदेवताभ्यो नमः ॥ इति मन्त्रेण षोडशोपचारैः संपूजयेत् । ततः कृताञ्जलिः ॥ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ इति वारत्रयं पठित्वा । ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो-

देवयजनं रक्षस्व । इति प्रार्थयेत् ॥ देशकालौ संकीर्त्य अद्यामुकमन्त्रजपदशांशहवनकर्मण्यग्निप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ अथाग्न्यानयनप्रकारः ॥ आचार्यः सदाचारपुण्यमहायज्ञादिक्रियावतां ब्रह्मक्षत्रियविशां गृहाद् अरणिमन्थनद्वारा वा सूर्यकान्तमणेर्वा स्वस्तिवाचनपूर्वकमग्निं मृन्मये पात्रे ताम्रेण पात्रेण गृहीत्वा दर्भपाणिः सन् वेदघोषेण तूर्यनादेन ब्राह्मणैः परिवृत आनीय तैजसीं शक्तिं ध्यात्वा पृष्ठतोऽनवलोकयन् मण्डपमागच्छेत् ॥ इत्यग्न्यानयनप्रकारः ॥ ततो यथापरिमिते तुषकेशशर्करादिरहिते कुण्डे स्थण्डिले वा चतुरस्रां भूमिं कुशैः परिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य खादिरस्रुवमूलेन प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्योल्लेखनक्रमेण वाऽनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्योर्ध्वं प्रक्षिप्य जलेन न्युब्जपाणिनाऽभ्युक्ष्य कांस्यपात्रेण पिहितमग्निं कुण्डस्याग्नेयकोणे निधाय ज्वलत्कुशेन—ॐ क्रव्यादमग्निम्प्रहिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतुरिप्रवाहः ॥ इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण क्रव्यादांशं नैर्ऋत्यां दिशि परित्यज्य ॥ ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ २ आसादयादिह ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण योनिमार्गेणात्माभिमुखमग्निं संस्थापयेत् ॥ तत अग्न्यानीतपात्रे साक्षतोदकं निःक्षिप्य अग्निमुखं कृत्वा ध्यायेत् ॥

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य ॥ त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्याँ २ ऽआविवेश ॥ १ ॥

सप्तहस्तश्चतुश्शृङ्गः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः ॥ त्रिपात् प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः ॥ १ ॥ स्वाहां तु दक्षिणे पार्श्वे देवीं वामे स्वधां तथा ॥ संबिभ्रद्दक्षिणैर्हस्तैः शक्तिमन्नं स्रुचं स्रुवम् ॥२॥ तोमरं व्यजनं वामे घृतपात्रं च धारयन् ॥ आत्माभिमुखमासीन एवंरूपो हुताशनः ॥३॥ इति ध्यात्वा ॥ अग्ने ! वैश्वानर ! शाण्डिल्यगोत्र ! शाण्डिल्यासितदेवलेति त्रिप्रवरान्वित ! भूमिमातर्वरुणपितर्मेषध्वज ! प्राङ्मुख ! मम सम्मुखो भव ॥ इति यथानामानमग्निं प्रतिष्ठाप्य ॥ ॐ अग्निपुरुषाय नमः । इति मन्त्रेण वायव्यकोणे बहिरग्निं षोडशोपचारैः सम्पूज्य ॥ ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ॥ हिरण्यवर्णमनलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥ इति प्रार्थयेत् ॥

अथाग्न्युत्तारणप्राणप्रतिष्ठा—

तत्र यजमानः (आचार्यो वा) देशकालौ स्मृत्वा आसां सुवर्णमूर्तीनां घनादिदोषपरिहारार्थम्, अग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ मूर्तीर्घृतेनाभ्यज्य उपरि जलधारां कृत्वा पठेत्—ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्नेपरिव्ययामसि । पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ॥१॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्नेपरिव्ययामसि । पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ॥२॥ ॐ उपज्मन्नुपवेतसेवतरन्नदीष्वा । अग्नेपित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेमन्नो यज्ञम्पावकवर्णꣳशिवं कृधि ॥ ३ ॥ ॐ अपामिदन्न्ययनꣳसमुद्रस्य निवेशनम् । अन्न्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवोभव ॥ ४ ॥ ॐ अग्नेपावकरोचिषामन्द्रया देवजिह्वया । आदेवान्वक्षियक्षि च ॥५॥ ॐ सनः पावकदीदिवो अग्ने देवा२ँ इहा इहावह । उपयज्ञꣳहविश्चनः ॥६॥

पावक या यश्चित्तपन्त्या कृपा क्षामन्नुरुचऽउषसो न भानुना । तूर्व्वन्नयामन्नेत शस्यनूरणऽआयोघृणेनततृषाणो अजरः ॥ ७ ॥ ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे । अन्यांस्तेऽअस्यत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवोभव ॥ ८ ॥ नृषदे॑वेडप्सुदे॑वेड्बर्हिषदे॑वेड्वनसदे॑वेट्स्वर्विदे॑वेट् ॥९॥ ॐ यदेवादेवानां यज्ञिया यज्ञियानाꣳसंवत्सरीणमुपभागमासते । अहुतादोहविषोयज्ञे अस्मिन्स्वयं पिबन्तु मधुनोघृतस्य ॥१०॥ ये देवा देवेष्वधिदेवत्त्वमायन्ये ब्रह्मणऽपुर एतारोऽअस्य । येभ्यो नऽऋते पवतेधामकिञ्चन नते दिवोन पृथिव्याऽअधिस्नुषु ॥ ११ ॥ ॐ प्राणदाऽअपानदाव्यानदावर्चोदावरिवोदाऽ । अन्न्यास्ते अस्म्मत्तन्पतु हेतयः पावको अस्म्मभ्यꣳशिवोभव ॥ १२ ॥ ततः प्राणप्रतिष्ठा—अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि छंदांसि । जगत्सृष्टिकारिणी प्राणशक्तिर्देवता ॥ आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौंकीलकम् प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । मूर्त्तौ हस्तं निधाय—

ॐ आं ह्रीं क्रों यँ रँ लँ शँ षँ सँ हँ सः सोहम् । आसां मूर्त्तीनां (अस्याः मूर्त्तेः) प्राणाः इह प्राणाः ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं० आसां० जीव इह स्थितः । पुनः ॐ आँ ह्रीं० आसां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ गर्भाधानादिषोडशसंस्कारसिद्ध्यर्थं षोडशप्रणवं जपेत् । अनेन षोडश संस्काराः संपद्यन्ताम् । इति प्राणप्रतिष्ठा ॥ ततः शुद्धोदकेन मूर्तिं संस्नाप्य कलशे संस्थाप्य ॐ मनोजूतिर्जुषताम्० इति एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ॥ इति प्रतिष्ठाप्य गन्धपुष्पाभ्यां संपूज्य आवाहनादि षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ इति ॥

श्रीप्रधानदेवता दुर्गापूजनविधिः ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ यजमानः शुभदिने सपत्नीकस्तिलतैलेन कृताभ्यंगः स्नात्वा संपूर्णकलशहस्तो मंडपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्योपविश्य देशकालौ स्मृत्वा ममेह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छांतिपूर्वकदीर्घायुर्विपुलधनधान्यपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसंततिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयसदभीष्टसिद्धयर्थं ममामुककार्यसिद्धयर्थं वा सनवग्रहमखां (नवचंडीं) (शतचंडीं) (सहस्रचंडीं) वा ब्राह्मणद्वारा करिष्ये ॥ तदंगतयागणेशपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं क्षेत्रपालयोगिनीवास्तुपूजनं नांदीश्राद्धमाचार्यादिवरणं च करिष्ये॥ इति संकल्प्य तानि कृत्वा आचार्यादीन्वृत्वा तान्यथाविभवं वस्त्रादिना संपूज्य प्रार्थयेच्च ॥ तेच शतचंड्यां दश ॥ सहस्रचंड्यां शतम् ॥ केचिदत्र ग्रहजपार्थमेकमृत्विजं वरयंति ॥ अथाचार्य आचम्य देशकालौ संकीर्त्य यजमानेन वृतोऽहमाचार्यकर्म करिष्ये इति संकल्प्य यदत्रेति गौरसर्षपान्विकीर्य पंचगव्येन कुशोदकेन वा मंडपं प्रोक्षेत् ॥ शुचीवोह०्या० आपोहिष्ठा० अपवित्रः० ॥ पृथ्वि त्वया० इत्युपविश्य अनंतासनाय नमः ॥ विमलासनाय० ॥ पद्मासनाय० ॥ अपक्रामंतु० इति भूमौ वामपादघातत्रयं कृत्वा यथोपदेशं विस्तरतः संक्षेपेण वा भूतशुद्धयादि कृत्वा नवार्णविध्युक्तैकादशन्यासान्कुर्यात् ॥ अथवैकादशमेवैकं न्यासं कुर्यात् ॥ ततो योनिमुद्रां प्रदर्श्य ध्यायेत् ॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमंडला ॥ रक्तमध्या रक्तपादा नीलजंघोरुरुन्मदा ॥ सुचित्रजघना चित्रमाल्यांबरविभूषणा ॥ चित्रानुलेपना कांतिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ॥ आयुधान्यत्र वक्ष्यंते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥ अक्षमालाच कमलं बाणोसिः कुलिशं गदा ॥

चक्रं त्रिशूलं परशुः शंखो घंटा च पाशकः॥ शक्तिर्दंडश्चर्मचापं पानपात्रं कमंडलुरिति॥ततो वेद्यां सर्वतोभद्रमष्टदलं वा विलिख्य तत्र ब्रह्मादिमंडलदेवताः संस्थाप्य संपूज्य तन्मध्ये महीद्यौरित्यादिमंत्रैः कलशं संस्थाप्य तस्मिन्गंधपुष्पफलसर्वौषधीदूर्वापंचपल्लवसप्तमृत्तिकास्तत्तन्मंत्रेण निक्षिप्य वस्त्रद्वयेनावेष्टय तदुपरि पूर्णपात्रं निधाय कलशे वरुणमावाह्य पूजयेत् ॥ ततः कलशे देवताः स्मरेत् ॥ कलशस्य मुखे विष्णुः० देवदानवसंवादे मथ्य० प्रसन्नोभवसर्वदा इति कलशं प्रार्थयेत्। कलशमूले मूलाधाराय नमः। मूलाधारमावाहयामि पूजयामि। एवं सर्वत्र। तदुपरि कूर्माय नमः कूर्ममा० स्था०। तदुपरि शेषाय नमः शेषमा० स्था०। तदुपरि पृथिव्यै नमः पृथिवीमा० स्था०। पूर्णपात्राय नमः॥ तथा कलशोपरिस्थपूर्णपात्रे वस्त्रे यंत्रं लिखेत्॥ तद्यथा— मध्ये त्रिकोणं तद्बहिः षट्कोणं तद्बहिर्वृत्तं तद्बाह्येऽष्टौ दलानि तद्बाह्ये चतुर्द्वारं चतुरस्रत्रयमिति एवं यंत्रं विलिख्य तत्राष्टादशभुजां अष्टभुजां वा सिंहारूढां सौवर्णीं देवीमूर्तिमग्न्युत्तारणप्राणप्रतिष्ठापूर्वकं प्रतिष्ठाप्य पूजयेत्॥ तद्यथा—स्ववामे कर्पूरादियुतजलपूर्णं कलशं संपूज्य कलशस्यमुखे० गंगेच यमुने० इत्यादि पठित्वा कलशमुद्रां प्रदर्श्य दक्षिणतः शंखं संपूज्य। शंखं चंद्रार्कदैवत्यमित्यादि पठित्वा शंखमुद्रां प्रदर्श्य शंखोदकेनात्मानं पूजाद्रव्याणि च प्रोक्षेत्॥ अपवित्रः पवित्रोवा०॥ पीठपूजां कुर्यात्॥ देवीदक्षिणे गुं गुरुभ्यो नमः। पं परमगुरुभ्यो नमः॥ पं परात्परगुरुभ्यो नमः॥ पं परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः॥ वामे गं गणपतये नमः॥ दुं दुर्गायै नमः॥ क्षं क्षेत्रपालाय० मध्ये आधारशक्त्यै नमः॥ मूलप्रकृत्यै०॥ कालाग्निरुद्राय०॥ महामंडूकाय० कूर्माय० वराहाय० अनंताय० भूम्यै० अमृतार्णवाय० रत्नद्वीपाय० हेमगिरये० नंदनोद्यानाय० मणिभूम्यै० रत्नमंडपाय० कल्पतरवे० रत्नसिंहासनाय०॥ आग्नेय्यादिकोणेषु धर्माय० ज्ञानाय० वैराग्याय० ऐश्वर्याय० अधर्माय० अज्ञानाय०

अवैराग्याय० अनैश्वर्याय० ऊर्ध्वं ब्रह्मणे० अधः अनंताय० मध्ये वास्तुपुरुषाय० सं सत्वाय० रं रजसे० तं तमसे० मां मायायै० विं विद्यायै० ॥ पूर्वाद्यष्टदिक्षु उड्डाणपीठेश्वरसहितामुड्डाणपीठेश्वर्यंबापादुकांपूजयामि॥ मातृकापीठेश्वरसहितां मातृकापीठेश्वर्यंबापादुकां०॥ जालंधरपीठेश्वरसहितां जालंधरपीठेश्वर्यंबापा० ॥ कोल्हागिरिपीठेश्वरसहितां कोल्हागिरिपीठेश्वर्यंबापादु० ॥ पूर्णगिरिपीठेश्वरसहितां पूर्णगिरिपीठेश्वर्यंबापादुकां पू० संहारगिरिपीठेश्वरसहितां संहारगिरिपीठेश्वर्यंबापा० । कोल्हापुरपीठेश्वरसहितां कोल्हापुरपीठेश्वर्यंबापा०॥ कामरूपपीठेश्वरसहितां कामरूपपीठेश्वर्यंबापा०॥ पुनः पूर्वादिचतुर्दिक्षु गं गणेशाय नमः क्षं क्षेत्रपालाय० पां पादुकाभ्यो० बं बटुकेभ्यो० ॥ आग्नेय्यादिविदिक्षु जं जयायै न० विं विजयायै न० जं जयंत्यै० अं अपराजितायै० ॥ तत्रैव अग्निमुखवेतालाय नमः प्रेतवाहनवेतालाय नमः ज्वालामुखवेताला० धूम्राक्षवेताला० कंदाय० नालाय० दलेभ्यो० केसरेभ्यो नमः कर्णिकायै० अं सूर्यमंडलाय० उं सोममंडलाय० मं वह्निमंडलाय० अं आत्मने० उं अंतरात्मने० पं परमात्मने० उं ज्ञानात्मने० विं विष्णुमायायै० चें चेतनायै० बुं बुद्ध्यै० निं निद्रायै० क्षुं क्षुधायै० छां छायायै० शं शक्त्यै० तृं तृष्णायै० क्षां क्षांत्यै० जां जात्यै० लं ललितायै० शां शांत्यै० श्रं श्रद्धायै० कां कांत्यै० लं लक्ष्म्यै० धृं धृत्यै० वृं वृद्ध्यै० स्मृं स्मृत्यै० दं दयायै० तुं तुष्ट्यै० पुं पुष्ट्यै० मां मातृकायै० भ्रां भ्रांत्यै० ह्रींसर्वशक्तिकमलासनाय० सर्वात्मसंसर्गयोगपीठात्मने नमः इति पीठपूजा ॥

देव्यष्टोत्तरशतनामावलिः

माहेश्वर्यै नमः महादेव्यै० जयंत्यै० सर्वमंगलायै० लज्जायै० भगवत्यै० वंद्यायै० भवान्यै० पापनाशिन्यै० चंडिकायै०

अथ कुशकण्डिकाकरणम् ।

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम् । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम् । ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम् । यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव—इति यजमानः । भवामीति ब्रह्मा वदेत् । (ब्रह्मणानुज्ञातः[2] प्रणीताप्रणयनम्[3]) । (तत्र क्रमः) प्रणीतापात्रं पुरतः

कालरात्र्यै० भद्रकाल्यै० अपराजितायै० महाविद्यायै० महामेधायै० महामायायै० महाबलायै० कात्यायन्यै० जयायै० दुर्गायै० मंदारवनवासिन्यै० आर्यायै० गिरिसुतायै० धात्र्यै० महिषासुरघातिन्यै० सिद्धिदायै० बुद्धिदायै० नित्यायै० वरदायै० वरवर्णिन्यै० अंबिकायै० सुखदायै० सौम्यायै० जगन्मात्रे० शिवप्रियायै० भक्तसंतापसंहर्त्र्यै० सर्वकामप्रपूरिण्यै० जगत्कर्त्र्यै० जगद्धात्र्यै० जगत्पालनतत्परायै० अव्यक्तायै० व्यक्तरूपायै० भीमायै० त्रिपुरसुंदर्यै० अपर्णायै० ललितायै० विद्यायै० पूर्णचन्द्रनिभाननायै० चामुण्डायै० चतुरायै० चन्द्रायै० गुणत्रयविभाविन्यै० हेरंबजनन्यै० काल्यै० त्रिगुणायै० यशोधारिण्यै० उमायै० कलशहस्तायै० दैत्यदर्पनिषूदिन्यै० बुद्ध्यै० कांत्यै० क्षमायै० शांत्यै० पुष्ट्यै० तुष्ट्यै० धृत्यै० मत्यै० वरायुधधरायै० धीरायै० गौर्यै० शाकंभर्यै० शिवायै० अष्टसिद्धिप्रदायै० वामायै० शिववामांगवासिन्यै० धर्मदायै० धनदायै० श्रीदायै० कामदायै० मोक्षदायै० अपरायै० चित्स्वरूपायै० चिदानंदायै० जयश्रियै० जयदायिन्यै० सर्वमंगलमंगल्यायै० जगत्त्रयहितैषिण्यै० शर्वाण्यै० पार्वत्यै० धन्यायै० स्कंदमात्रे० अखिलेश्वर्यै० प्रपन्नार्तिहरायै० देव्यै० सुभगायै० कामरूपिण्यै० निराकारायै० साकारायै० महाकाल्यै० सुरेश्वर्यै० शर्वायै० श्रद्धायै० ध्रुवायै० क्रुत्यायै० मृडान्यै० भक्तवत्सलायै० सर्वशक्तिसमायुक्तायै० शरण्यायै० सर्वकामदायै नमः ॥ इत्यष्टोत्तरशतनामानि ॥

१ पञ्चाशता भवेद् ब्रह्मा तदर्द्धेन तु विष्टरः । ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टरः ॥ दक्षिणावर्तो ब्रह्मा च वामावर्तस्तु विष्टरः ॥ विष्टरं सर्वयज्ञेषु लक्षणं परिकीर्तितम् ॥ २ ब्रह्मणा प्राप्तानुशासनः—ब्रह्मा की आज्ञा से ॥ ३ प्रणीता को जल से पूर्ण करना ॥

कृत्वा वारिणा परिपूर्य्य कुशैराच्छाद्य प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात् । (ईशानादिपूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्) तद्यथा—बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय । आग्नेयादीशानान्तम् । ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम् । नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् । अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् । (अथ पात्रासादनं पश्चादुत्तरतो वा स्यात्) तद्यथा । त्रीणि[2] । पवित्रे[3] द्वे । प्रोक्षणीपात्रम् । आज्यस्थाली । चरुस्थाली । सम्मार्जनकुशाः[4] पञ्च । उपयमनकुशाः[5] सप्त । समिधस्तिस्रः । स्रुवः । आज्यम् । तण्डुलाः । पूर्णपात्रम् । वृषनिष्क्रयदक्षिणा । उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय । (पवित्रच्छेदनानि) द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय । द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य । त्रिभिश्छित्त्वा । द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः । प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य (त्रिःपूर्णम्[6]) पवित्राभ्यामुत्पवनम्[7] । प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम् । दक्षिणेनोदिङ्गनम् । प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम् । प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम् । चरुस्थाल्याः प्रो० । सम्मार्जनकुशानां प्रो० । उपयमनकुशानां प्रो० । समिधां प्रो० । स्रुवस्य प्रो० । आज्यस्य प्रो० । तण्डुलानां प्रो० । पूर्णपात्रस्य प्रो० । उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रो० । असञ्चरे[9] प्रोक्षणीपात्रं निधाय । आज्य-

---

१ एकाशीतिकुशो बर्हिः ॥ चतुष्षष्टिकुशो बर्हिः ॥ मुष्टिमात्रं कुशो बर्हिः ॥ २ पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम् ॥ ३ पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भं कुशपत्रद्वयम् ॥ ४ व्यासस्मृतौ–स्रुवसम्मार्जनार्थन्तु कुशत्रयमुदीरितमिति ॥ ५ तत्रैव–उपयमनार्थमाख्याताः त्रिषण्णवतिमिताः कुशाः ॥ वेणीरूपा निरोधार्था निरोधे बहुभिः सुखमिति ॥

६ सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधानम् ॥ ७ द्वाभ्यां अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्राभ्याम् ॥ ८ अनेकस्रुवमासादने सर्वं सम्मार्जनं प्रोक्षणं च ॥ ९ प्रणीताग्न्योर्मध्ये असञ्चरदेशे (अर्थात् जनसञ्चारवर्जितदेशे) ॥

स्थाल्यामाज्यनिर्वापः । चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकपूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः । ब्रह्मदक्षिणत आज्याधिश्रयणम् । चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः । ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम् । इतरथावृत्तिः । उदकोपस्पर्शः । अर्धश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम् । सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम् । अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मृज्य । प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम् । सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः । पुनः प्रतपनम् । दक्षिणदेशे निधानम् । आज्योद्वासनम् । चरुं पूर्वेणानीयाग्नेरुत्तरतः स्थापयेत् । चरोरुद्वासनम् । अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत् । आज्योत्पवनम् । आज्यावेक्षणम् । अपद्रव्यनिरसनम् । पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् । वामहस्ते उपयमनकुशानादाय । उत्तिष्ठन् समिधाभ्यादाय घृताक्ताः समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत् । प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादिक्रमेण अग्नेः प्रदक्षिणम् । पर्युक्षणम् । इतरथावृत्तिः । पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् । दक्षिणं जान्वाच्य । ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः । समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्यहोमः । अग्नेरुत्तरभागे—ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम । अग्नेर्दक्षिणभागे—ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम । समिद्धतमे—ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम । ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम ॥ ततः सूर्यादिग्रहाणां अधि-

---

१ अन्वारम्भे कृते होमे ब्रह्मणा दक्षिणे करे ॥ बहुकाष्ठैः समिन्धीयादर्चिष्मन्तं क्रियाक्षमम् ॥ १ ॥ भूरादिनवसुस्विष्टकृतिस्वच्छे चतुष्टये ॥ अन्वारब्धो भवेत्तेषु सोऽन्वारम्भः कुशेन हि ॥ २ ॥

२ अतिप्रदीप्ताग्नौ ॥ ३ स्रुवधारणार्थं कारिका ॥ अग्रमध्याच्च यन्मध्यं मूलमध्याच्च मध्यतः ॥ स्रुवं धारयते विद्वान् ज्ञातव्यं च सदा बुधैः ॥ स्रुवहोमे सदा त्यागः प्रोक्षणीपात्रमध्यतः ॥ पाणिहोमे त्यागो न ॥

देवताप्रत्यधिदेवतागणपत्यादिपञ्चलोकपालवास्तोष्पतिक्षेत्रपालदेवतानां इन्द्रादिदशदिक्पालदेवतानां च प्रत्येकं समिच्चिलचं[1][2][3]-र्वाज्यद्रव्यैर्जुहुयात् ॥ तत्र सङ्कल्पः ॥ अमुकाख्ये कर्मणि इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि न मम ॥ यथादैवतानि सन्तु ॥ इति कुशकण्डिकाकरणम् ।

अथ हवनक्रमः ।

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम ॥ आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥
स्वाहा इदं गणपतये न मम ॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ स्वाहा इदं अम्बिकायै न मम ॥

---

१ अर्कः पलाशः खदिरो ह्यपामार्गश्च पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधो नव ॥ २ तिल्ली अथवा तिल चावल या शर्करा घृत युक्त । तत्र प्रमाणम्—तिलार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धं यवास्तथा ॥ यवार्द्धं शर्करा प्रोक्ता आज्यभागचतुष्टयम् ॥ अथवा—यवार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्तास्तण्डुलार्द्धं तिलास्तथा ॥ तिलार्धं शर्करा प्रोक्ता आज्यभागचतुष्टयम ॥ ३ पायसम् ॥

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ १ ॥ स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न ꣳ सुवद्ध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्ष्य पुत्रममुष्ष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोमी राजा सोमो ऽस्माकम्ब्राह्मणाना ꣳ राजा ॥ २ ॥ स्वाहा इदं चन्द्रमसे न मम ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् ॥ अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति ॥ ३ ॥
स्वाहा इदं भौमाय न मम ॥

ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स ꣳ सृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥ ४ ॥ स्वाहा इदं बुधाय न मम ॥

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवस ऽऋत

प्रजाततदस्मासुद्रविणान्धेहिचित्रम् ॥ ५ ॥ स्वाहा इदं बृहस्पतये न मम ॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः ॥ ऋतेनसत्य मिन्द्रियंविपानः शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ॥ ६ ॥

स्वाहा इदं शुक्राय न मम ॥

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ ७ ॥

स्वाहा इदं शनैश्चराय न मम ॥

ॐकयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥ ८ ॥

स्वाहा इदं राहवे न मम ॥

ॐकेतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथाः ॥ ९ ॥

स्वाहा इदं केतवे न मम ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ १ ॥ स्वाहा इदं त्र्यम्बकाय न मम ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्म ऽइषाण सर्वलोकम्म ऽइषाण ॥ २ ॥ स्वाहा इदं उमायै न मम ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यम्महि जातन्ते ऽअर्वन् ॥ ३ ॥ स्वाहा इदं स्कन्दाय न मम ॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ४ ॥ स्वाहा इदं विष्णवे न मम ॥

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योति व्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभे

योसुवीस्ययजमानस्यवीरोजायतान्निकामेनिकामेनः पर्जन्योवर्षतुफलवत्योनऽओष
धयः पच्यन्तांयोगक्षेमोनःकल्पताम् ॥ ५ ॥ स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥

ॐसजोषाऽइन्द्रसगंणोमरुद्भिःसोमम्पिबवृत्रहाशूरविद्वान् ॥ जहिशत्रूँ रप
मृधोनुदस्वाथाभयङ्कृणुहिविश्वतोनः ॥ ६ ॥ स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥

ॐयमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्मःपित्रे ॥ ७ ॥
स्वाहा इदं यमाय न मम ॥

ॐकार्षिरसिसमुद्रस्यत्वाक्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधी
भिरोषधीः ॥ ८ ॥ स्वाहा इदं कालाय न मम ॥

ॐचित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय ॥ ९ ॥ स्वाहा इदं चित्रगुप्ताय न मम ॥

ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२ऽआसादयादिह ॥ १ ॥

स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ २ ॥

स्वाहा इदं अद्भ्यो न मम ॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः ॥ ३ ॥

स्वाहा इदं पृथिव्य न मम ॥

ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाꣳसुरे ॥ ४ ॥

स्वाहा इदं विष्णवे न मम ॥

ॐ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञःपुरऽएतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्रम् ॥ ५ ॥ स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥

ॐअदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः ॥ पूषासिघर्म्मायदीष्व ॥ ६ ॥

स्वाहा इदमिन्द्राण्यै न मम ॥

ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु वयँ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ७ ॥ स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ८ ॥ स्वाहा इदं सर्पेभ्यो न मम ॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः ॥ स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ९ ॥ स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥

ॐ गणानान्त्वा० ॥ १ ॥ स्वाहा इदं गणपतये न मम ॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके० ॥ २ ॥ स्वाहा इदं दुर्गायै न मम ॥

ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्सोमपीतये ॥ ३ ॥

स्वाहा इदं वायवे न मम ॥

ॐ घृतङ्घृतपावानः पिबत वसांवसापावानः पिबतान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ ४ ॥

स्वाहा इदमाकाशाय न मम ॥

ॐ यावाङ्कशामधुमत्याश्विनासूनृतावती ॥ तयायज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ ५ ॥

स्वाहा इदमश्विभ्यां न मम ॥

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः ॥ यत्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशन्नोभवद्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥ ६ ॥ स्वाहा इदं वास्तोष्पतये न मम ॥

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः ॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यंवैश्वानरंक्षैत्रजित्यायदेवाः ॥ ७ ॥ स्वाहा इदं क्षेत्राधिपतये न मम ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ १ ॥ स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ॥ त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते ॥ २ ॥ स्वाहा इदमग्नये न मम ॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ३ ॥ स्वाहा इदं यमाय न मम ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ४ ॥ स्वाहा इदं निर्ऋतये न मम ॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न ऽआयुः प्रमोषीः ॥ ५ ॥ स्वाहा इदं वरुणाय न मम ॥

ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरᳪसहास्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् ॥ वायोऽअस्मिन्सवनेमादयस्वयूयम्पातस्वस्तिभिः सदानः ॥ ६ ॥ स्वाहा इदं वायवे न मम ॥

ॐ व्रयᳪसोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥
स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ८ ॥ स्वाहा इदमीशानाय न मम ॥

ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्वतासोवृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः ॥ यᳪशᳪसतेस्तुवतेधायिपज्रऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्माँ२ अवन्तुदेवाः ॥ ९ ॥ स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवान्नृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म्मसप्रथाः ॥ १० ॥
स्वाहा इदमनन्ताय न मम ॥ अनेन होमेन इन्द्रादयो दशदिक्पालदेवताः प्रीयन्तां न मम ॥

अथ गौर्यादिमातृकाहोमः ।

ॐ गणपतये स्वाहा ॥ इदं गणपतये न मम ॥ ॐ गौर्यै स्वाहा ॥ (एवं सर्वत्र त्यागः) ॐ पद्मायै स्वाहा ॥ ॐ शच्यै स्वाहा ॥ ॐ मेधायै स्वाहा ॥ ॐ सावित्र्यै स्वाहा ॥ ॐ विजयायै स्वाहा ॥ ॐ जयायै स्वाहा ॥ ॐ देवसेनायै स्वाहा ॥ ॐ स्वधायै स्वाहा ॥ ॐ स्वाहायै स्वाहा ॥ ॐ मातृभ्यः स्वाहा ॥ ॐ लोकमातृभ्यः स्वाहा ॥ ॐ धृत्यै स्वाहा ॥ ॐ पुष्ट्यै स्वाहा ॥ ॐ तुष्ट्यै स्वाहा ॥ ॐ आत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा ॥ अनेन होमेन श्रीगणपतिसहित-गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम ॥

अथ वसोर्द्धाराहोमः ।

ॐ श्रियै स्वाहा ॥ ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा ॥ ॐ धृत्यै स्वाहा ॥ ॐ मेधायै स्वाहा ॥ ॐ स्वाहायै स्वाहा ॥ ॐ प्रज्ञायै स्वाहा ॥ ॐ सरस्वत्यै स्वाहा ॥ अनेन होमेन श्रियादिसप्तघृतमातरः प्रीयन्तां न मम ॥

अथ सर्वतोभद्रमण्डलदेवताहोमः ।

(ब्रह्मादिदेवानां वैदिकैर्मंत्रैः नाममंत्रैर्वा समित्तिलाज्यादिनिर्मितचर्वाज्यैर्जुहुयात्)

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ ॐ ईशानाय स्वाहा इदं ईशानाय न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ ॐ यमाय स्वाहा इदं यमाय न

मम ॥ ॐ निर्ऋतये स्वाहा इदं निर्ऋतये न मम ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा इदं वरुणाय न मम ॥ ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ॐ अष्टवसुभ्यः स्वाहा इदं अष्टवसुभ्यः न मम ॥ ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा इदं एकादशरुद्रेभ्यः न मम ॥ ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा इदं द्वादशादित्येभ्यः न मम ॥ ॐ अश्विभ्यां स्वाहा इदं अश्विभ्यां न मम ॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः सपितृकेभ्यः स्वाहा इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः सपितृकेभ्यः न मम ॥ ॐ सप्तऋषिभ्यः स्वाहा इदं सप्तऋषिभ्यः न मम ॥ ॐ भूतनाथेभ्यः स्वाहा इदं भूतनाथेभ्यः न मम ॥ ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा इदं गन्धर्वाप्सरोभ्यः न मम ॥ ॐ स्कन्दाय स्वाहा इदं स्कन्दाय न मम ॥ ॐ ऋषभाय स्वाहा इदं ऋषभाय न मम ॥ ॐ शूलमहाकालाभ्यां स्वाहा इदं शूलमहाकालाभ्यां न मम ॥ ॐ दक्षादित्यसप्तगणेभ्यः स्वाहा इदं दक्षादित्यसप्तगणेभ्यः न मम ॥ ॐ दुर्गायै स्वाहा इदं दुर्गायै न मम ॥ ॐ विष्णवे स्वाहा इदं विष्णवे न मम ॥ ॐ स्वधायै स्वाहा इदं स्वधायै न मम ॥ ॐ मृत्युरोगेभ्यः स्वाहा इदं मृत्युरोगेभ्यः न मम ॥ ॐ गणपतये स्वाहा इदं गणपतये न मम ॥ ॐ अद्भ्यः स्वाहा इदं अद्भ्यः न मम ॥ ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा इदं मरुद्भ्यः न मम ॥ ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै न मम ॥ ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा इदं सप्तसागरेभ्यः न मम ॥ ॐ गङ्गादिसप्तसरिद्भ्यः स्वाहा इदं गङ्गादिसप्तसरिद्भ्यः न मम ॥ ॐ मेरवे स्वाहा इदं मेरवे न मम ॥ ॐ गदायै स्वाहा इदं गदायै न मम ॥ ॐ त्रिशूलाय स्वाहा इदं त्रिशूलाय न मम ॥ ॐ वज्राय स्वाहा इदं वज्राय न मम ॥ ॐ शक्तये स्वाहा इदं शक्तये न मम ॥ ॐ दण्डाय स्वाहा इदं दण्डाय न मम ॥ ॐ खड्गाय स्वाहा इदं खड्गाय न मम ॥ ॐ पाशाय स्वाहा इदं पाशाय न मम ॥ ॐ अङ्कुशाय स्वाहा इदं अंकुशाय न मम ॥ ॐ गौतमाय

स्वाहा इदं गौतमाय न मम । ॐ भरद्वाजाय स्वाहा इदं भरद्वाजाय न मम ॥ ॐ विश्वामित्राय स्वाहा इदं विश्वामित्राय न मम ॥ ॐ कश्यपाय स्वाहा इदं कश्यपाय न मम ॥ ॐ जमदग्नये स्वाहा इदं जमदग्नये न मम ॥ ॐ वसिष्ठाय स्वाहा इदं वसिष्ठाय न मम ॥ ॐ अत्रये स्वाहा इदं अत्रये न मम ॥ ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा इदं अरुन्धत्यै न मम ॥ ॐ अग्निकाय्यै स्वाहा इदं अग्निकाय्यै न मम ॥ ॐ ब्राह्मयै स्वाहा इदं ब्राह्मयै न मम ॥ ॐ माहेश्वर्य्यै स्वाहा इदं माहेश्वर्य्यै न मम । ॐ कौमार्य्यै स्वाहा इदं कौमार्य्यै न मम ॥ ॐ वैष्णव्यै स्वाहा इदं वैष्णव्यै न मम ॥ ॐ वाराह्यै स्वाहा इदं वाराह्यै न मम ॥ ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा इदं इन्द्राण्यै न मम ॥ ॐ चामुण्डायै स्वाहा इदं चामुण्डायै न मम ॥ अनेन होमेन सर्वतोभद्रमंडलदेवताः प्रीयन्तां न मम ।

अथ योगिनीहोमः ।

ॐ जयायै स्वाहा इदं जयायै न मम ॥ (एवं सर्वत्रत्यागः) ॐ विजयायै स्वाहा ॥ ॐ जयन्त्यै स्वाहा ॥ ॐ अपराजितायै स्वाहा ॥ ॐ दिव्ययोगिन्यै स्वाहा ॥ ॐ महायोगिन्यै स्वाहा ॥ ॐ सिद्धयोगिन्यै स्वाहा ॥ ॐ गणेश्वर्यै स्वाहा ॥ ॐ प्रेतासनायै स्वाहा ॥ ॐ डाकिन्यै स्वाहा ॥ ॐ काल्यै स्वाहा ॥ ॐ कालरात्र्यै स्वाहा ॥ ॐ निशाचर्यै स्वाहा ॥ ॐ टंकारिण्यै स्वाहा ॥ ॐ रुद्रवैतालिन्यै स्वाहा ॥ ॐ हुंकारिण्यै स्वाहा ॥ ॐ ऊर्ध्वकेश्य स्वाहा ॥ ॐ विरूपाक्ष्यै स्वाहा ॥ ॐ शुष्काङ्ग्यै स्वाहा ॥ ॐ नरभोजिन्यै स्वाहा ॥ ॐ फट्कारिण्यै स्वाहा ॥ ॐ वीरभद्रायै

स्वाहा ॥ धूमाङ्क्यै स्वाहा ॥ ॐ कलहप्रियायै स्वाहा ॥ ॐ राक्षस्यै स्वाहा ॥ ॐ रक्ताक्ष्यै स्वाहा ॥ ॐ विश्वरूपायै स्वाहा ॥ ॐ भयङ्कर्यै स्वाहा ॥ ॐ वीरकौमार्यै स्वाहा ॥ ॐ चण्डिकायै स्वाहा ॥ ॐ वाराह्यै स्वाहा ॥ ॐ मुण्डधारिण्यै स्वाहा ॥ ॐ भैरव्यै स्वाहा ॥ ॐ ध्वांक्षिण्यै स्वाहा ॥ ॐ धूम्राङ्क्यै स्वाहा ॥ ॐ प्रेतवाराह्यै स्वाहा ॥ ॐ खड्गिन्यै स्वाहा ॥ ॐ दीर्घलम्बोष्ठ्यै स्वाहा ॥ ॐ मालिन्यै स्वाहा ॥ ॐ मन्त्रयोगिन्यै स्वाहा ॥ ॐ कालिन्यै स्वाहा ॥ ॐ चक्रिण्यै स्वाहा ॥ ॐ कङ्काल्यै स्वाहा ॥ ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा ॥ ॐ त्रुटक्यै स्वाहा ॥ ॐ महामार्यै स्वाहा ॥ ॐ यमदूत्यै स्वाहा ॥ ॐ करालिन्यै स्वाहा ॥ ॐ केशिन्यै स्वाहा ॥ ॐ मर्दिन्यै स्वाहा ॥ ॐ रोमजङ्घायै स्वाहा ॥ ॐ निवारिण्यै स्वाहा ॥ ॐ विशालिन्यै स्वाहा ॥ ॐ कार्मुक्यै स्वाहा ॥ ॐ लोल्यै स्वाहा ॥ ॐ अधोमुख्यै स्वाहा ॥ ॐ मुण्डाग्रधारिण्यै स्वाहा ॥ ॐ व्याघ्र्यै स्वाहा ॥ ॐ कांक्षिण्यै स्वाहा ॥ ॐ प्रेतरूपिण्यै स्वाहा ॥ ॐ धूर्जट्यै स्वाहा ॥ ॐ घोर्यै स्वाहा ॥ ॐ कराल्यै स्वाहा ॥ ॐ विषलम्बिन्यै स्वाहा ॥ अनेन चतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्तां न मम ॥

अथ क्षेत्रपालहोमः ।

ॐ अजराय स्वाहा इदमजराय न मम ॥ (एवं सर्वत्र त्यागः) । ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा ॥ ॐ व्यापकाय स्वाहा ॥ ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा ॥ ॐ उक्षाणाय स्वाहा ॥ ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ ॐ विमुक्ताय स्वाहा ॥ ॐ वासकाय स्वाहा ॥ ॐ सप्तकाय स्वाहा ॥ ॐ लीलालोलुपाय स्वाहा ॥ ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा ॥ ॐ ऐरावताय

स्वाहा ॥ ॐ औषधीघ्नाय स्वाहा ॥ ॐ बन्धनाय स्वाहा ॥ ॐ दिव्याकाराय स्वाहा ॥ ॐ कम्बलाय स्वाहा ॥ ॐ क्षोभणाय स्वाहा ॥ ॐ अगवाय स्वाहा ॥ ॐ कालाय स्वाहा ॥ ॐ बलधराय स्वाहा ॥ ॐ अणवे स्वाहा ॥ ॐ चन्द्रवारणाय स्वाहा ॥ ॐ फटाटोपाय स्वाहा ॥ ॐ जटिलाय स्वाहा ॥ ॐ ऋतवे स्वाहा ॥ ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा ॥ ॐ विकटाय स्वाहा ॥ ॐ मणिभाय स्वाहा ॥ ॐ गुणवन्धाय स्वाहा ॥ ॐ डामराय स्वाहा ॥ ॐ ठंठफणाय स्वाहा ॥ ॐ स्थण्डिलाय स्वाहा ॥ ॐ दन्तुराय स्वाहा ॥ ॐ धनदाय स्वाहा ॥ ॐ नागकर्णाय स्वाहा ॥ ॐ फोत्काराय स्वाहा ॥ ॐ महादलाय स्वाहा ॥ ॐ चीरकाय स्वाहा ॥ ॐ सिंहाय स्वाहा ॥ ॐ मृगाय स्वाहा ॥ ॐ पक्षाय स्वाहा ॥ ॐ मेघवाहनाय स्वाहा ॥ ॐ तीक्ष्णोष्ठाय स्वाहा ॥ ॐ अनलाय स्वाहा ॥ ॐ सुक्रतवे स्वाहा ॥ ॐ पुंघापाय स्वाहा ॥ ॐ वक्रकाय स्वाहा ॥ ॐ वाताय स्वाहा ॥ ॐ यापनाय स्वाहा ॥ अनेन होमेन अजरादिक्षेत्रपालाः प्रीयन्तां न मम ॥

अथ वास्तुहोमः ।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशोऽअनमीवो भवानः । यत्त्वे महे प्रतितन्नोजुषस्व शन्नोभवद्विपदेशं चतुष्पदे ॥ स्वाहा इदं वास्तोष्पतये न मम ॥

ततः प्रधानहोमः । प्रधानो विष्णुश्चेत्तदा–इदं विष्णु० इति मन्त्रेण । शिवस्य—

ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥ बाहुभ्यामुततेनमः ॥ १ ॥

इति मन्त्रेण । अम्बिकायाः अम्बेऽअम्बिके० । लक्ष्म्याः श्रीश्चतेलक्ष्मी० सरस्वत्याः—

ॐ पावकानःसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवति ॥ यज्ञंवष्टुधियावसुः ॥ १ ॥

एवं गणपत्यादयः प्रधानाश्चेत्तदा तत्तन्मन्त्रेण प्रधानहोमः कार्यः । श्रीचण्डीयागे—प्रथमं पुस्तकं संपूज्य कवचार्गलाकीलकानि पठित्वा रात्रिसूक्तं च पठित्वा नवार्णन्यासं विधायाष्टोत्तरशतनवार्णमंत्रेण तिलाज्यपायस-मिश्रद्रव्येण हुत्वा प्रथमचरित्रोक्तन्यासान् कृत्वा 'ॐ नमश्चंडिकायै' इति देवीं नमन् 'मार्कण्डेय उवाच' इत्यारभ्य सप्तशतमन्त्रैः सप्तशतसंख्याकहोमं समापयेत् । (मध्ये चरित्रसमाप्तौ) अग्रिमचरित्रस्य ध्यानादिकं कृत्वा तत्तच्चरित्र-होममारभेत । (अध्यायसमाप्तौ तु) सर्वत्र पत्रपुष्पफलसहितैः प्रत्यध्यायोक्तद्रव्यैः प्रत्यध्यायोक्तवैदिकैस्तान्त्रिकैर्वा मन्त्रैः

---

१ देव्या हवनविधिः । श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीनां मूलमन्त्रेण शतवारं उत–सप्तशतीमन्त्रैः जपदशांशसंख्यया पायसतिलकमलबिल्वपलाशलाजदूर्वाङ्कुरयवरक्तचन्दनगुग्गुलसर्षपाद्यथाभीष्टद्रव्यैः 'ॐ सावर्णिः सूर्यतनयो' इत्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः' इत्यन्तं काम्यप्रयोगानुसारेण यथेप्सितमन्त्रैर्दशांशहोमं कुर्यात् ॥ सम्पुटितहोमः–मन्त्रपुटं बीजपुटं दुर्गास्तोत्रं पठेत्सदा ॥ मन्त्रबीजपुटा दुर्गा कामनासिद्धिदा सदा ॥ १ ॥ होमकाले सदा मन्त्रं दुर्गामन्त्रं पृथग् हुनेत् ॥ कामनाबीजसंयोगो दुर्गामन्त्रेण संहुनेत ॥ २ ॥ दुर्गास्तवनमन्त्राणां संख्यासप्तशतं भवेत् ॥ कामगा मन्त्रसंख्या च शतं चैव चतुर्दश ॥ ३ ॥ मध्ये मन्त्रान् सप्तशतं होमकाले तु यो जपेत् ॥ पाठे मन्त्रपुटं वाच्यं होमे मन्त्राः पृथक् पृथक् ॥ ४ ॥ होमसंख्या च मन्त्राणां शतं वै चैकविंशतिः ॥ पाठे बीजपुटं वाच्यं होमे बीजपुटं हुनेत ॥ ५ ॥

महाहुतिं समर्पयेत् जलोत्सर्जनं च कुर्यात्। पाठसमाप्तौ—खङ्गिनी शूलिनी घोरेत्यादिन्यासान् कृत्वा नवार्णमंत्राष्टोत्तर-शताहुतीर्दत्वा अनन्तरं देवीसूक्तं रहस्यत्रयं च पठेत्। अत्र नवार्णमंत्रस्य जपान्तरं चेत्तदा तद्दशांशहोमोऽपि सम्पाद-नीयः। ततो यवतिलसमिद्भिः पुनर्मूलमंत्रेण होमं संपाद्य व्याहृतिहोमः कार्यः।

पीठदेवताहोमः, आवरणदेवताहोमश्च ।

एवं प्रधानहोमं कृत्वा पीठदेवताभ्यो नामभिराज्यं पायसं च जुहुयात्॥ आधारशक्त्यै स्वाहा। मूलप्रकृत्यै स्वाहा। कालाग्निरुद्राय स्वाहा। महामंडूकाय स्वाहा। कूर्माय स्वाहा। वराहाय स्वाहा। अनंताय स्वाहा। भूम्यै स्वाहा। अमृ-तार्णवाय स्वाहा। रत्नद्वीपाय स्वाहा। हेमगिरये स्वाहा। नंदनोद्यानाय स्वाहा। मणिभूम्यै स्वाहा। रत्नमंडपाय स्वाहा। कल्पतरवे स्वाहा। रत्नसिंहासनाय स्वाहा। धर्माय स्वाहा। ज्ञानाय स्वाहा। वैराग्याय स्वाहा। ऐश्वर्याय स्वाहा। अधर्माय स्वाहा। अज्ञानाय स्वाहा। अवैराग्याय स्वाहा। अनैश्वर्याय स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा। अनंताय स्वाहा। वास्तु-पुरुषाय स्वाहा। सं सत्याय स्वाहा। रं रजसे स्वाहा। तं तमसे स्वाहा। मां मायायै स्वाहा। विं विद्यायै स्वाहा। उड्डाणपीठेश्वरसहितोड्डाणपीठेश्वर्यंबायै स्वाहा। मातृकापीठेश्वरसहितमातृकापीठेश्वर्यंबायै स्वाहा। जालंधरपीठेश्वरसहित-जालंधरपीठेश्वर्यंबायै स्वाहा। कोल्हागिरिपीठेश्वरसहित कोल्हागिरिपीठेश्वर्यंबायै स्वाहा। पूर्णगिरिपीठेश्वरसहितपूर्णगिरिपीठे-श्वर्यंबायै स्वाहा। संहारगिरिपीठेश्वरसहितसंहारगिरिपीठेश्वर्यंबायै स्वाहा। कोल्हापुरपीठेश्वरसहितकोल्हापुरपीठेश्वर्यंबायै

स्वाहा । कामरूपपीठेश्वरसहितकामरूपपीठेश्वर्यंबायै स्वाहा । गं गणेशाय स्वाहा । क्षं क्षेत्रपालाय स्वाहा । पां पादुकाभ्यः स्वाहा । बं बटुकेभ्यः स्वाहा । जं जयायै स्वाहा । विं विजयायै स्वाहा । जं जयंत्यै स्वाहा । अं अपराजितायै स्वाहा । अग्निमुखवेतालाय स्वाहा । प्रेतवाहनवेतालाय स्वाहा । बालामुखवेतालाय स्वाहा । धूम्राक्षवेतालाय स्वाहा । कंदाय स्वाहा । नालाय स्वाहा । दलेभ्यः स्वाहा । केसरेभ्यः स्वाहा । कर्णिकायै स्वाहा । अं सूर्यमंडलाय स्वाहा । उं सोममंडलाय स्वाहा । मं वह्निमंडलाय स्वाहा । अं आत्मने स्वाहा । उं अंतरात्मने स्वाहा । पं परमात्मने स्वाहा । उं ज्ञानात्मने स्वाहा । विं विष्णुमायायै स्वाहा । चें चेतनायै स्वाहा । बुं बुद्ध्यै स्वाहा । निं निद्रायै स्वाहा । क्षुं क्षुधायै स्वाहा । छां छायायै स्वाहा । शं शक्त्यै स्वाहा । तृं तृष्णायै स्वाहा । क्षां क्षांत्यै स्वाहा । जां जात्यै स्वाहा । लं ललितायै स्वाहा । शां शांत्यै स्वाहा । श्रं श्रद्धायै स्वाहा । कां कांत्यै स्वाहा । लं लक्ष्म्यै स्वाहा । धृं धृत्यै स्वाहा । वृं वृद्ध्यै स्वाहा । स्मृं स्मृत्यै स्वाहा । दं दयायै स्वाहा । तुं तुष्ट्यै स्वाहा । पुं पुष्ट्यै स्वाहा । मां मातृकायै स्वाहा । भ्रां भ्रांत्यै स्वाहा । ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय स्वाहा । सर्वात्मसंसर्गयोगपीठात्मने स्वाहा इति ॥ पीठदेवताहोमः ।

अथावरणदेवताः—ऐं महाकाल्यैविच्चे । ह्रीं महालक्ष्म्यैविच्चे । क्लीं महासरस्वत्यैविच्चे । हूं महिषाय स्वाहा । क्षं सिंहाय स्वाहा । गं गणपतये स्वाहा । हं कालाय स्वाहा । हूं मृत्यवे स्वाहा । हैं रुद्राय स्वाहा । हौं गौर्यै स्वाहा । श्रीं विष्णवे स्वाहा । श्रीं लक्ष्म्यै स्वाहा । ऐं ब्रह्मणे स्वाहा । ऐं सरस्वत्यै स्वाहा । हां हृदयाय स्वाहा । ह्रीं शिरसे स्वाहा । हूं

शिखाय स्वाहा । हैं कवचायहुं स्वहा । हौं नेत्रत्रयायवौषट् स्वाहा । हः अस्त्रायफट् स्वाहा । गुं गुरुभ्यः स्वाहा । पं परम-
गुरुभ्यः स्वाहा । पं परमेष्ठिगुरुभ्यः स्वाहा । हरये स्वाहा । हराय स्वाहा । गणेशाय स्वाहा । नंदजायै स्वाहा । रक्तदंतिकायै
स्वाहा । शाकंभर्यैं स्वाहा । दुर्गायै स्वाहा । भीमायै स्वाहा । भ्रामर्यैं स्वाहा । ब्राह्मयै स्वाहा । माहेश्वर्यैं स्वाहा । कौमार्यैं
स्वाहा । वैष्णव्यै स्वाहा । वाराह्यै स्वाहा । इंद्राण्यै स्वाहा । नारसिंह्य स्वाहा । चामुंडायै स्वाहा । अं असितांगभैरवाय
स्वाहा । रुं रुरुभैरवाय स्वाहा । चं चंडभैरवाय स्वाहा । क्रों क्रोधभैरवाय स्वाहा । उं उन्मत्तभैरवाय स्वाहा । कं कपाल-
भैरवाय स्वाहा । भीं भीषणभैरवाय स्वाहा । सं संहारभैरवाय स्वाहा । लं इंद्राय स्वाहा । रं अग्नये स्वाहा । मं यमाय
स्वाहा । क्षं निर्ऋतये स्वाहा । वं वरुणाय स्वाहा । यं वायवे स्वाहा । सं सोमाय स्वाहा । हं ईशानाय स्वाहा । वज्राय स्वाहा ।
शक्त्यै स्वाहा । दंडाय स्वाहा । खड्गाय स्वाहा । पाशाय स्वाहा । अंकुशाय स्वाहा । गदायै स्वाहा । त्रिशूलाय स्वाहा ॥

अथ दुर्गे स्मृतामन्त्रप्रयोगः ।

दुर्गे स्मृता इति मन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः उष्णिक् छन्दः श्रीमहामाया देवता शाकम्भरी शक्तिः दुर्गा बीजं श्रीवायु-
स्तत्वं मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः । दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः अंगुष्ठाभ्यां
(हृदयाय नमः) स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा) यदन्ति यच्च दूरके भयं
विन्दति मामिह मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्) पवमानवि तज्जहि अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुम्) । दारिद्र्यदुःख-

भयहारिणि का त्वदन्या कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्) सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)। अथ ध्यानम्—केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र । चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि । इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य योनिमुद्रया नत्वा ॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह । पवमानवितज्जहि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं काँसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ महति कार्ये लक्षम् अयुतम् सहस्रं अष्टोत्तरशतं वा जपित्वा सकलकार्यसिद्धिर्भवति । दशांशक्षीराज्यहवनम् । दशांशतर्पणमार्जनसुवासिनीब्राह्मणभोजनानि ॥ इति शुभम् ॥ (श्रीदुर्गोपासनाकल्पद्रुमत उद्धृतः) ।

अथ नवचण्डीशतचण्डीमुहूर्त्तविचारः ॥ वैशाखः फाल्गुनो माघः श्रावणो मार्ग एव च । आश्विनः कार्त्तिको मासाः पूजायां तु शुभावहाः ॥ तृतीया पञ्चमी पूर्णा सप्तमी च त्रयोदशी । दशमी द्वादशी षष्ठी चतुर्थी नवमी तथा ॥ कृष्णाष्टमीचतुर्दश्यौ तिथयः सर्व कामदाः । रविर्बृहस्पतिः सोमो बुधः शुक्रः शुभावहाः ॥ अश्विनी रोहिणी स्वाती पौष्णं ज्येष्ठोत्तरात्रयम् । पुष्यं पुनर्वसु भानि श्रेष्ठानि शक्तिपूजने ॥ निष्कामतया यज्ञाद्यनुष्ठाने परशुरामः-यदैव जायते वित्तं चित्तं श्रद्धासमन्वितम् । तदैव पुण्यकालोऽस्य

अथोत्तरपूजनम् ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य मन्त्रजपदशांशहोमस्य कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं स्थापितदेवतानां मृडाग्नेश्चोत्तरपूजनं करिष्ये—इति सङ्कल्पं कृत्वा ॥

ॐ अग्नेनयसुपथारायेऽअस्मान्विश्वानिदेववयुनानिविद्वान् ॥ युयोध्ध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठान्तेनमऽउक्तिंविधेम ॥ १ ॥

मृडाग्नये नमः । इति मन्त्रेण सम्पूज्य स्थापितदेवतानामुत्तरपूजनं कुर्यात् । ततो हुतशेषद्रव्यं गृहीत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात् । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम । इति हुतशेषाज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । (ततो भूरादिनवाहुतयः) ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम । ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ॥

यतोऽनियतजीवनम् ॥ अतः सवषु कालेषु जपाद्यारम्भणं शुभम् ॥ अथ शान्तिकपौष्टिकमुहूर्त्तः—ग्रहपीठोत्पातादिशान्तये यद्धोमादिकं तच्छान्तिकम् । आयुर्द्रव्यादिवृद्धये यत्कर्म तत्पौष्टिकम् । चरध्रुवक्षिप्रसंज्ञकेषु मघाविशाखात्रयेषु शान्तिः सह पौष्टिकेन । विधौ सुखेऽर्के दशमे गुरौ च तनौ सदा स्यात् सति कारणे च ॥ दीपिकायाम् ॥ शान्तिकर्माणि कुर्वीत रोगे नैमित्तिके तथा । गुरुभार्गवमौढ्येऽपि दोषस्तत्र न विद्यते ॥ इति ॥

ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषांऽसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥१॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥

ॐ सत्वन्नोऽअग्नेवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ ॥ अवयक्ष्वनोव्वरुणाᳪ रराणो वीहि मृडीकᳪ सुहवोनऽएधि स्वाहा ॥१॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥

ॐ अयांश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि ॥ अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजᳪ स्वाहा ॥१॥ इदमग्नये अयसे न मम ॥

ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः ॥ तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥१॥

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमᳪ श्रथाय ॥ अथा वयमादित्यव्रतेत

व्रानांगसोऽअदितयेस्याम स्वाहा ॥१॥ इदं वरुणायादित्यायादितये न मम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ॥ इति नवाहुतयः ॥

अथ बलिदानम् ।

अग्न्यायतनस्य समन्ताद्दिक्षु विदिक्षु च दशदिक्पालानां सदीपदधिमाषभक्तबलयो देयाः । तत्र क्रमः । ॐ त्रातारमिन्द्र० त्विन्द्र — इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो इन्द्र ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ॥ एवं सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने० ॥ अग्नये सां० । भो अग्ने ! दिशं रक्ष बलिं० । अनेन० अग्निः प्री० ॥२॥ ॐ यमायत्वा० पित्रे ॥ यमाय सां० मि ॥ भो यम ! दि० बलिं० । अनेन० यमः प्री० ॥३॥ ॐ असुन्वन्तम० ॥ निर्ऋतये सा० बलिं० मि ॥ भो निर्ऋते ! दि० । अनेन० निर्ऋतिः प्री० ॥ ४ ॥ ॐ तत्त्वायामि० षः ॥ वरुणाय सां० भो वरुण ! दि० अनेन० वरुणः प्री० ॥ ५ ॥ ॐ आनोनियु० नः ॥ वायवे सां० मि । भो वायो ! दि० । अनेन वायुः प्री० ॥ ६ ॥ ॐ व्वयꣳ सोम० हि ॥ भो सोम ! दि० बलिं० । अनेन० सोमः प्री० ॥ ७ ॥ ॐ तमीशानं० ये ॥ ईशानाय सां० मि । भो ईशान ! दि० । अनेन० ईशानः प्री० ॥ ८ ॥ ॐ अस्मेरुद्रामे० वाः ॥

ब्रह्मणे सां० मि। भो ब्रह्मन्! दि०। अनेन० ब्रह्मा प्री०॥ ६॥ ॐ स्योनापृ० प्रथाः॥ अनन्ताय सां० मि। भो अनन्त! दि० बलिं। अनेन० अनन्तः प्री०॥१०॥ ततो ग्रहवेदीसमीपे ग्रहादिभ्यः सदीपमाषभक्तबलयो देयाः॥ तत्र क्रमः—

ॐ आकृष्णेन० पश्यन्॥ सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो सूर्य! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन सूर्यः प्रीयताम्॥ १॥ ॐ इमन्देवा० राजा॥ सोमाय सां० उमारूपाधिदेवताप्रत्यधिदे० मि। भो सोम! इमं बलि०। अनेन० सोमः प्री०॥ २॥ अग्निर्मू० ति॥ भौमाय सां० स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदे० मि। भो भौम! इमं बलिं०। अनेन० भौमः प्री०॥३॥ उद्बुध्यस्वा० त॥ बुधाय सां० नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवता० मि। भो बुध! इमं बलि०। अनेन० बुधः प्री०॥ ४॥ ॐ बृहस्पते० म्॥ बृहस्पतये सां० ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदे० मि। भो बृहस्पते! इमं बलि०। अनेन० बृहस्पतिः प्री०॥ ५॥ ॐ अन्नात्परि० धु०॥ शुक्राय सां० इन्द्रेन्द्राणीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदे० मि। भो शुक्र! इमं बलिं०। अनेन० शुक्रः प्रीयताम्॥ ६॥ ॐ शन्नोदेवीर० नः॥ शनैश्चराय सां० यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदे० मि। भो शनैश्चर! इमं बलिं०। अनेन० शनैश्चरः प्री०॥ ७॥ ॐ कयानिश्च० ता॥ राहवे सां० कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेव० मि। भो राहो! इमं बलिं०। अनेन० राहुः प्री०॥ ८॥ ॐ केतुं कृण्वं० थाः॥ केतवे सां० चित्रगुप्तब्रह्मरूपाधिदे० मि। भो केतो! इमं बलिं०। अनेन० केतुः प्री०॥ ६॥ ॐ गणानान्त्वा० म्॥ गणपतये सां०

मि। भो गणपते! इमं बलिं०। अनेन० गणपतिः प्री० ॥ १ ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० म् ॥ दुर्गायै० सां० मि। भो दुर्गे! इमं बलिं० आयुःकर्त्री क्षे० शां० पु० तु० वरदा भव। अनेन० दुर्गा प्री० ॥ २ ॥ ॐ वायोये० ये ॥ वायवे सां० मि ॥ भो वायो! इमं बलिं०। अनेन० वायुः प्री० ॥ ३ ॥ ॐ घृतंघृत० हा ॥ आकाशाय सां० मि। भो आकाश! इमं बलिं०। अनेन० आकाशः प्री० ॥ ४ ॥ ॐ यावाङ्कशा० म् ॥ अश्विभ्यां साङ्गाभ्यां मि०। भो अश्विनौ! इमं बलिं० मम० आयुःकर्तारौ० वरदौ भवतम्। अनेन० अश्विनौ प्रीयेताम् ॥५॥ ॐ वास्तोष्पते प्र० दे० ॥ वास्तोष्पतये सां० मि। भो वास्तोष्पते! इमं०। अनेन० वास्तोष्पतिः प्री० ॥ दिक्पालेभ्य एकतन्त्रेणैकमेव बलिं दद्यात् ॥

ॐ प्राच्यैदिशेस्वाहाऽर्व्वाच्यैदिशेस्वाहादक्षिणायैदिशेस्वाहाऽर्व्वाच्यैदिशेस्वाहा प्रतीच्यैदिशेस्वाहाऽर्व्वाच्यैदिशेस्वाहोदीच्यैदिशेस्वाहाऽर्व्वाच्यैदिशेस्वाहोर्द्ध्वायैदिशे स्वाहाऽर्व्वाच्यैदिशेस्वाहाऽवाच्यैदिशेस्वाहाऽर्व्वाच्यैदिशेस्वाहा ॥ १ ॥

इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः, इति सम्पूज्य (हस्ते जलं गृहीत्वा) इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्य एतान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि ॥ प्रार्थना—भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः! साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः! मम स० आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत ॥

(ततो हस्ते जलं गृहीत्वा) अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् ॥ १ ॥ एवं सर्वेभ्यो ग्रहेभ्य एकतन्त्रेणैकमेव बलिं दद्यात् ॥

अथ कूष्माण्डबलिविधानम् ।

आचम्य प्राणानायम्य देशकालाद्युच्चार्य मम सकुटुम्बस्य सर्वारिष्टप्रशान्तिसर्वाभीष्टसिद्धिकल्पोक्तफलावाप्तिद्वारा श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं कूष्माण्डबलिदानं करिष्ये । तदङ्गत्वेन पञ्चोपचारैः पूजनं बलिपूजनं च करिष्ये ॥ मूलेन मुख्यदेवतां पञ्चोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतः स्वयमुदङ्मुखो बलिं प्राङ्मुखं पीठे वस्त्रगुण्ठितं कूष्माण्डं निधाय—"ॐ कूष्माण्डबलये नमः" इति आवाहनवस्त्रगन्धादिभिः सम्पूज्य अभिमन्त्रयेत् ॥ पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादवस्थितः ॥ प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥ १ ॥ चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ॥ चामुण्डा-बलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा ॥ अतस्त्वां घातयाम्यद्य यस्माद्यज्ञे मतो वधः ॥ इति ॥ ततः शस्त्रं गन्धादिना सम्पूज्य अभिमन्त्रयेत् । ऐं ह्रीं श्रीं रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः ॥ इति ॥ ह्रां ह्रीं खड्ग आं हुं फट् इति हस्ते शस्त्रं गृहीत्वा—'ॐ कालिकालिवज्रेश्वरिलोहदण्डायै नमः' इति पठन् छित्त्वा छेदनावासरे न विलोकयेत् ॥ कौशिकि रुधिरेणाप्यायतामिति देव्यै अर्घं निवेद्य अवशिष्टार्धस्य पञ्चभागान् कृत्वा पूतनायै बलिभागं निवेदयामि । चरक्यै बलिभागं निवेदयामि । पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि । ततो माषपिष्टपशुं

शत्रुं शस्त्रेण छित्त्वा स्कन्दाय पञ्चार्धं समर्पयामि । विशिखाय पञ्चार्धं समर्पयामि । इति समर्प्य शेषं रक्षोभ्यो हरेत् ॥ मन्त्रास्तु—ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर ॐ फ्रीं ॐ हुं फट् मर्द मर्द हुम्, इति तच्छेपं बहिर्दद्यात् ॥ बलिं गृह्णन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा । मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ॥ डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ जम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः साध्या विद्याधरा नगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥ जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ॥ मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ सौम्या भवन्तु तृप्तास्ते भूतप्रेताः सुखावहाः ॥ भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र ॥ इति ॥ ततः स्नात्वा कृततिलको देवीं प्रार्थयेत् ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ दु. अ. १ श्लो. ८० ॥ सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्य-स्त्वतिसुन्दरी ॥ परा पराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥८१॥ यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥८२॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥८३॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥८४॥ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ दु. अ. २ श्लो. २४ ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५ ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्माँस्तथा भुवम् ॥ २६ ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसङ्गीनि

तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥२७॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते । २८॥ दु. अ. ११ श्लो. २४ ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥२५॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥२६॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥ २७ ॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ २८ ॥ रूपं देहि जयं देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ इति प्रार्थयेत् ॥ एतद्बलिदानं होमाङ्गं तच्च होमोत्तरमेव ॥ पूजाङ्गं वैकल्पिकम् ॥ तत्र च पायसबलिदानमवश्यमेवेति बलिदानविधिः ॥

अथ ग्रहबलिः ।

ॐ ग्रहाऊर्ज्जाहुतयोव्यन्तोव्विप्रायमतिम् ॥ तेषांव्विशिप्रियाणांव्वोहमिषमूर्जᳬ समंग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टङ्गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥ १ ॥

ग्रहेभ्यो नमः, इति सम्पूज्य (हस्ते जलं गृहीत्वा) सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः

सशक्तिकेभ्यः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतागणपत्यादिपञ्चलोकपालवास्तोष्पतिसहितेभ्य एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ प्रार्थना—भो भो सूर्यादिग्रहाः ! साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतागणपत्यादिपञ्चलोकपाल-वास्तोष्पतिसहिताः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत ॥ (हस्ते जलं गृहीत्वा) अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम् ॥

अथ योगिनीबटुकसर्वभूतबलयः ।

उक्तं च कुलार्णवे—ऐशाने बटुकं देवमाग्नेये योगिनीबलिम् ॥ नैर्ऋत्ये क्षेत्रपालं च वायव्ये गणनायकम् ॥ १ ॥ उत्तरे सर्वभूतेभ्यो मध्ये च मुख्यदेवताम् ॥ अदत्त्वा बटुकादीनां यः पूजयति चण्डिकाम् ॥ पूजा च विफला तस्य देवीशापः प्रजायते ॥ २ ॥ देव्या ईशानभागे बिन्दुत्रिकोणवृत्तचतुरस्रं मण्डलं कृत्वा मण्डलाय नमः इति सम्पूज्य, आधारपात्रं निधाय बलिं पूरयित्वा नैवेद्यात् किञ्चिद् बलिमध्ये निक्षिप्य 'बलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य ह्रीं बटुकाय एह्येहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर पिंगलत्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितमिमं बलिं गृह्ण गृह्ण नमः । वामांगुष्ठानामिकाभ्यां बलिपात्रामृतेन धारारूपेण जलमुत्सृजेत् । पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा । बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः ॥ शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः ॥ इति ध्यात्वा एष बलिर्बटुकाय न मम । योनिमुद्रया प्रणमेत् । आग्नेये योगिनीबलिः । पूर्ववत् मण्डलं कृत्वा सम्पूज्य बलिं निधाय । यां योगिनीबलिद्रव्याय नमः, इति

सम्पूज्य । जलमादाय । ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निस्तले वा पाताले वा तले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा ॥ क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः ॥ १ ॥ शुक्लवर्णे त्रिशूलडमरुपाशांकुशधरे सर्वालंकारभूषिते ससैन्ये सौम्ये चतुःषष्टियोगिनीसहिते एह्येहि आगच्छ आगच्छ सर्वयोगिनीभ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वभूताधिपतिभ्यो डाकिनीभ्यः शाकिनीभ्यस्त्रैलोक्यनिवासिनीभ्य इमं बलिं गृह्णीत २ ममेप्सितं कार्यं कुरुत कुरुत नमः ॥ वामांगुष्ठमध्यमानामिकांगुलिभिर्जलमुत्सृजेत् ॥ पुष्पं गृहीत्वा—याः काश्चिद् योगिनीरौद्राः सौम्या घोरतराः पराः ॥ खेचरी-भूचरी-व्योमचर्यः प्रीतास्तु मे सदा ॥ पुष्पं निक्षिप्य । एष बलिर्योगिनीभ्यो न मम ॥ योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ इति ॥ अथ नैर्ऋत्ये क्षेत्रपालबलिः—मण्डलादि पूर्ववत् ॥ मण्डलं सम्पूज्य तदुपरि आधारे बलिं निधाय क्षं क्षेत्रपालाय० सम्पूज्य ॥ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः एह्येहि देवीपुत्र उच्छिष्टहारिन् मुहुर्मुहू रक्ष क्षं क्षेत्रपाल सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितमिमं बलिं गृह्ण गृह्ण नमः ॥ वामाङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां जलमुत्सृजेत् ॥ पुष्पं गृहीत्वा—यं यं यं यक्षरूपं दशदिशि वदनं भूमिकम्पायमानं सं सं सं संहारमूर्तिं शिरसि धृतजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम् ॥ दं दं दं दीर्घकायं कृतनरवपुषं ऊर्ध्वरेखाकरालं पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ १ ॥ यो यस्मिन् क्षेत्रवासी च क्षेत्रपालः स किंकरः ॥ प्रीतोऽसौ बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे ॥२॥ पुष्पं निक्षिप्य, एष बलिः क्षेत्रपालाय न मम ॥ योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ अथ वायव्ये गणपतिबलिः—मण्डलादि पूर्ववत् ॥ मण्डलं सम्पूज्य तदुपरि आधारे बलिं निधाय 'बलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य ॥ गां गीं गूं गैं गौं गः श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं

मे वशमानय इमं बलिं गृह्ण गृह्ण नमः। वाममध्यमया वक्रया जलमुत्सृजेद् ॥ पुष्पं गृहीत्वा—सर्वदा सर्वकार्याणि निर्विघ्नं साधयाम्यहम् ॥ शान्तिं करोतु मे नित्यं विघ्नराज सदा क्रियाम् ॥ पुष्पं निक्षिप्य—एष बलिर्गणपतये न मम ॥ योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ ४ ॥ अथोत्तरे सर्वभूतबलिः—मण्डलादि पूर्ववत् कृत्वा मण्डलं सम्पूज्य तदुपरि आधारे बलिं निधाय 'बलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य। ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् इमं बलिं गृह्ण गृह्ण नमः ॥ वामकर-सर्वांगुलिभिर्बलिमुत्सृजेत् ॥ पुष्पं गृहीत्वा—भूता ये विविधाकारा दिव्यभूम्यन्तरिक्षगाः ॥ पातालतलसंस्थाश्च शिवयोगेन भाविताः ॥ १ ॥ कराद्याः शतसंख्याकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः ॥ तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥ नानावर्णकृतैर्वक्रैर्नानाभूषाम्बरायुधैः ॥ नानाभूतगणैर्यूथैः सर्वभूतेश्वरं भजेत् ।३॥ पुष्पं निक्षिप्य, एष बलिः सर्वभूतेभ्यो न मम ॥ योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ अथ देव्यग्रे मुख्यबलिः। पूर्ववत् मण्डलं कृत्वा सम्पूज्य आधारं संस्थाप्य तदुपरि बलिं निधाय 'बलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य ॥ मूलम्—सांगायै सपरिवारायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिणीश्रीत्रिगुणात्मिकादुर्गादेवतायै नम इमं सदीपबलिं गृह्ण गृह्ण नमः ॥ देवीतीर्थेन जलमुत्सृजेत् ॥ मूलेन पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥ एष बलिः श्रीत्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेवतायै न मम। योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥

अथ प्रार्थना ॥

सर्वपीठोपपीठानि द्वारोपस्तरणेऽपि च ॥ क्षेत्रे क्षेत्रे हि संदेहे सर्वे दिग्भागसंस्थिताः ॥ १ ॥ योगानियोगवीरेन्द्राः सर्वे यन्त्रसमागताः ॥ नगरे वाथ वा ग्रामे अटव्यां सरितस्तटे ॥२॥ वापीकूपेषु वृक्षेषु श्मशानेषु चतुष्पथे ॥ नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये ॥३॥ ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा ॥ शरणागतोऽस्म्यहं तेषां ते सर्वे मे वसुप्रदाः ॥४॥ बलिदानेन सन्तुष्टाः प्रयच्छन्तु ममेप्सितम् ॥ सर्वे कार्याणि कुर्वन्तु दोषांश्च घ्नन्तु मे सदा ॥ ५ ॥ इति सम्प्रार्थ्य पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा पठेत् । भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ तानि क्षमन्तामिह वा रमन्तां गच्छन्तु चान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥ १ ॥ इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य नाराचमुद्रया भूतानि विसृजेत् ॥ तत्र मन्त्राः— बलिं गृह्णन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ १ ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ॥ डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥२॥ जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा मालाविद्याधरा नगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥ ३ ॥ जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ॥ मा विघ्नं मा च पाप च मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ ४ ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ॥ ५ ॥ इति पठित्वा नाराचमुद्रया भूतानि विसृज्य मूलमन्त्रेण शुद्धजलेनात्मानमभ्युक्ष्याचामेत् ॥ इति ॥

अथ क्षेत्रपालबलिदानम् ।

एकस्मिन् वंशादिपात्रे कुशानास्तीर्य तदुपरि मनुष्याहारचतुर्गुणं द्विगुणं वा माषदध्योदनं जलपात्रं च निधाय चतुर्मुखं दीपं प्रज्वाल्य हरिद्राकुङ्कुमादिपताकायुतं कृत्वा ॥

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः ॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यंवैश्वानरंक्षैत्रजित्यायदेवाः ॥ १ ॥

क्षेत्रपालाय नमः, इति पञ्चोपचारैः षोडशोपचारैर्वा सम्पूज्य प्रार्थयेत् । नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह ॥ पूजाबलिं गृहाणेमं सौम्यो भव च सर्वदा ॥ १ ॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे ॥ आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥ २ ॥ ततो बलिदानम् । हस्ते जलं गृहीत्वा— क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-गणसहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ प्रार्थना—भो क्षेत्रपाल ! क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ॥ (हस्ते जलं गृहीत्वा) अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् ॥ यजमानस्य मस्तकोपरि सकृद् भ्रामयित्वा शूद्रेण बलिं ग्राहयित्वा चतुष्पथे निःक्षिपेत् ॥ ततो यजमानस्तस्य पृष्ठतो द्वारपर्यन्तं गत्वा जलं क्षिपेत् हिङ्कारायेति मन्त्रेण—

॥१८१॥

ॐ हिङ्कारायस्वाहाहिङ्कृतायस्वाहाक्रन्दतेस्वाहावक्रन्दायस्वाहाप्रोथतेस्वाहाप्प्र प्प्रोथायस्वाहागन्धायस्वाहाग्घ्रातायस्वाहानिविंष्टायस्वाहोपविष्टायस्वाहा सन्दिताय स्वाहावल्गतेस्वाहासीनायस्वाहाशयानायस्वाहा स्वपतेस्वाहाजाग्ग्रतेस्वाहा कूजते स्वाहाप्रबुद्धायस्वाहाविजृम्भमाणायस्वाहाविचृत्तायस्वाहासꣳहानायस्वाहोपस्थिता यस्वाहायनायस्वाहाप्प्रायणायस्वाहा ॥ १ ॥ यजमानः पाणिपादं प्रक्षाल्याचमेत् ॥

अथ पूर्णाहुतिहोमः ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं वसोर्द्धारासमन्वितं पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये ॥ ततः नारिकेलफलं रक्तवस्त्रवेष्टितं षट् चतुःस्रुवेण गृहीतमाज्यं स्रुच्यां कृत्वा तस्योपरि नारिकेलफलं संस्थाप्य 'ॐ पूर्णाहुत्यै नमः' इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य पूर्णाहुतिं जुहुयात् । तत्र मन्त्राः—

ॐ समुद्रादूर्म्मिर्म्मधुमाँ २ ॥ ऽउदारदुपाꣳशुनासममृतत्वमानट् ॥ घृतस्यनाम

गुहांस्यदास्तिजिह्वादेवानाममृतस्यनाभिः ॥१॥ वयन्नामप्रब्रवामाघृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामानमोभिः ॥ उपब्रह्माश्रृणवच्छस्यमानञ्चतुःश्रृङ्गोवमीद्गौरऽएतत् ॥२॥ चत्वारिश्रृङ्गात्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षेसप्तहस्तासोऽअस्य ॥ त्रिधाबद्धोवृषभोरोरवीति महोदेवोमर्त्याँ२ऽआविवेश ॥ ३ ॥ त्रिधाहितम्पणिभिर्गुह्यमानङ्गविदेवासोघृतमन्वविन्दन् ॥ इन्द्रऽएकꣳ सूर्य्यऽएकञ्जजानवेनादेकꣳस्वधयानिष्टतक्षुः ॥ ४ ॥ एताऽअर्षन्तिहृद्यात्समुद्राच्छतव्रजारिपुणानावचक्षे ॥ घृतस्यधाराऽअभिचाकशीमि हिरण्ययोवेतसोमध्यऽआसाम् ॥ ५ ॥ सम्यक्स्रवन्तिसरितोनधेनाऽअन्तर्हृदामनसा पूयमानाः ॥ एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयोघृतस्यमृगाऽइवक्षिपणोरीषमाणाः ॥ ६ ॥ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोवातप्रमियःपतयन्तियह्वाः ॥ घृतस्यधाराऽअरुषो

नव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥७॥ अभिप्प्रवन्तसमनेवयोषाः कल्याण्यः स्मयमानासोऽअग्निम् ॥ घृतस्यधाराः समिधोनसन्ततांजुषाणोहर्य्यतिजातवेदाः ॥८॥ कन्याऽइवव्वहतुमेतवाऽउऽअञ्ज्यञ्जानाऽअभिचाकशीमि ॥ यत्रसोमः सूयते यत्रयज्ञोघृतस्यधाराऽअभितत्पवन्ते ॥९॥ अभ्यर्षतसुष्टुतिङ्गव्व्यमाजिमस्मासुभद्राद्रविणानिधत्त ॥ इमंय्यज्ञन्नयतदेवतानोघृतस्यधारामधुमत्पवन्ते ॥१०॥ धामन्तेव्विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्तरायुषि ॥ अपामनीकेसमिथेयऽआभृतस्तमश्यामधुमन्तन्तऽऊर्म्मिम् ॥११॥ पुनस्त्वादित्यारुद्राव्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेनत्त्वन्तन्न्वंव्वर्धयस्वसत्याः सन्तुयजमानस्यकामाः ॥१२॥ सप्ततेऽअग्नेसमिधः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्तधामप्प्रियाणि ॥ सप्प्तहोत्राः सप्प्तधात्वायजन्तिसप्प्तयोनीरापृणस्वघृतेनस्वाहा ॥१३॥

मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिम्पृथिव्यावैश्वानर ऽमृत ऽआजातमग्निम् ॥ कविᳬसम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवा? ॥१४॥ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्णापुनरापत ॥ व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्जᳬशतक्रतो—स्वाहा ॥ १५ ॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नयेऽद्भ्यश्च न मम ॥ ततो वसोर्द्धारां जुहुयात। तत्र मन्त्राः—

ॐ सप्तते ऽअग्ने समिधः सप्तजिह्वा? सप्त ऽऋषयᳬसप्तधामप्प्रियाणि ॥ सप्तहोत्राᳬसप्प्तधात्त्वायजन्तिसप्तयोनीरापृणस्वघृतेनस्वाहा ॥ १ ॥ शुक्रज्ज्योतिश्चचित्रज्ज्योतिश्चसत्यज्ज्योतिश्चज्ज्योतिष्मांश्च ॥ शुक्रश्च ऽऋतपाश्चात्यᳬहाः ॥ २ ॥ ईदृङ्चान्यादृङ्चसदृङ्चप्प्रतिसदृङ्च ॥ मितश्चसम्मितश्चसभराᳬ ॥३॥ ऋतश्चसत्यश्चध्रुवश्चधरुणश्च ॥ धर्त्ताचव्विधर्त्ताचव्विधारय? ॥ ४ ॥ ऋतजिच्चसत्यजिच्चसेनजिच्चसुषेणश्च ॥ अन्तिमित्रश्चदूरे ऽअमित्रश्चगण? ॥५॥ ईदृक्षास ऽ

एताऽद्दृत्वास ऽऊषुरांः सद्दृत्वास ? प्प्रतिसद्दृत्वास ऽएतंन ॥ मितासंश्चसम्मितासोनोऽ
अद्यसभंरसोमरुतोयज्ञेऽअस्मिन् ॥६॥ स्वतंवाँश्चप्प्रघासीचंसान्तपनश्चंगृहमेधीचं ॥
क्रीडीचंशाकीचोज्जेषी ॥ ७ ॥ इन्द्रन्दैवीर्व्विशोमरुतोनुंवत्मांनोभवन्यथेन्द्रन्दैवीर्वि
शोमरुतोनुंवत्मांनोभंवन् ॥ एवमिमंयजंमानन्दैवीश्चव्विशोमानुषीश्चानुवत्मांनो
भवन्तु ॥ ८ ॥ इमॐस्तनमूर्ज्जस्वन्तन्धयापाम्प्रपींनमग्नेसरिरस्यमध्ये ॥ उत्सञ्जु
षस्वमधुमन्तमर्व्वन्त्समाद्रियॐसदंनमाव्विशस्व ॥९॥ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृते
श्रितोघृतम्म्वस्यधामं ॥ अनुष्वधमावंहमादयंस्वस्वाहांकृतंव्वृषभव्वक्षिहव्यम् ॥१०॥
वसोॐपवित्रमासिशतधांरंव्वसोॐपवित्रमसिसहस्रधारम् ॥ देवस्त्वासावितापुनातुव्व
सोॐपवित्रेणशतधारेणसुप्प्वाकामंधुक्षॐस्वाहा ॥ ११ ॥

कर्पूरार्तिक्यम्--ज्वालामालिन्यै नमः, गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्रायिधामभिः ॥ दिवꣳसदाꣳसिबृहतीवि तिष्ठसऽआत्वेषंवर्त्ततेतमः ॥ १ ॥

दुर्गाजी की आरती ।

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी ॥ मैया जय मंगलकरणी मैया जय आनन्द करणी ॥ तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ॥ जय० ॥ १ ॥ मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को ॥ मैया टीको० ॥ उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको ॥ जय अम्बे० ॥ २ ॥ कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ॥ मैया रक्ता० ॥ रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥ जय अम्बे० ॥ ३ ॥ केहरि वाहन राजत, खड्गखप्पर धारी ॥ मैया खड्ग ख० ॥ सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःखहारी ॥ जय अम्बे० ॥ ४ ॥ कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ॥ मैया नासा० ॥ कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती ॥ जय अम्बे० ॥ ५ ॥ शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ॥ मैया महिषा० ॥ धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥ जय अम्बे० ॥६॥ चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे ॥ माई शोणित० ॥ मधु कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे ॥ जय अम्बे० ॥ ७ ॥ ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ॥

माई तुम कमला० ॥ आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे० ॥ ८ ॥ चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों ॥ मैया नृत्य० ॥ बाजत ताल मृदंगा, और बाजे डमरू ॥ जय अम्बे० ॥ ९ ॥ तुम हो जग की माता तुम ही हो भरता ॥ माई तुम० ॥ भक्तन की दुःख हरता सुख संपति करता ॥ जय अम्बे० ॥ १० ॥ भुजा चार अति शोभित, वर अभय धारी ॥ मैया वर० ॥ मन वाञ्छित फल पावत, सेवत नर नारी ॥ जय अम्बे० ॥११॥ कञ्चन थाल विराजत अगर कपुर बाती ॥ माई अग० ॥ श्रीमालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योती ॥ जय अम्बे० ॥१२॥ अम्बेजी की आरति, जो कोई नर गावै ॥ मैयाजी० ॥ कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावैं ॥ जय अम्बे गौरी ।१३॥ इति ॥

कदलीगर्भसम्भृतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ॥ आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मीमहासरस्वतदेवीभ्यो नमः, कर्पूरार्तिक्यं दर्शयामि ॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिम्—

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानः॑सचन्तयत्रपूर्वेसाध्याःसन्तिदेवाः ॥ १ ॥ ॐ राजाधिराजायप्रसह्यसाहिने ॥ नमोवयंवैश्रवणायकुर्महे ॥ समेकामान्कामकामायमह्यम् ॥ कामेश्वरोवैश्रवणोददातु॥ कुबेरायवैश्रवणाय ॥ महाराजायनमः॑ ॥ २ ॥

ॐ स्वस्ति ॥ साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् ॥ पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति ॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे ॥ आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद ॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥ १ ॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके नमा नयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥ २ ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ ३ ॥

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥ ४ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥ प्रदक्षिणा—

ॐ स॒प्तास्या॑सन्परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः ॥ दे॒वा यद्य॒ज्ञन्त॑न्वा॒ना ऽअब॑ध्न॒न्पुरु॑ष॒म्प॒शुम् ॥ १ ॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ॥ तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ प्रार्थनापूर्वकनमस्कारः—

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीभ्यो नमः, प्रार्थनापूर्वकनमस्कारं समर्पयामि ॥ क्षमापनम्—अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ १ ॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥ २ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ॥ यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ३ ॥ अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ॥ यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ४ ॥ सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ॥ इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ५ ॥ अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् सुरेश्वरि ॥ ८ ॥ यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद

परमेश्वरि ॥ ९ ॥ विसर्गबिन्दुमात्राश्च पदपादाक्षराणि च । न्यूनानि चातिरिक्तानि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥ १० ॥ अर्पणम्—अनेनावाहनासनपाद्यार्घाचमनीयस्नानवस्त्रोपवस्त्रगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलदक्षिणानमस्कारप्रदक्षिणामन्त्रपुष्परूपैः षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतपूजनेन श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्तां न मम ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ ॐ श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ततोऽग्निं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमदेशे प्राङ्मुख उपविश्य । ततः स्रुवेण भस्मानीय अनामिकया—बुद्धिं मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम् ॥ तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ १ ॥ ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः । इति ललाटे । कश्यपस्य त्र्यायुषम् । इति ग्रीवायाम् । यद्देवेषु त्र्यायुषम् । इति दक्षिणबाहुमूले । तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् । इति हृदि । संस्रवप्राशनम् । आचमनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः । ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ।

तत्र संकल्पः—

कृतस्य होमकर्मणोऽङ्गतया विहितमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

ॐ द्यौस्त्वाददातुपृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु । अग्नेः पश्चात्प्रणीताविमोकः । ॐ आपः शिवाः

शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् । उपयमनकुशैर्मार्जयेत् । उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः ।

ॐ देवा॑ गातुविदो गा॒तुं वि॒त्त्वा गा॒तुमि॑त ॥ मन॑सस्पत इ॒मं दे॑व य॒ज्ञ स्वाहा॒ वाते॑ धाः ॥ १ ॥ स्वाहा ॥

इति मन्त्रेण बर्हिर्होमं हस्तेन कुर्यात् । ब्रह्मग्रन्थिविमोकः । (ततः श्रेयः सम्पाद्य दानम्) । अद्येत्यादि० कृतस्य हवनाख्यस्य कर्मणो यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये । भवन्नियोगेन मया अस्मिन् हवनाख्ये कर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं तदुत्पन्नं श्रेयः तदमुना साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे । प्रतिगृह्यताम् । देवस्य त्वेति प्रतिगृह्णामि । तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव । भवामीति तेन वाच्यम् । एवमेव ब्रह्मादयो ऋत्विजो जापकादयश्च दत्त्वा (यद्वा) ब्रह्मादयो ऋत्विजो जापकाश्च आचार्यद्वारा श्रेयोदानं कुर्युः । तद्यथा—भवन्नियोगेन मया अस्मिन् (अमुकाख्ये कर्मणि) यत्कृतं आचार्यत्वं तथा एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं ब्रह्मत्वं गाणपत्यं सदस्यत्वं तथा च यः कृतो जपः आचार्यत्वाद् ब्रह्मत्वाद् गाणपत्यात् सदस्यत्वाज्जापकत्वात् यदुत्पन्नं श्रेयस्तदमुना साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव । भवामीति तेन वाच्यमिति । तत आचार्यादीन् वृणोत । ब्राह्मणान् गन्धवस्त्रालङ्कारादि-भिर्यथाविभवैः पूजयेत् । आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात् । तत्रायं क्रमः— आचार्याय गां दद्यात् ॥ १ ॥ ब्रह्मणे वृषभम् ॥ २ ॥ सदस्याय अश्वम् ॥ ३ ॥ ऋत्विग्भ्यः सुवर्णं दद्यात् ॥ ४ ॥ कृतस्य (अमुककर्मणः) साङ्गता-सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं

सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्तीति पठेत् ॥१॥ कृ० इदं वृषनिष्क्रयभूतं द्रव्यं य० ॥२॥ कृ० इदं सदस्याय अश्वनिष्क्रयभू० ।३॥ कृ० इदं गाणपत्याय रथनिष्क्रयभू० ॥ ४ ॥ कृ० इदं उपद्रष्ट्रे गन्त्रीनिष्क्रयभू० ॥ ५ ॥ कृ० इदं ऋत्विग्भ्यः सुवर्णनिष्क्रयभू० ॥ ६ ॥ ततो ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पं कुर्यात् । कृतस्य हवनाख्यस्य कर्म० यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथोत्पन्नेनान्नेनाहं भोजयिष्ये । भोजनान्ते तेभ्यस्ताम्बूलदक्षिणां च दास्ये । ततो ग्रह- (वा प्रधान) पीठदेवतानां गन्धादिपञ्चोपचारैरुत्तरपूजनं कुर्यात् । गणपत्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ॥ आचार्याय प्रधानपीठादि दद्यात् ।। कृ० थं इदं प्रधानपीठं ग्रहपीठं मातृकापीठं सोपस्करं दक्षिणासहितं आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ततो रुद्रकलशदेवतान्तरकलशोदकमेकस्मिन्पात्रे कृत्वा दूर्वापञ्चपल्लवैरुदङ्मुख आचार्यस्तिष्ठन् चत्वारो ऋत्विजश्च सकुटुम्बं स्वोत्तरतः सपत्नीकं यजमानं प्राङ्मुखमुपविष्टमभिषिञ्चेयुः ॥

तत्राभिषेकमन्त्राः—

ॐ देवस्यत्वासवितुःप्प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम् ॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रेयेदधामिबृहस्पतेष्ट्वासाम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ १ ॥ देवस्यत्वा सवितुःप्प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम् ॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रेणा

म्नेऽसाम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि ॥ २ ॥ देवस्यत्वासवितुःप्प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्याम् ॥ अश्विनोर्भैषज्ज्येनतेजसेब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामिसरस्वत्यैभैषज्ज्येनवीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेणबलायश्श्रियैयशसेभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥ १ ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ॥ आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥ वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ॥ ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥ ३ । कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधाः पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ॥ बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४ ॥ एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ॥ आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः ॥ ५ ॥ ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ॥ देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ६ ॥ ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च ॥ देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसाङ्गणाः ॥ ७ ॥ अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ॥ औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥ ८ ॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥ अमृताभिषेकोऽस्तु ॥ शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥ अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दद्यात् ॥ क्रु० थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यः समाश्रितबन्धुवर्गेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथोत्साहां भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥

अथाशीर्वादमन्त्राः—

ॐ स्वस्तिन ऽइन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥

ॐ श्रीर्वर्चस्वमायुष्य मारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते ॥ धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ २ ॥

ॐ पुनस्त्वादित्यारुद्रावसवःसमिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेनत्वन्तन्वंवर्द्धयस्वसत्याःसन्तुयजमानस्यकामाः ॥ ३ ॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥ ४ ॥

इत्याशिषो दद्युः ॥ ततो देवताग्निविसर्जनम् ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया ॥ इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ १ ॥

ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पतेदेवयन्तस्त्वेमहे ॥ उपप्रयन्तुमरुतः सुदानवऽइन्द्रप्राशूर्भवासचा ॥ २ ॥

उमान्तिके गणपतिर्ब्रह्माण्डे ब्रह्म गच्छतु ॥ वैकुण्ठे भगवान् विष्णुः कैलासे च महेश्वरः ॥ ३ ॥ लक्ष्मीर्विष्णुसमीपे च कलशश्चैव सागरे ॥ पन्नगा यान्तु पाताले काश्मीरे च सरस्वती ॥ ४ ॥ स्वात्मपीठेषु योगिन्यः क्षेत्रपालो महाबलः ॥ वेदाश्च ब्रह्मणः पार्श्वे मातरो मातृमण्डले ॥ ५ ॥ रविः कलिङ्गं यमुनां च चन्द्रमा भौमो ह्यवन्तीं शशिजश्च कोशलान् ॥ सिन्धुं गुरुर्भोजकटं भृगुश्च मन्दः सुराष्ट्रं पवनं च राहुः ॥ केतुर्गिरिं शक्रमुखाश्च देवाः स्वां स्वां पुरीं यान्तु यथाक्रमेण ॥६॥ ब्रह्मोद्र्ध्वतां नागपतिस्तथाऽधो याम्यामगस्त्यो ध्रुव उत्तरां च ॥ सप्तर्षयो राशिभयोगपक्षगन्धर्वयक्षा गिरयो नदाश्च ॥ स्थानानि गच्छन्तु यथा समाययुर्ह्याशीश्च सन्तानसुखं प्रदद्युः ॥ ७ ॥ (आवाहितदेवताः स्वस्वस्थानानि गच्छत) ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ ८ ॥

ॐ यज्ञयज्ञङ्गच्छयज्ञपतिङ्गच्छस्वांय्योनिङ्गच्छस्वाहा ॥ एषतेयज्ञोयज्ञपतेसह सूक्तवाकःसर्ववीरस्तञ्जुषस्वस्वाहा ॥ ३ ॥

यज्ञनारायण ! स्वस्थाने गच्छ । एवं देवान् विसृज्य । यज्ञोपकरणादिकं ऋत्विग्भ्यो दत्त्वा गुर्वादीन् सम्पूज्य करौ सम्पुटीकृत्य । मया यत्कृतं अमुकदेवताहवनाख्यकर्मणि तत् कालहीनं भक्तिहीनं श्रद्धाहीनं द्रव्यहीनं च भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीसूर्याद्यावाहितदेवताप्रसादाच्च सर्वविधैः परिपूर्णमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ (अस्तु परिपूर्णम्, इति ब्राह्मणा ब्रूयुः) ॥ ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपःपूजाक्रियादिषु ॥ न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ १ ॥

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ २ ॥ ॐ विष्णवे नमो विष्णवे नमो विष्णवे नमः ॥ इत्युक्त्वा ब्राह्मणान् सम्भोज्य कुटुम्बजनैः परिवृतः स्वयं भोजनं कुर्यात् ॥ इति दुर्गापूजनप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ श्रीनागाशिनीस्तवः ।

चरणनखरकान्तिध्वस्तसर्वान्धकारां मधुरनयनभाभिर्ज्ञानमुद्भासयन्तीम् ॥ मृगरिपुमदहारिश्रोणिविन्यस्तसूत्रां नमति शिशुरयन्ते देवि नागाशिनि त्वाम् ॥ १ ॥ करुणरसविभिन्नं पुत्रसौहार्दशीले सदयहृदयवत्त्वं दर्शयाम्ब प्रसीद ॥ दुरितदलनदक्षे प्रेमपीयूषपूर्णे विविधभवविभूतिं देहि मे भोगसूतिम् ॥ २ ॥ न मम ललितविद्या ज्ञानपीयूषहृद्या नहि च मधुरवित्तं मोदते येन चित्तम् ॥ दुरितजलधिमग्नं त्वत्पदध्यानलग्नं त्रिजितदनुजवृन्दे वन्द्यपादारविन्दे ॥ ३ ॥ मातस्त्वदीय-चरणाम्बुजसेवकं मां शीघ्रं समुद्धरसि नो करुणार्द्रचित्ते ॥ लोके तदास्तमयते सुविरूढमूलं मातृत्वमाशु सुतपोपमयं भवत्याः ॥ ४ ॥ वेदान्तवेद्यविभवे चरणाम्बुजे ते कारुण्यपुञ्जमकरन्दविशोभितान्ते ॥ अभ्यर्थनेयमधुना मम पापवृत्तो मातर्विलोकय दयावति पुत्रमुच्चैः ॥ ५ ॥ पुण्यात्मनो हृदि यदा कुरुषे निवासं नो तत्र तेऽखिलगुणे विपुलं महत्त्वम् ॥ वृष्टिर्मरौ भवति चारु यथोपयुक्ता कारुण्यशालिनि तथा न निधौ जलानाम् ॥ ६ ॥ स्तन्यं सुधारसमनोहरमेव मात-रिच्छामि दिव्यगुणदायिनि चारु पातुम् ॥ अङ्के कुरुष्व ननु पोषय मां पवित्रं रोदन्तमाशु सदयं हृदयं विधाय ॥ ७ ॥

दुर्दान्तदैत्यमदभञ्जनशालिनि त्वं लोके जनैरनुदिनं विनिगद्यसे चेत् ॥ अज्ञानराक्षससमाकुलितं स्वपुत्रं नो पासि वन्द्यचरणे सदयं कथं माम् ॥ ८ ॥ मातस्त्वमेव शरणं मम दुःखितस्य नान्यानि यानि सदये किल दैवतानि ॥ वात्सल्यरञ्जित-कटाक्षविलोभनीयं व्यालोकनं मयि निपातय वन्द्यपादे ॥ ९ ॥ तापत्रयीभृशविमूर्छितचित्तवृत्तिर्मातः कथं स्पृशतु दिव्यपदं त्वदीयम् ॥ दीनं तथा गतिविहीनमयेऽविलम्बं पीयूषवर्षिणि विलोकय बालमेतम् ॥ १० ॥ स्फुरद्धासोल्लासप्रकटितविकासा-तिमधुरा सुधाबद्धस्पर्धा श्रवणपुटपेया गुरुतरा ॥ अये मातश्चीनांशुकललितदेहे गुणकथा त्वदीया पूतं मां दुरितगणयुक्तं प्रकुरुतात् ॥ ११ ॥ कल्याणि नारायणि शर्मदे हे शम्भुप्रिये ब्रह्मविचित्रमाये ॥ बाले स्वकीये करुणाकटाक्षं सहर्षमम्ब स्थिरतां नयस्व ॥ १२ ॥ बालेन बालत्रिभवान्न च बालभावाद्बालारुणद्युतिविधूतसरोजभासोः ॥ स्यादर्पितो बहुगुणाय गुणाढ्यपद्यपुष्पाञ्जलिश्चरणयोस्तव मातरेषः ॥ १३ ॥ भक्तिप्रधानमनिशं पृथिवीतले यो नागाशिनीस्तवमिमं पठति स्थिरात्मा ॥ सौख्यं प्रकामविभवं विमलाश्च विद्याः कीर्तिं तनोति जननी किल तस्य पुंसः ॥१४॥ मार्तण्डपादसरसीरुहरेणु-राजिस्पर्शप्रकामसुखमाप्तवता दुरापम् ॥ केनाप्यकारि शिवदो रविदत्तनाम्ना दिव्यस्तवोऽबुधविमोहकरोऽम्बिकायाः ॥१५॥

अथ नवरात्रे घटस्थापनविधिः ।

प्रतिपदि प्रातः कृताभ्यंगस्नानः कुंकुमचन्दनादिना कृतपुंड्रो धृतपवित्रः सपत्नीको दशघटिकामध्येऽभिजिन्मुहूर्ते वा कलशस्थापनार्थं शुद्धमृदा वेदिकां कृत्वा पञ्चपल्लवदूर्वाफलताम्बूलकुंकुमपुष्पधूपादिसंभारान् संपादयेत् ॥ ततो देशकालौ

संकीर्त्य ममेह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनपुत्रपौत्राद्यविच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मी-कीर्तिलाभशत्रुपराजयप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थम् अद्य शारदीयनवरात्रे प्रतिपदि विहितं कलशस्थापनं दुर्गापूजां (चंडीसप्तशतीपाठं) कुमारीपूजाद्युत्सवाख्यं कर्म करिष्ये ॥ तत्र निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं चण्डीसप्तशतीजपाद्यर्थं ब्राह्मणवरणं च करिष्ये। इति संकल्प्य ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्चेति गणपतिस्मरणपूजनादि, ब्राह्मण-वरणं, पुण्याहवाचनं, नवग्रहषोडशमातृकापूजनं प्रधानदेवतायन्त्रपूजनान्तं कर्म पूर्ववत् कुर्यात्।

अथाङ्कुरार्पणम्।

पूजागृहस्य ईशानदिशि पूजास्थानं कल्पयित्वा गोमयोपलिप्तायां धरायां बिन्दुत्रिकोणषट्कोणाष्टदलषड्विं-शतिदलभूपुरयुतं यन्त्रं विलिख्य वा बिन्दुत्रिकोणवृत्तचतुरस्रं लिखेत्। तस्योपरि तीर्थमृच्छुभमृद्भिर्वेदीं रचयित्वा यवान् गोधूमान् वा वापयेत्। यवांकुराच्छुभाशुभफलं सिद्धान्तशेखरे—"यजमानाभिवृद्ध्यर्थं अंकुराणि परीक्षयेत्। सम्यगूर्ध्वं प्रवृद्धानि कोमलानि सितानि च॥ धूम्रवर्णान्यपूर्वाणि तथा तिर्यग्गतानि च। श्यामलानि च कुब्जानि वर्जयेदशुभानि च॥ अथ फलानि—अवृष्टिं कुरुते कृष्णं धूम्राभं कलहं तथा। अपूर्णं जननाशं च दुर्भिक्षं श्यामलाङ्कुरम्॥ तिर्यग्गते भवेद्व्याधिः कुब्जे शत्रुभयं तथा॥ अशुभे चांकुरे जाते शान्तिहोमं समाचरेत्॥ मूलमंत्रेण जुहुयाद् गुरु-मूर्तिधरैः सह। अघोरास्त्रेण चास्त्रेण शतं वाथ सहस्रकम्" ॥ इति ॥

अथ नवरात्रिनियमग्रहणम् ।

हस्ते जलमादाय — अद्यप्रभृति देवेशि करिष्ये व्रतमुत्तमम् । नवरात्रं करिष्यामि दुःखदारिद्र्यनाशनम् ॥ १ ॥ करिष्ये शास्त्रविधिना निर्विघ्नेन समाप्यताम् ॥ प्रतिपदिनमारभ्य व्रतस्थोऽहं महेश्वरि ॥२॥ नवदुर्गात्मिके मातर्निर्विघ्नं कुरु मे सदा ॥ नवरात्रं यथाशक्ति सर्वभोगविवर्जितः ॥ ३ ॥ उपोषणं करिष्यामि त्वमेव शरणं मम ॥ इदं व्रतं मया देवि गृहीतं तव सन्निधौ ॥ ४ ॥ निर्विघ्नतां समायातु त्वत्प्रसादान्महेश्वरि । ब्रह्मप्रिये महाभागे सत्यव्रतपरायणे ॥ ५ ॥ व्रतमेतत्करिष्यामि सौभाग्यमतुलं कुरु ॥ अद्य स्थित्वा निराहारो जितक्रोधो जितेन्द्रियः ॥ ६ ॥ नवमे (दशमे)ऽहनि भक्ष्यामि शरणं परमेश्वरि ॥ ७ ॥ इति नियमग्रहणं कृत्वा यथाविधि फलाहारादिकं कुर्यात् ॥

ततो नवम्यां नियमत्यागप्रकारः ॥ तत्रादौ अष्टम्यां वा नवम्यां दिवा रात्रौ वा स्वकुलाचारेण पूर्वोक्तप्रकारेण होमादिकं कुर्यात् ॥ ततो नवम्यां वा दशम्यामुत्तरपूजनं कृत्वा ब्राह्मणसुवासिनीकुमारिकाबटुकभोजनसंकल्पनियममुक्तिं च देवताग्रे कुर्यात् ॥ हस्ते जलमादाय—अद्य पूर्वो० तिथौ अनेन करिष्यमाणब्राह्मणसुवासिनीकुमारिक बटुकभोजनेन अष्टशक्तिसहितश्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यात्मकनवदुर्गा प्रीयतां न मम ॥

अथ नियममुक्तिमन्त्राः ।

उपोषणं ब्रह्मचर्यं भूशय्या च तथैव च ॥ पूजनं दीपदानं च चण्डीपाठस्तथैव च ॥१॥ होमं चैव यथाशक्ति चैतत्सर्वं

मया कृतम् ॥ तत्तु सम्पूर्णतां यातु तव तुष्ट्यै महेश्वरि ॥ २ ॥ चण्डीसंतोषणार्थाय ये मया नियमाः कृताः । अद्याऽहं भोजयिष्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ ३ ॥ अनेन उपोषणादिकेनाष्टशक्तिसहितश्रीमहालक्ष्मीसरस्वत्यात्मकनवदुर्गा प्रीयतां न मम ॥ ततो यथाशक्ति संन्यासिब्राह्मणसुवासिनीकुमारिकाबटुकान् भोजयित्वा सुहृद्युक्तः स्वयं भुंजीत । नवरात्रपारणे संन्यासिनो मुख्यत्वात् ॥ तदुक्तं शक्तिसंगमतन्त्रे इति ॥

अथ विसर्जनविधिः ।

तत्रादौ निर्वाणमुद्रया कलशोपरि पुष्पं गृहीत्वा तयैव मुद्रया तत्रैव स्थापयेत् ॥ पुष्पाञ्जलिमादाय पठेत्—उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥१॥ इति कलशमुत्थाप्य भूमौ जलं प्रवाहयन् पठेत् ॥ दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ॥ व्रतश्रोत्रे जलं वृद्ध्यै स्थीयतां हृदये मम ॥१॥ इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् । रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥२॥ इति विसर्जनं कृत्वा । अद्य पूर्वो० चण्डीप्रसादात् भवतां ब्राह्मणानां वचनात् यथाशक्ति मिलितोपचारैर्देशकालाद्यनुसारतश्चंडीपूजनविधौ यन्न्यूनं यदतिरिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु ॥ ततो नारिकेलं विदार्य तदुदकेन यवाङ्कुरान् सम्प्रोक्ष्य सर्वेभ्यो नैवेद्यं दद्यात् ॥ इति नवरात्रघटस्थापनपूजाप्रयोगः ॥

❋ अथ देव्या आर्तिक्यम् ❋

प्रवरातीरनिवासिनि निगमप्रतिपाद्ये ॥ पारावारविहारिणि नारायणि हृद्ये ॥ प्रपञ्चसारे जगदाधारे श्रीविद्ये ॥ प्रपन्न-

॥ अथ समंत्रनवरात्रपद्धतिः सोद्धारा कथासहिता प्रार० ॥

स्तोत्रपाठग्रन्थाः ।

शाक्तप्रमोददशमहाविद्या और पांच देवतोंका पञ्चाङ्ग द्वादशांग सहित इसमें १८४ विषयहैं शाक्तलोगोंको अवश्य लेना चाहिये ५-०

श्रीरामरक्षास्तोत्र-श्रीराममहिमस्तोत्र-विष्णुपञ्जरस्तोत्र-श्रीवेङ्कटेशाष्टकस्तोत्रेति स्तोत्रचतुष्टयम्... ... . ०-३

दुर्गासप्तशती शान्तनवीटीकासहित १-४

दुर्गासप्तशती भट्टनागोजीकृतटीकासहित ... १-०

दुर्गासप्तशती भाषाटीका शान्तनवी टीकाके-अनुकूल १-०

दुर्गासप्तशती मोटे अक्षरकी टाईप खुली-पंक्ति ६ की १-०

दुर्गासप्तशती ७ पंक्तिवाली बडा अक्षर खुला पत्रा ०-१२

दुर्गासप्तशती ७ पंक्तिकी बंधेली १-०

दुर्गासप्तशती १० पंक्तिवाली मध्याम अक्षर टाईप खुला पत्रा ०-८

दुर्गासप्तशती १० पंक्तिवाली बंधेली रेशमी ... ०-१२

दुर्गासप्तशती ३२ पेजी गुटका ०-१०

तथा खुला पत्रा टाईपका ०-८

भूमिका ।

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ अथेह खलु श्रीमन्महाराजाधिराजसवाईजयपुरनरेशश्री १०८ श्रीसवाईरामसिंहनिर्मितप्रासादांतरमंदिरविराजमानश्रीराजराजेश्वरीचरणसेवकगौडद्विजचतुर्वेदिनाथूनारायणाभिधानोहमखिलभारतवर्षविद्वज्जनप्रमोदाय शक्तिसंगमतंत्रतृतीयखंडतः समुद्धृत्य ज्योतिर्धर्मशास्त्रादिषु परमोपकारकारिणीं भारतवर्षदेशव्यवस्थां प्रकाशयामि ॥

अथेह खलु विविधविद्वज्जनविरचितनवरात्रविधानेषु परमोत्तमो महर्षिवेदव्यासविरचितो नवरात्रविधानक्रमः श्रीदेवीभागवते तृतीयस्कंधे षड्विंशे २६ऽध्यायेऽस्ति तमनुसृत्य सकलदुर्गाभक्तद्विजाल्हादविवृद्धये दुर्गानवरात्रपद्धतिं करोमि तत्रादौ–वेदव्यासोक्तनवरात्रविधानक्रमः ॥ १ ॥ ततो नवरात्रकथा ॥२॥ तदनंतरं दुर्गानवरात्रपद्धतिः ॥ ३ ॥ बलिदानप्रयोगश्च ॥ ४ ॥ ॥ ॐ ॥ इति ॥ ॥ ॥

अथ क्षेत्रपालपूजनम् ।

(वायव्य कोण में योगिनी के समीप अजरादि क्षेत्रपाल का पूजन करना)

ॐ अजराय नमः अजरमावाहयामि स्थापयामि ॥१॥ (एवं सर्वत्र) ॐ इन्द्रचौराय नमः ॥२॥ ॐ व्यापकाय नमः ॥३॥ ॐ इन्द्रमूर्तये नमः ॥ ४ ॥ ॐ उक्षाणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ कूष्माण्डाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥७॥ ॐ विमुक्ताय नमः ॥ ८ ॥ ॐ वामकाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ सप्तकाय नमः ॥ १० ॥ ॐ लीलालोलुपाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ एकदंष्ट्राय नमः ॥ १२ ॥ ॐ ऐरावताय नमः ॥ १३ ॥ ॐ औषधीघ्नाय नमः ॥ १४ ॥ ॐ बन्धनाय नमः ॥ १५ ॥ ॐ दिव्याकाराय नमः ॥ १६ ॥ ॐ कम्बलाय नमः ॥ १७ ॥ ॐ क्षोभणाय नमः ॥ १८ ॥ ॐ अगवाय नमः ॥ १९ ॥ ॐ कालाय नमः ॥ २० ॥ ॐ बलधराय नमः ॥ २१ ॥ ॐ अणवे नमः ॥ २२ ॥ ॐ चन्द्रवारणाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ फटाटोपाय नमः ॥ २४ ॥ ॐ जटिलाय नमः ॥ २५ ॥ ॐ ऋतवे नमः ॥ २६ ॥ ॐ घण्टेश्वराय नमः ॥ २७ ॥ ॐ विकटाय नमः ॥ २८ ॥ ॐ मणिभाय नमः ॥ २९ ॥ ॐ गुणबन्धाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ डामराय नमः ॥ ३१ ॥ ॐ ठंठफणाय नमः ॥ ३२ ॥ ॐ स्थविलाय नमः ॥ ३३ ॥ ॐ दन्तुराय नमः ॥ ३४ ॥ ॐ धनदाय नमः ॥ ३५ ॥ ॐ नागकर्णाय नमः ॥ ३६ ॥ ॐ फोत्काराय नमः ॥ ३७ ॥ ॐ महादलाय नमः ॥३८॥ ॐ चीरकाय नमः ॥ ३९ ॥ ॐ सिंहाय नमः ॥ ४० ॥ ॐ मृगाय नमः ॥ ४१ ॥ ॐ पक्षाय नमः ॥ ४२ ॥ ॐ मेघवाहनाय नमः ॥ ४३ ॥

ॐ तीक्ष्णोष्ठाय नमः ॥ ४४ ॥ ॐ अनलाय नमः ॥ ४५ ॥ ॐ सुक्रतवे नमः ॥ ४६ ॥ ॐ धुंघापाय नमः ॥ ४७ ॥ ॐ वक्रकाय नमः ॥ ४८ ॥ ॐ व्राताय नमः ॥ ४९ ॥ ॐ यापनाय नमः ॥ ५० ॥ ॐ (सर्वभक्षायनमः । ॐ सर्व-साक्षिण्यै नमः) एवमावाह्य संस्थाप्य उपचारैः सम्पूजयेत् ॥

ततः प्रार्थना कार्य्या ।

ॐ क्षेत्रपालान्नमस्यामि सर्वारिष्टनिषूदनान् । अस्य यागस्य सिद्ध्यर्थं पूजयाराधितान् मया ॥ अनया पूजया अजरादिपंचाशत्क्षेत्रपालाः सांगाः सपरिवाराः प्रीणन्तु ॥ इति क्षेत्रपालपूजनम् ॥

नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपूजनम् ।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशोऽअनमीवो भवानः ॥ यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ वास्तुपुरुषाय नमः । वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ इति षोडशोपचारैः पूजयेत् । अथ प्रार्थना—नागपृष्ठंसमारूढं शूलहस्तं महाबलम् । पातालनायकं देवं वास्तुदेवं नमाम्यहम् ॥ इति प्रार्थ्य । अनया पूजया सांगः सपरिवारः वास्तुदेवः प्रीयतां न मम—इत्यर्पयेत् ॥

श्री शिवपूजनप्रयोग

नित्यकर्म सहित

आज यह अपूर्व ग्रन्थ आपके सामने आरहा है। इसको एकबार दृष्टि देकर अवश्य देखिये। प्रस्तुत पुस्तक में शिवपूजन का वैदिक क्रम बहुत ही सुन्दर है और नित्य के सभी कर्मों के प्रयोग सरल रीति से दिये गये हैं। तथा यह ग्रन्थ प्रातः स्मरण, गृहस्नानविधि, पुरुषसूक्त, भस्म रुद्राक्ष धारण, शिखाबन्धन, प्रातःसन्ध्या, शिवपूजन, रुद्राष्टाध्यायी, महिम्नस्तोत्र, गणेश अथर्वशीर्ष, मध्याह्नसन्ध्या, सूर्यनमस्कार, ब्रह्मयज्ञ, तर्पण, बलिवैश्वदेव, नित्यहोम, भोजनविधि, सायं सन्ध्या, यज्ञोपवीतधारणविधि, मृत्युञ्जयजपविधि, नवग्रह जपविधि, ईशावास्योपनिषद् और रात्रिस्मरण आदि विषयों से विभूषित है।

इस ग्रन्थ के संकलनकर्ता आप लोगों के सुपरिचित "दुर्गापूजनप्रयोग" के विख्यात लेखक श्रीमान् पं० तुलारामजी शर्मा चौकियाल और प्रकाशक श्रीयुत सेठमुरलीधरजी जाजू निम्बीजोधान निवासी हैं। वर्षभर के अन्दर ही 'दुर्गापूजनप्रयोग' का तीसरा एडीशन छप गया है। इस आधार पर स्वयं इसकी उपयोगिता का विचार कर सकते हैं। विशेष कहने की जरूरत नहीं है। आप इसको देखते ही मोहित हो जायेंगे। इसके द्वारा शिवपूजन तथा नित्यकर्म करने में बड़ी सहायता मिलेगी। शीघ्रता करें—अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मूल्य १)

प्रकाशक—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस १. (ब्रान्च—कचौड़ी गली, बनारस)।

॥ इति बृहद् ॥

दुर्गापूजनप्रयोगः सप्तशतीसहितः

॥ समाप्तः ॥

प्रकाशक—भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, (ब्रांच-कचौड़ीगली), बनारस १.

ॐ तीक्ष्णोष्ठाय नमः ॥ ४४ ॥ ॐ अनलाय नमः ॥ ४५ ॥ ॐ सुकृतवे नमः ॥ ४६ ॥ ॐ पुंघापाय नमः ॥ ४७ ॥ ॐ वक्रकाय नमः ॥ ४८ ॥ ॐ व्राताय नमः ॥ ४६ ॥ ॐ यापनाय नमः ॥ ५० ॥ ॐ (सर्वभक्षायनमः । ॐ सर्व-साक्षिण्यै नमः) एवमावाह्य संस्थाप्य उपचारैः सम्पूजयेत् ॥

ततः प्रार्थना कार्य्या ।

ॐ क्षेत्रपालान्नमस्यामि सर्वारिष्टनिषूदनान् । अस्य यागस्य सिद्ध्यर्थं पूजयाराधितान् मया ॥ अनया पूजया अजशादिपंचाशत्क्षेत्रपालाः सांगाः सपरिवाराः प्रीणन्तु ॥ इति क्षेत्रपालपूजनम् ॥

नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपूजनम् ।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशोऽअनमीवो भवानः ॥ यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदेशं चतुष्पदे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ वास्तुपुरुषाय नमः । वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ इति षोडशोपचारैः पूजयेत् । अथ प्रार्थना—नागपृष्ठसमारूढं शूलहस्तं महाबलम् । पातालनायकं देवं वास्तुदेवं नमाम्यहम् ॥ इति प्रार्थ्य । अनया पूजया सांगः सपरिवारः वास्तुदेवः प्रीयतां न मम—इत्यर्पयेत् ॥

पालननिरते मुनिवृन्दाराध्ये ॥ जय देवि जय देवि जय मोहिनिरूपे ॥ मामिह जननि समुद्धर पतितं भवकूपे ॥ १ ॥
दिव्यसुधाकरवदने कुन्दोज्ज्वलरदने ॥ पदनखनिर्जितमदने मधुकैटभकदने ॥ विकसितपङ्कजनयने पन्नगपतिशयने ॥
खगपतिवहने गहने सङ्कटवनदहने ॥ जय देवि० ॥ २ ॥ मञ्जीराङ्कितचरणे मणिमुक्ताभरणे वक्राम्बुजधरणे ॥ शङ्कामय-
भयहरणे भूसुरसुखकरणे ॥ करुणां कुरु मे शरणे गजनक्रोद्धरणे ॥ जय देवि० ॥ ३ ॥ छित्त्वा राहुग्रीवां पासि त्वं विबु-
ध न् ॥ (द्विड्भ्यो) यच्छसि मृत्युमनिष्टं पीयूषं विबुधान् ॥ विहरसि दानवऋद्धां समरे संसिद्धाम् ॥ मध्वमुनीश्वरवरदे
पालय संसिद्धाम् ॥ जय देवि जय देवि जय मोहिनिरूपे ॥ मामिह जननि समुद्धर पतितं भवकूपे ॥ ४ ॥ जय देवि जय
देवि जय देवि जय सुन्दरि तनये निशिदिनवसतिं कुरु भव ईश्वरि मम हृदये ॥ बिन्दुं गुणकोणान्वितषट्कोणं वृत्तं तदुपरि
वसुदलपत्रं वर्तुलमपि धर्तुम् । द्विगुणीकृतवसुपत्रं मोहितहरचित्तं द्वारचतुष्टयनिर्मितयन्त्रं परितन्त्रम् ॥ जय देवि० ॥ ५ ॥
वामं कलशापूरितविरचितमाधारं तस्मिन् दर्पिंसुललितं पूजितमाधारम् ॥ जय देवि० ॥ ६ ॥ कलशामृतपरिपूरितनवपत्र-
समेतं गणपतियोगिनिबटुकक्षेत्रादिकांचित्तम् ॥ अर्चनविधिना सहितं श्रीगुरुविधिवन्तं तारकपण्डितवदनाभक्ताखिलदत्तम् ॥
जय देवि जय देवि जय सुन्दरि तनये निशिदिनवसतिं कुरु ईश्वरि मम हृदये ॥ ७ ॥ इति देव्या आर्त्तिक्यम् ॥

इति श्रीदुर्गापूजनप्रयोगः सप्तशतीसहितः समाप्तः ॥

मुद्रकः—पं० बैकुण्ठनाथभार्गव, आनन्दसागर प्रेस, गायघाट, बनारस १.

श्री शिवपूजनप्रयोग

नित्यकर्म सहित

आज यह अपूर्व ग्रन्थ आपके सामने आगया है। इसको एकबार दृष्टि देकर अवश्य देखिये। प्रस्तुत पुस्तक में शिवपूजन का वैदिक क्रम बहुत ही सुन्दर है और नित्य के सभी कर्मों के प्रयोग सरल रीति से दिये गये हैं। तथा यह ग्रन्थ प्रातः स्मरण, गृहस्नानविधि, पुरुषसूक्त, भस्म रुद्राक्ष धारण, शिखाबन्धन, प्रातःसन्ध्या, शिवपूजन, रुद्राष्टाध्यायी, महिम्नस्तोत्र, गणेश अथर्व-शीर्ष, मध्याह्नसन्ध्या, सूर्यनमस्कार, ब्रह्मयज्ञ, तर्पण, बलिवैश्वदेव, नित्यहोम, भोजनविधि, सायं सन्ध्या, यज्ञोपवीतधारणविधि, मृत्युञ्जयजपविधि, नवग्रह जपविधि, ईशावास्योपनिषद् और रात्रिस्मरण आदि विषयों से विभूषित है।

इस ग्रन्थ के संकलनकर्ता आप लोगों के सुपरिचित "दुर्गापूजनप्रयोग" के विख्यात लेखक श्रीमान् पं० तुलारामजी शर्मा चौकियाल और प्रकाशक श्रीयुत् सेठमुरलीधरजी जाजू निम्बीजोधान निवासी हैं। वर्षभर के अन्दरही 'दुर्गापूजनप्रयोग' का तीसरा एडीशन छप गया है। इस आधार पर स्वयं इसकी उपयोगिता का विचार कर सकते हैं। विशेष कहने की जरूरत नहीं है। आप इसको देखते ही मोहित हो जायँगे। इसके द्वारा शिवपूजन तथा नित्यकर्म करने में बड़ी सहायता मिलेगी। शीघ्रता करें—अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मूल्य १)

प्रकाशक—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस १. (ब्रान्च—कचौड़ी गली, बनारस)।

॥ इति बृहद् ॥

दुर्गापूजनप्रयोगः सप्तशतीसहितः

॥ समाप्तः ॥

प्रकाशक—भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, (ब्राञ्च–कचौड़ीगली), बनारस १.